SUNDAY
बिलासपुर, रविवार, 17 सितंबर 2023
वर्ष - 33 | अंक - 139 | पृष्ठ - 12 |
मूल्य - 4.00 रु.
www.deshbandhu.co.in ख़बरें लगातार ...
संपर्क करे :- bilaspurdeshbandhu@gmail.com

छत्तीसगढ़ का पहला राष्ट्रीय दैनिक
पत्र नहीं मित्र
देशबन्धु

आज विश्वकर्मा जयंती

मड़ई
▸ माता बहिनी मन के निर्जला व्रत तीजा
पृष्ठ 4

▸ अगर मैं थोड़ी सामान्य बल्लेबाजी करता तो हम जीत जाते : शुभमन गिल
▸ पाकिस्तानी टीम को बड़ा झटका, गेंदबाज नसीम के विश्वकप खेलने पर संशय
पृष्ठ 10

देश विदेश
▸ किम जोंग की यात्रा के दौरान किसी समझौते पर हस्ताक्षर नहीं : रूस
▸ युद्ध के कारण यूक्रेन में ऐतिहासिक स्थल खतरे में : यूनेस्को
▸ पाकिस्तान के आईएसआई प्रमुख नदीम अंजुम को मिला सेवा विस्तार
पृष्ठ 9

हैदराबाद में कांग्रेस कार्यसमिति की बैठक शुरू, केंद्र पर बरसे मल्लिकार्जुन खड़गे

मणिपुर व नूंह की घटना से देश की छवि पर लगा धब्बा

- राष्ट्रीय अध्यक्ष ने जी-20 के आयोजन पर खर्च को लेकर भी सवाल उठाए
- कांग्रेस ने की जाति जनगणना शुरू कराने की मांग
- मणिपुर की आग को सरकार ने नूंह तक पहुंचने दिया

देश आज कई गंभीर आंतरिक चुनौतियों से जुझ रहा है। मणिपुर की दिल दहला देने वाली घटनाओं को पूरी दुनिया ने देखा : मल्लिकार्जुन खड़गे, कांग्रेस अध्यक्ष

कांग्रेस कार्य समिति तेलंगाना और भारत के सभी लोगों के लिए सम्मान के साथ विकास का एक नया अध्याय लिखने के लिए तैयार है: सोनिया गांधी, कांग्रेस नेता

हैदराबाद, 16 सितम्बर (एजेंसियां)। हैदराबाद में चल रही कांग्रेस कार्यसमिति की बैठक में पार्टी अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे ने केंद्र सरकार और भाजपा पर जमकर निशाना साधा। कांग्रेस के राष्ट्रीय अध्यक्ष ने जी-20 के आयोजन पर हुए खर्च को लेकर सवाल उठाए। उन्होंने कहा, 'रोटेशन के तौर पर मिली जी-20 की अध्यक्षता के आयोजन में 4 हजार करोड़ रुपए खर्च हुए और अब रोटेशन से इसकी अध्यक्षता ब्राजील को मिल चुकी है।' कांग्रेस अध्यक्ष ने आरोप लगाया कि 'इंडिया' गठबंधन की बैठकों की कामयाबी के बाद सरकार ने जांच एजेंसियों को विपक्षी दलों से बदला लेने के लिए लगा दिया है। इसके अलावा उन्होंने कहा कि मणिपुर और नूंह की घटना से देश की छवि पर धब्बा लगा है, वहीं, कांग्रेस अध्यक्ष खड़गे ने केंद्र सरकार से जाति जनगणना शुरू कराने की मांग की।

कई गंभीर चुनौतियों से जुझ रहा देश

कांग्रेस के राष्ट्रीय अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे ने केंद्र सरकार पर हमला बोलते हुए कहा कि देश आज कई गंभीर आंतरिक चुनौतियों से जुझ रहा है। मणिपुर की दिल दहला देने वाली घटनाओं को पूरी दुनिया ने देखा। वहां 3 मई 2023 से लेकर आज तक हिंसा जारी है। मणिपुर की आग को मोदी सरकार ने हरियाणा में नूंह तक पहुंचने दिया। यहां हिंसा की वारदातें हुईं, जिस कारण राजस्थान, उत्तर प्रदेश और दिल्ली में सांप्रदायिक तनाव फैला। ऐसी घटनाएं आधुनिक, प्रगतिशील और धर्मनिरपेक्ष भारत की छवि पर धब्बा लगाती है. ऐसे हालात में सत्ताधारी दल, सांप्रदायिक संगठन और मीडिया का एक वर्ग, आग में घी डालने का काम करता है। इससे देश का 'सर्वधर्म समभाव' बिगाड़ता है. हमें मिलकर ऐसी ताकतों की पहचान करके उन्हें बेनकाब करते रहना है।

आंकड़ों की हेराफेरी कर रही सरकार

केंद्र सरकार आंकड़ों की हेराफेरी कर रही है। 2021 की जनगणना न कराने से 14 करोड़ लोग फूड सिक्योरिटी एक्ट से और करीब 18 फीसदी लोग मनरेगा से बाहर हो गए। मनरेगा की मजदूरी महीनों लंबित रहती है। कांग्रेस अध्यक्ष ने कहा, हमारी मांग है कि 2021 जनगणना की प्रक्रिया तुरंत शुरू की जाए। उसके साथ ही जातिगत जनगणना भी कराई जाए, ताकि समाज के जरूरतमंद तबके को स्वास्थ्य, शिक्षा, नौकरी और फूड सिक्योरिटी समेत दूसरे हक मिल सकें।

पूंजीपति मित्रों के हवाले कर रही संपत्ति

आजादी के बाद बनी देश की बहुमूल्य संपत्तियों को मोदी सरकार चंद पूंजीपति मित्रों के हवाले कर रही है। उनके फायदे के लिए नीतियां बदली जा रही हैं, उनके हक के कानून बन रहे हैं। पिछले दिनों पीएम के करीबी कारोबारी की कंपनियों में 20 हजार करोड़ रुपये का शेल कंपनियों द्वारा निवेश हुआ। इसका पर्दाफाश होने पर भी मोदी सरकार जांच नहीं करा रही है। सारे बड़े घोटालों पर सरकार मौन है, पर्दा डाल रही है।

'इंडिया' गठबंधन से घबराई मोदी सरकार

प्रधानमंत्री और भोजपा नेताओं के हमलों से हमारे 'इंडिया' गठबंधन की 3 बैठकों की सफलता का अंदाजा लगाया जा सकता है। हमारा कारवां जैसे-जैसे आगे बढ़ेगा, इनके हमले तेज होंगे। 'इंडिया' गठबंधन की मुंबई में हुई बैठक के बाद ईडी, आईटी, सीबीआई को सरकार ने विपक्षी नेताओं से राजनीतिक बदला लेने के लिए लगा दिया है। ये स्वस्थ लोकतंत्र की भावना के खिलाफ है, लेकिन अफसोस कि यही हकीकत है।

159 लोगों को आमंत्रित किया गया

तेलंगाना के हैदराबाद में कांग्रेस वर्किंग कमेटी की दो दिन चलने वाली इस बैठक के दौरान पांच राज्यों में होने वाले आगामी विधानसभा चुनाव को लेकर कई चरणों में चर्चा होगी। इस बैठक में कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे, कांग्रेस संसदीय दल की अध्यक्ष सोनिया गांधी, कांग्रेस सांसद राहुल गांधी, प्रियंका गांधी, राजस्थान के सीएम अशोक गहलोत, छ्त्तीसगढ़ के सीएम भूपेश बघेल समेत कई नेता शामिल हुए हैं। रविवार को विस्तारित सीडब्ल्यूसी की बैठक होगी, जिसमें सभी राज्य पार्टी प्रमुखों और सीएलपी नेताओं के अलावा संसदीय दल के पदाधिकारियों, केंद्रीय चुनाव समिति के सदस्यों को आगामी चुनावों के लिए रणनीति बनाने के लिए आमंत्रित किया गया है। वेणुगोपाल ने कहा कि हमने 159 लोगों को आमंत्रित किया, उनमें से 147 रविवार को बैठक में भाग ले रहे हैं।

अनंतनाग में चौथे दिन में भी आतंकियों से जंग जारी

बारामुल्ला में सेना ने 3 आतंकी किए ढेर

■ **सुरेश एस डुग्गर**

जम्मू, 16 सितम्बर (देशबन्धु)। अनंतनाग के बाद अब बारामुल्ला में सैनिकों ने घुसपैठ के एक प्रयास को नाकाम बनाते हुए तीन आतंकियों को मार डाला। दो शव मिल चुके हैं पर तीसरे का शव प्राप्त करने में मशक्कत इसलिए करनी पड़ रही है क्योंकि पाक सेना भी कवर फायर देते हुए गोलियां बरसा रही थी। इस बीच अनंतनाग में 4थे दिन भी मुठभेड़ जारी रही। जबकि नार्दर्न कमान के कमांडर भी अब कोकरनाग के मैदान में उतर चुके हैं।

- नार्दन कमान के कमांडर भी मैदान में
- पाक सेना ने भी बरसाईं गोलियां

समाचारो के अनुसार, बारामुल्ला में यह मुठभेड़ अग्रिम गांव हथलंगा के बाहरी छोर पर चल रही है। आतंकियों ने भागने की कोशिश की थी इसलिए उन्होंने फायरिंग की। वहीं अभी भी दो आतंकियों के फंसे होने की सूचना है। सेना कहती है कि ये सभी उस पार से एलओसी को पार करने का प्रयास कररहे थे यह मुठभेड़ अग्रिम गांव हथलंगा के बाहरी छोर पर हो रही है। यहां घना जंगल, नाला और कुछ खाली घर भी हैं। इस बीच दूसरी ओर अनंतनाग में सुरक्षाबलों और आतंकियों के बीच चौथे दिन भी मुठभेड़ जारी है। सेना, पुलिस और सीआरपीएफ व अन्य सुरक्षा एजेंसियों के जवान पूरी सतर्कता के साथ मैदान में डटे हुए हैं। घने जंगल और पहाड़ी के बीच के संदिग्ध ठिकाने पर आतंकियों की खोजबीन के लिए ड्रोन और हेलीकॉप्टर की भी मदद ली जा रही है। कुछ देर रुक-रुककर दोनों ओर से गोलीबारी भी हो रही है। बताया जा रहा है कि आतंकवादी एक पहाड़ी की चोटी पर एक गुफा में छिपे हुए हैं। अनंतनाग के घने जंगलों से आतंकवादियों को बाहर निकालने का अभियान चौथे दिन भी जारी है। बुधवार को मुठभेड़ में चार सुरक्षा बलों के जवानों को मारने वाले आतंकियों को ट्रैक करने और उन्हें बेअसर करने के लिए ड्रोन और हेलीकॉप्टरों को तैनात किया गया है। बुधवार को आतंकवादियों ने 19 राष्ट्रीय राइफल्स के कमांडिंग ऑफिसर कर्नल मनप्रीत सिंह, मेजर आशीष धोंचक, जम्मू-कश्मीर पुलिस के उपाधीक्षक हुमायूं भट और एक सैनिक की हत्या कर दी।

उच्च तकनीक उपकरणों का उपयोग

इस जंग में उच्च तीव्रता वाले ऑपरेशनों में भारतीय सेना बल सटीक आग के उच्च प्रभाव के साथ-साथ निगरानी और गोलाबारी के वितरण के लिए उच्च तकनीक वाले उपकरणों उपयोग कर रही है। सेना की उत्तरी कमान ने एक्स पर एक पोस्ट में लिखा कि लेफ्टिनेंट जनरल उपेन्द्र द्विवेदी, सेना कमांडर, उत्तरी कमान ने अनंतनाग के कोकेरनाग वन क्षेत्र में चल रहे ऑरेशन की समीक्षा की है।

सार संक्षेप

राज्यपाल-मुख्यमंत्री ने प्रदेशवासियों को विश्वकर्मा जयंती की दी शुभकामनाएं

रायपुर। राज्यपाल विश्वभूषण हरिचंदन व मुख्यमंत्री भूपेश बघेल ने भगवान विश्वकर्मा की जयंती के अवसर पर प्रदेशवासियों को बधाई और शुभकामनाएं दी है। मुख्यमंत्री बघेल ने कहा है कि श्रमवीर नये छत्तीसगढ़ को गढ़ने में सार्थक भागीदारी निभा रहे हैं। यह दिन हमें श्रम के लिए संकल्पित होने की प्रेरणा देता है। विश्वकर्मा जी की कुशल तकनीकी, कौशल और श्रमशीलता प्रेरणादायी है।

लखनऊ में मकान की छत ढहने से पांच की मौत

लखनऊ। उत्तर प्रदेश की राजधानी में रेलवे लखनऊ मंडल की फतेह अली रेलवे कॉलोनी में शुक्रवार देर रात एक मकान की छत ढह गई, इससे पांच लोगों की मलबे में दबकर मौत हो गई। लखनऊ के डीसीपी ईस्ट ह्रदेश कुमार ने बताया कि राजधानी लखनऊ के आलमबाग रेलवे इलाके में एक मकान की छत गिरने से पांच लोगों की मौत हो गई। उन्होंने बताया कि मकान काफी पुराना लग रहा था। अचानक से छत गिर गई, इसमें तीन बच्चे और उनके माता पिता दब गए।

महाराष्ट्र सरकार ने बदला औरंगाबाद, उस्मानाबाद जिले का नाम

छत्रपति संभाजीनगर। महाराष्ट्र सरकार ने औरंगाबाद जिले का नाम बदलकर छत्रपति संभाजीनगर जिला और उस्मानाबाद जिले का नाम बदलकर दाराशिव जिला कर दिया है। राज्य सरकार ने गजट प्रकाशित कर दोनों जिलों के नाम बदल दिये। राजपत्र में बताया गया कि अब से उस्मानाबाद जिले का नाम धाराशिव होगा और औरंगाबाद जिले का नाम छत्रपति संभाजीनगर होगा।

संसद के विशेष सत्र की सभी तैयारियां पूरी

नए संसद भवन में मंत्रियों को आबंटित किए गए कमरे

नई दिल्ली, 16 सितम्बर (एजेंसियां)। संसद का विशेष सत्र 18 सितंबर से शुरू होने जा रहा है। पांच दिन तक चलने वाले इस सत्र के लिए तीन दिनों के रिहर्सल के बाद संसद का पुराना और नया, दोनों ही भवन सत्र के लिए तैयार है। विशेष सत्र के दूसरे दिन यानी 19 सितंबर से संसद के दोनों सदनों की कार्यवाही नए भवन में शुरू होनी है और इसके लिए तमाम तैयारियां पूरी कर ली गई है। बताया जा रहा है कि, नए संसद भवन में सदन की कार्यवाही शुरू होने से पहले सरकार के मंत्रियों को उनके कार्यालय के लिए कमरों का आवंटन भी कर दिया गया है। केंद्र सरकार के वरिष्ठ 11 कैबिनेट मंत्रियों- अमित शाह, राजनाथ सिंह, नितिन गडकरी, पीयूष गोयल, निर्मला सीतारमण, एस जयशंकर, धर्मेंद्र प्रधान, स्मृति ईरानी, नरेंद्र सिंह तोमर, अश्विनी वैष्णव और अर्जुन मुंडा को नए संसद भवन में अपर ग्राउंड फ्लोर पर कार्यालय के लिए कमरा आवंटित किया गया है।

- 19 से दोनों सदनों की कार्यवाही नए भवन में होगी शुरू

जानकारी के मुताबिक, अमित शाह को अपर ग्राउंड फ्लोर पर कमरा नंबर जी-33, राजनाथ सिंह को जी-34, नितिन गडकरी को जी-31, पीयूष गोयल को जी-30, निर्मला सीतारमण को जी-12, एस जयशंकर को जी-10, धर्मेंद्र प्रधान को जी-41, स्मृति ईरानी को जी-8, नरेंद्र सिंह तोमर को जी-11, अश्विनी वैष्णव को जी-17 और अर्जुन मुंडा को नए संसद भवन में कमरा नंबर जी-9 आवंटित किया गया है। पुराने संसद भवन में इन वरिष्ठ कैबिनेट मंत्रियों का कार्यालय ग्राउंड फ्लोर पर स्थित कमरों में था। सरकार के अन्य कैबिनेट मंत्रियों को नए संसद भवन में फर्स्ट फ्लोर पर कार्यालय के लिए कमरे का आवंटन किया गया है। ज्योतिरादित्य सिंधिया को फर्स्ट फ्लोर पर कमरा नंबर एफ-20, गिरिराज सिंह को एफ-36, गजेंद्र सिंह शेखावत को एफ-18, नारायण राणे को एफ-39, सर्बानंद सोनोवाल को एफ-38, वीरेंद्र कुमार को एफ-37, पशुपति पारस को एफ-19, किरेन रिजिजू को एफ-17 और आरके सिंह को नए संसद भवन के फर्स्ट फ्लोर पर कमरा नंबर एफ-16 का आवंटन किया गया है।

भाजपा के लोगों को छत्तीसगढ़ और छत्तीसगढ़ियों से तकलीफ : भूपेश

महतारी की तस्वीर को पैर की जगह पर रखा, बस्तर के लोगों को नक्सली समझकर गोली से भूना

रायपुर, 16 सितंबर (देशबन्धु)। मुख्यमंत्री भूपेश बघेल ने भारतीय जनता पार्टी पर जमकर हमला किया है। उन्होंने शनिवार को कह दिया कि भाजपा के लोगों को छत्तीसगढ़ और छत्तीसगढ़ियों से तकलीफ है। मुख्यमंत्री हैदराबाद रवाना हो रहे थे।

इससे पहले पत्रकारों से चर्चा के दौरान उन्होंने यह बयान दिया। भूपेश बघेल ने परिवर्तन यात्रा में छत्तीसगढ़ महतारी की तस्वीर लगाए जाने का जिक्र करते हुए कहा- इन्हें (भाजपा) छत्तीसगढ़ से तकलीफ है, छत्तीसगढ़ियों से तकलीफ है। महतारी की तस्वीर मजबूरी में लगाए हैं, सीढ़ी चढ़ने की जगह पर तस्वीर लगाई है। ये आदत से बाज नहीं आ रहे हैं। हमेशा छत्तीसगढ़ के लोगों को पैरों तले रौदते रहे हैं।

मुख्यमंत्री ने आगे कहा- इनकी मानसिकता नहीं बदलेगी। चोर चोरी से जाए हेरा फेरी से न जाए। अब छत्तीसगढ़ी महतारी की याद आ रही है, कौशल्या माता की याद आ रही है, प्रदेश के लोगों को दबाने का काम, कुचलने का काम किए। बस्तर जाओ तो बस्तर के लोगों को नक्सली समझकर गोली से भूनने का कामयही ये लोग करते रहे हैं।

एक दिन पहले विरोध

भाजपा के परिवर्तन यात्रा के रथ पर महतारी की तस्वीर सीढ़ी के पास लगाने की वजह से शुक्रवार को कांग्रेस ने विरोध भी जताया था। रायपुर में राष्ट्रीय अध्यक्ष जेपी नड्डा का पुतला जलाया गया था। विधायक विकास उपाध्याय शहर अध्यक्ष गिरीश दुबे के नेतृत्व मे कार्यकर्ताओ ने कोतवाली चौक के सामने भाजपा नेताओ के खिलाफ जमकर नारेबाजी की थी।

छत्तीसगढ़ की चिंता थी तो देकर जाते

शुक्रवार को रायपुर आए केंद्रीय मंत्री पीयूष गोयल ने प्रदेश में सार्वजनिक वितरण प्रणाली में अनाज की गड़बड़ी का दावा किया। अधिकारियों से कहा कि केंद्र पूरा धान खरीदता है कोई स्थानीय मंत्री कहे कि स्टेट पैसा देता है तो उसपर केस करें, क्योंकि पूरा पैसा केंद्र देता है। इसके जवाब में मुख्यमंत्री ने कहा- इनका काम केवल झूठ बोलना है मुख्यमंत्री ने कहा कि भाजपा के नेताओं को जनता नकार रही है।

आज से 4 साल पहले कृषि मंत्री रविंद्र चौबे अधिकारियों को लेकर गए थे, तब पीयूष गोयल ने ही कह दिया था कि आप समर्थन मूल्य से अधिक दे रहे हैं तो हम आपका चावल नहीं लेंगे, हमें बाजार में बेचना पड़ा। फिर से आकर झूठ बोलकर जा रहे हैं। हमें तो विभाग से 6 हजार करोड़ लेना है, आए थे तो देकर जाते, प्रदेश के लोगों का हित चाहते तो देकर जाना था।

भाजपा के नेताओं का मौसम खराब

भूपेश बघेल ने कहा कि अमित शाह यहां के नेताओं से नाराज हैं। पिछले दिनों भाजपा के आरोप पत्र लॉन्च कार्यक्रम में भीड़ नहीं थी। अन्य कार्यक्रमों में भी लोग नहीं आ रहे। ये लोग कहते हैं मौसम खराब होने की वजह से नहीं आ रहे, मौसम ठीक है, मौसम का बहाना बना रहे हैं। मौसम तो इनके नेताओं का ठीक नहीं है।

अब आएगी स्लीपर वंदे भारत ट्रेन

नई दिल्ली, 16 सितम्बर (एजेंसियां)। वंदे भारत ट्रेन में अगले साल मार्च तक स्लीपर कोच लगाने की तैयारी है। देश में अभी चेयरकार सुविधा वाली वंदे भारत चल रही है। रेलवे की योजना अब राजधानी एक्सप्रेस के रूट पर वंदे भारत ट्रेन को चलाने की है। ऐसे में यात्रियों को रात में आराम देने के लिए स्लीपर कोच देना जरूरी है। चेन्नई स्थित इंटीग्रल कोच फैक्ट्री के जनरल मैनेजर बीजी माल्या के अनुसार इसी फाइनेंशियल ईयर के दौरान वंदे का स्लीपर वर्जन लॉन्च किया जाएगा। साथ ही वंदे मेट्रो भी इसी फाइनेंशियल ईयर में लॉन्च की जाएगी।

- अगले साल मार्च से शुरू करने की हो रही तैयारी

माल्या ने बताया कि अभी स्लीपर वंदे भारत ट्रेन को बनाया जा रहा है और इसे मार्च 2024 में लॉन्च किया जाएगा। इसके साथ ही वंदे मेट्रो का भी निर्माण चल रहा है। 12 कोच की इस ट्रेन को छोटे रूट पर चलाया जाएगा। माल्या ने बताया कि वंदे भारत का एक नॉन एसी ट्रेन वर्जन भी लॉन्च करने की योजना है। इस साल 31 अक्टूबर से पहले इसे लॉन्च किया जाएगा। यह एक नॉन-एसी पुश-पुल ट्रेन होगी, जिसमें 22 कोच और इसके दोनों तरफ एक-एक लोकोमोटिव यानी इंजन होगा।

160 किमी प्रति घंटे होगी रफ्तार

वंदे भारत स्लीपर ट्रेन की रफ्तार 160 किमी प्रति घंटे होगी। इसमें 16 कोच होंगे जिनमें 11 एसी3, चार एसी2 और एक एसी1 कोच होगा। उनका कहना था कि कोच की संख्या 20 या 24 की जा सकती है।

12 मंजिला रिहायशी इमारत में लगी आग, 60 लोगों को सुरक्षित निकाला गया

नई दिल्ली, 16 सितम्बर (एजेंसी)। मुंबई के कुर्ला इलाके में 12 मंजिला एक रिहायशी इमारत में शुक्रवार रात आग लग गई, जिसके बाद उसमें रहने वाले कम से कम 60 लोगों को सुरक्षित निकाला गया। एक अधिकारी ने यह जानकारी दी। उन्होंने बताया कि घटना शुक्रवार रात 12 बजकर 10 मिनट पर 'स्लम रिहैबिलिएशन अथॉरिटी (एसआरए) इमारत संख्या 7 में हुई। यह इमारत कोहिनूर अस्पताल के ठीक सामने है। अधिकारी के मुताबिक, इमारत से सुरक्षित निकाले गए 60 लोगों में से 39 को दम घुटने की शिकायत के कारण अस्पताल में भर्ती कराया गया है। दमकल विभाग के एक अधिकारी ने बताया, ''आग देर रात लगी। इस संबंध में जानकारी मिलने पर दमकल की चार गाड़ियों, कई बड़े टैंकर और अन्य साजो सामान के साथ दमकल कर्मियों की एक टीम मौके पर पहुंची और आग बुझाने का काम शुरू किया।

सर्वेक्षण

छत्तीसगढ़ व राजस्थान में कांग्रेस की सरकार

नई दिल्ली, 16 सितम्बर (देशबन्धु)। देश के पांच राज्यों में विधानसभा के चुनाव का ऐलान एक महीने बाद होना है। और चुनावों को लेकर देशबन्धु डीबी लाइव ने जनता के बीच पहुंचकर यह पता लगाने की कोशिश की है कि अगर आज चुनाव हों तो किसकी सरकार बनेगी।

राजस्थान और छत्तीसगढ़ विधानसभा चुनावों को लेकर शनिवार को जो सर्वे डीबी लाइव पर प्रसारित हुआ। उसमें कांग्रेस दोनों ही राज्यों में अपनी सरकार बचाती हुई दिखाई दे रही है। दोनों ही राज्यों में अभी कांग्रेस की सरकार है और ये सरकार बची रहने की उम्मीद दिखाई दे रही है।

छत्तीसगढ़ में कांग्रेस की सीट घटेंगी- *छत्तीसगढ़ विधानसभा चुनावों में इस बार कांग्रेस को सीटों के मामले में नुकसान होता दिखाई दिखाई दे रहा है। तो बीजेपी की सीटें दोगुनी से भी ज्यादा होती दिखाई दे रही हैं। लेकिन फिर भी कांग्रेस के पास ही सत्ता रहेगी ये भी तय है। कांग्रेस को 48 से 60 सीटें मिलने का अनुमान है। तो भाजपा को 28 से 40 सीटें मिल सकती हैं। जबकि अन्य के हिस्से में 0 से 4 सीटें जा सकती है। यानी पांच साल बाद एक बार फिर छत्तीसगढ़ में कांग्रेस की सरकार आसानी से बनती दिखाई दे रही है।*

- **कांग्रेस को राजस्थान में सरकार के साथ सीटों का भी फायदा**

राजस्थान में कांग्रेस को सीटों का भी फायदा- *राजस्थान में विधानसभा चुनाव के परिणाम एक बार फिर से कांग्रेस के पक्ष में दिखाई दे रहे हैं। सर्वे में कांग्रेस को 94 से 122 और बीजेपी को 60 से 88 और अन्य के खाते में 8 से 28 सीटें मिलने का अनुमान है। राज्य में अशोक गहलोत की योजनाओं का लाभ कांग्रेस को मिलता हुआ दिखाई दे रहा है। तो दूसरी ओर वसुंधरा राजे सिंधिया की नाराजगी बीजेपी पर भारी पड़ सकती है।*

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी करें बिलासपुर से महानगरों तक सीधी उड़ान की घोषणा

- 4 साल से बिलासपुर संभाग के लोग कर रहे मांग परन्तु केंद्र सरकार ध्यान नहीं दे रही।
- छत्तीसगढ़ के 14 जिलों के लिए नज़दीक है बिलासा देवी केंवट एयरपोर्ट

बिलासपुर 16 सितम्बर (देशबन्धु)। हवाई सुविधा जन संघर्ष समिति ने प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी से मांग की है कि वे अपने आगामी बिलासपुर प्रवास में बिलासपुर अंचल की वर्षों पुरानी मांग बिलासपुर से महानगरों तक सीधी उड़ान की मांग पूरी करे और बिलासपुर से हैदराबाद, कोलकाता, मुंबई और दिल्ली तक डायरेक्ट फ्लाइट की घोषणा करे। गौरतलब है कि बिलासपुर एयरपोर्ट पर अभी दिन में केवल एक ही फ्लाइट संचालित है और इस माह के अंत तक यहां नाईट लैंडिंग की सुविधा भी हो जाने वाली है अत: यह से महानगरों तक सीधी उड़ान प्रारम्भ करे जिसकी मांग 4 साल से आम जनता आंदोलन के माध्यम से कर रही है समिति ने बताया कि बिलासपुर एयरपोर्ट से छत्तीसगढ़ राज्य के 14 जिले और मध्यप्रदेश के तीन जिले नज़दीक है अत: यह महानगरों तक सीधी उड़ान देने से करीब 1. 5 करोड़ जनता वाले क्षेत्र को लाभ पहुंचेगा। हवाई सुविधा जन संघर्ष समिति ने याद दिलाते हुए कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने उड़ान योजना उड़े देश का आम के लिए प्रारम्भ की है परन्तु बिलासपुर को इसका लाभ देना समाप्त कर दिया गया है इसकी शिकायत कई बार नागरिक उड्डयन मंत्रालय से की गई है परन्तु कोई हल नहीं निकल रहा है. इसलिए समिति प्रधानमंत्री से यह भी मांग करती है कि बिलासपुर एयरपोर्ट को उड़ान योजना के लाभ पुन: दिलाये और महानगरों तक हवाई सुविधा दिलाये। हवाई सुविधा जन संघर्ष समिति का महाधरना आंदोलन आज भी जारी रहा। आज के महाधरने में महापौर रामशरण यादव, समीर अहमद, , देवेंद्र सिंह ठाकुर, महेश दुबे, रवि बनर्जी, बद्री यादव, रशीद बक्श, शिवा मुदलियार, रणजीत सिंह खनूजा, नरेश यादव, गोपाल दुबे, मनोज श्रीवास, केशव गोरख, अमर बजाज, अनिल गुलहरे, यतीश गोयल, संजय पिल्लई, कमल सिंह ठाकुर, विजय वर्मा, अभिषेक चौबे अक़ील अली, मोहसिन अली, दीपक कश्यप, राजेश यादव, चंद्र प्रकाश जायसवाल, संदीप यादव भारतीय और सुदीप श्रीवास्तव

दिल्ली जाना हुआ असंभव जनता ने रेल मंत्री का पुतला जला कर दिया जवाब

आज बिलासपुर राघवेंद्र राव सभा भवन चौक पर बिलासपुर के महापौर और नागरिको ने रेल मंत्री का पुतला दहन कर दिल्ली जाने वाली गाड़ियों को एकमुश्त रद्द करने के फैसले पर विरोध जताया. प्रदर्शन के दौरान रेल मंत्री और प्रशाशन के खिलाफ काफी उग्र नारेबाजी की गई। लगातार आम जनता, मीडिया और राजनीतिक पार्टियों के द्वारा की जा रहे मांगो की उपेक्षा करते हुए और छत्तीसगढ़ के साथ दुर्भावना पूर्वक रवैय्या अपनाते हुए आज फिर एक बार छत्तीसगढ़ से दिल्ली जाने वाली लगभग हर ट्रैन को लम्बे समय तक रद्द कर दिया है इसके लिए रेलवे के द्वारा झाँसी स्टेशन के प्लेटफार्म पर वाशिंग एप्रन का बहाना बनाया गया है। अगर ऐसा है तो दिल्ली जाने वाली ट्रेनों का झाँसी स्टॉपेज अस्थाई रूप से बंद कर उसे थ्रू निकला जा सकता है, ट्रैन रद्द करने की बिलकुल जरुरत नहीं है।बिलासपुर की रेलवे के मामलो में सक्रिय छात्र, युवा, नागरिक रेलवे संघर्ष समिति ने विस्तार से बताते हुए कहा कि छत्तीसगढ़ संपर्क क्रांति, गोंडवाना और छत्तीसगढ़ एक्सप्रेस को रद्द करना तुगलकी फैसला है और रेलवे दुर्भावना से छत्तीसगढ़ के लोगों पर अत्याचार कर रहा है. समिति ने कहा कि झाँसी स्टेशन पर समस्या होने पर इन गाड़ियों को बीना से गुना ग्वालियर के रास्ते दिल्ली भेजा जा सकता है. छत्तीसगढ़ के लोगों को दिल्ली और उत्तर भारत के लिए इन ट्रेनों का ही सहारा है, ओडिशा या आँध्रप्रदेश से आने वाली उत्कल एक्सप्रेस, हीराकुड एक्सप्रेस, समता एक्सप्रेस पहले से भरी हुई आती है और उनमे जगह नहीं मिलती। समिति ने यह भी सवाल उठाया की रेलवे ने ओडिशा और आंध्रप्रदेश से दिल्ली जाने वाली ट्रेनों को रद्द क्यों नहीं किया और छत्तीसगढ़ के साथ ही अन्याय क्यों किया जा रहा है। छात्र युवा नागरिक रेलवे संघर्ष समिति ने आम जनता, युवाओ, दैनिक रेल यात्रियों और सामजिक संघठनो का आव्हान किया है कि रेल मंत्रालय को कुम्भकर्णी नींद से जगाने के लिए रेल मंत्री के 100। ज़ पुतले जिले भर में जलाये। समिति ने यह भी चेतावनी दी कि यदि इसके बाद भी स्थिति में सुधार नहीं हुआ तो प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के भी पुतले जलाये जाएंगे।

घरेलू सामान चोरी, आरोपी गिरफ्तार

सूनसान मकानों को बनाते थे निशाना

बिलासपुर , 16 सिंतबर (देशबन्धु)। पुलिस अधीक्षक संतोष कुमार सिंह (भापुसे) द्वारा पूर्व में थाना प्रभारियों की मीटिंग लेकर जिले में हो रही लगातार मोटर सायकल चोरियों पर अंकुश लगाने एवं अवैध करोबार करने वालों के विरूद्ध प्रभावी कार्यवाही करने निर्देशित किया गया है, जिसके परिपालन में क्षेत्र में हो रहे चोरी के रोकथाम तथा आरोपियों के धरपकड़ हेतु अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक राजेन्द्र जायसवाल एवं सी.एस.पी. (सरकंडा) श्रीमति पूजा कुमार के मार्ग दर्शन एवं थाना प्रभारी सरकंडा निरीक्षक जय प्रकाश गुप्ता के निर्देशन में थाना सरकण्डा से एक टीम तैयार कर पतासाजी हेतु लगाया गया है। दिनांक 15.09.2023 को प्रार्थी निर्मल खुंटे पिता धनीराम उम्र 52 वर्ष निवासी चुन्नी तालाब के सामने राजकिशोर नगर सरकण्डा का रिपोर्ट दर्ज कराया कि प्रतिदिन की तरह वह ड्यूटी पर गया था, घर में कोई नही था, वापस आया तो देखा घर में लगे नल को कोई अज्ञात चोर चोरी कर ले गया था तभी इसके पड़ोस में रहने वाली इसकी मामी भी आकर बताई कि उनके घर में लगे नल एवं एसी का आउटर को कोई अज्ञात चोर चोरी कर ले गया है, प्रार्थी के उक्त रिपोर्ट पर अपराध सदर कायम कर विवेचना में लिया गया, दौरान विवेचना मुखबीर से सूचना मिला कि संदेही सुभाष देवांगन, योगेश देवांगन एवं रोहित साहू लोग एसी का आउटर छिपाकर रखे हैं, उक्त सूचना पर तत्काल कार्यवाही करते हुये संदेही सुभाष देवांगन, योगेश देवांगन एवं रोहित साहू को घेराबंदी कर पकड़कर पूछताछ किया गया। जो प्रार्थी के घर एवं पड़ोस के घर में लगे नल एवं एसी का आउटर किमती 20000 रू. को चोरी करना स्वीकार किये जिनके निशानदेही पर चोरी गई मशरूका नल एवं एसी का आउटर किमती 20000 रू. बरामद किया एवं आरोपियों को गिरफ्तार कर रिमाण्ड पर न्यायालय पेश किया गया है।

सार-संक्षेप

रजनीश सिंह ने किया बेलतरा में भाजपा कार्यालय का उद्घाटन

बिलासपुर , 16 सिंतबर (देशबन्धु)। आने वाले विधानसभा चुनाव को ध्यान में रखते हुए आज विधायक रजनीश कुमार सिंह ने बेलतरा में चुनाव कार्यालय का उद्घाटन किया । पार्टी संगठन के निर्देशानुसार प्रदेश के प्रत्येक विधानसभा मुख्यालय में चुनाव कार्यालय खोले जाने हैं एक तरह से यह विधानसभा स्तरीय चुनावी अभियान की शुरुवात है जिसके माध्यम से क्षेत्र को मेसेज देना ओर कार्यकर्ताओं को चुनाव के लिए तैयार करना शामिल है । आज बेलतरा में विधिवत चुनाव कार्यालय की ओपनिग की गई इसके लिए विधानसभा के सभी छोटे बड़े कार्यकर्ताओं को न्योता भेजा गया था। भारतीय जनता पार्टी के जिलाध्यक्ष रामदेव कुमावत की उपस्थिति में विधायक रजनीश कुमार सिंह ने कहा कि प्रदेश की जनता को कांग्रेस ने छला है वह झूठे वायदे कर सत्ता में काबिज हुई है इनके पूरे कार्यकाल में भ्रष्टाचार चरम पर रही अपराध में वृद्धि हुई शराब बंदी से मुकर गए इस तरह से अनेकों विफलताएं है जो कांग्रेस के कथनी और वहां में अंतर को दिखलाती है इस सरकार को बदलने प्रदेश की जनता ने मन बना लिया है हमे बस पूरी एकजुटता और ऊर्जा के साथ चुनाव में कार्य करने तैयार रहना है इस अवसर पर विजय धर दीवान तिलक साहू अवधेश अग्रवाल शंकर दयाल शुक्ला विक्रम सिंह अनिल पाण्डे लक्ष्मी कश्यप धनजय त्रिपाठी जित्तू साहू शैलू गोरख लोकेश दीवान योगेश्वर डूबे क्षत्रपाल सिंह सहित भाजपा कार्यकर्ता उपस्थिति थे।

मस्तूरी विधायक ने ली विभिन्न मंडलों की बैठक, कार्यकर्ताओं को दिया जीत का मंत्र

बिलासपुर, 16 सिंतबर (देशबन्धु)। मस्तूरी विधायक डॉ.कृष्णमूर्ति बांधी ने सीपत,लोहरसी, जयराम नगर गतौरा व मस्तुरी मंडल की बैठक ली, जिसमें उन्होंने विधानसभा चुनाव के मद्देनजर कार्यकर्ताओं को मोबाइल एप्लिकेशन और नवाचारों का सहायक होने का तरीका बताया। उन्होंने यह सुनिश्चित करने की सलाह दी कि कार्यकर्ताएँ नियमित रूप से सोशल मीडिया पर अपडेट दें और उन्हें वोटर्स के साथ संवाद में रहने का प्रयास करना चाहिए।

उन्होंने कहा कि जल्द ही सभी बूथ अध्यक्षों को वोटर लिस्ट उपलब्ध करा दी जाएगी। कहा कि सभी बूथ अध्यक्ष अपने बूथ टोली का निर्माण करेंगे और पन्ना प्रमुख बनाएंगे, विधायक बांधी ने कहा कि वर्ष 2023 में विधानसभा के होने वाले चुनाव में भाजपा को ऐतिहासिक जीत दिलाने के लिए कार्यकर्ताओं को चाहिए कि वह अभी से जी तोड़ कोशिश करें और पार्टी की नीतियों को जन जन तक पहुंचाने का कार्य करें। चुनाव जीतने के लिए सही मुद्दों पर केंद्रित रहना महत्वपूर्ण है और चुनाव प्रचार में सावधानी बरतनी चाहिए। उन्होंने कार्यकर्ताओं से आदर्श और नैतिकता के साथ चुनाव प्रचार करने की सलाह दी और अपनी पार्टी की नीतियों को सार्वजनिक मेंटरिंग के माध्यम से प्रस्तुत करने का सुझाव दिया। उन्होंने यह भी महत्वपूर्ण माना कि कार्यकर्ता चुनाव क्षेत्र में जुटकर वोटर्स के साथ अच्छे संवाद में रहें और उनकी समस्याओं का समाधान करने का प्रयास करें। इस बैठक से कार्यकर्ता उत्साहित होकर चुनाव की तैयारी में जुट जाने के लिए प्रोत्साहित हुए। बैठकों के दौरान सभी मंडल अध्यक्ष मोर्चा प्रकोष्ठ शक्ति केंद्र प्रभारी उपस्थित रहे।

संभाग स्तरीय छत्तीसगढ़िया ओलंपिक प्रतियोगिता 19 व 21 को

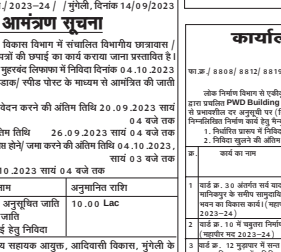

बिलासपुर , 16 सिंतबर (देशबन्धु)। संभाग स्तरीय छत्तीसगढ़िया ओलंपिक खेल प्रतियोगिता का आयोजन बिलासपुर के बहतराई स्टेडियम में 19 व 21सितंबर को होगा। संभाग के सभी 8 जिलों के लगभग 500 विजेता खिलाड़ी एवं निर्णायक इस प्रतियोगिता में शामिल होंगे। कमिश्नर केडी कुंजाम ने प्रतियोगिता के सफल आयोजन के लिए अधिकारियों को जिम्मेदारी सौंपी है। संपूर्ण आयोजन के लिए बिलासपुर जिला पंचायत सीईओ अजय

बस्तर के ताडमेटला में मारे गए आदिवासियों के विषय में हो जल्द उच्च स्तरीय न्यायिक जांच

पीड़ितों को न्याय प्रदान करें शासन सुभाष परते

बिलासपुर ,16 सितंबर (देशबन्धु) । सुकमा जिले के ग्राम ताडमेटला, थाना चिंतागुफा, तहसील कोंटा निवासी रवा देवा पिता बांडी उम्र 39 वर्ष, सोन्दी कोसा पिता बीडाल उम्र 33 वर्ष दोनों जाती मुरिया दोनों ताड़मेटला में रहकर छोटे-मोटे व्यवसाय कर अपने परिवार का पालन पोषण कर रहे थे, जो 04/09/2023 को घर से काम पर निकले थे ग्रामीण के बताये अनुसार जिन्हें रास्ते से डीआरजी के जवान उठाकर ले गए ।तथा नक्सलियों के साथ मुठभेड़ के नाम पर फर्जी एनकाउंटर कर दोनों के शव को अपनी कस्टडी में लेकर गांव में उनके परिवार को बिना सोफे खुद जला दिए गांव वालों को डराया धमकाया गया। जिससे मामला संदिग्ध नजर आता है। परिवार एवं गांव वालों के जानकारी पर सर्व आदिवासी समाज की टीम खुद मामले की जांच करने पर एनकाउंटर फर्जी पाया गया है, जिससे पूरे बस्तर संभाग में 16 सितंबर को विरोध स्वरूप धरना प्रदर्शन समाज द्वारा किया गया। जिस पर प्रदेश अध्यक्ष युवा प्रभाग सुभाष परते ने उक्त घटना की जल्द उच्च स्तरी जांच कमेटी बनाकर दोषि पुलिस कर्मियों पर कार्रवाई कर हत्या एवं अपहरण का अपराध दर्ज करते हुवे मृतक परिवार को एक-एक करोड़ रुपये के मुआवजा राशि की मांग शासन से की है।

उन्होंने कहा ऐसी घटना पूर्व में भी बस्तर में होते आ रहा है जो जांच में फर्जी एनकाउंटर साबित हो गया पर बड़ी विडंबना की बात है। आज तक इस पर कार्रवाई न होना आदिवासियों के साथ अन्याय एवं आदिवासी विरोधी मानसिकता को दर्शाता है । आदिवासियों का हितेषी होने का दम सभी शासन प्रशासन भरते हैं पर न्याय दिलाने के मामले में आयोग बनाकर मामले को ठंडे बस्ती में डाल देते हैं। जिसकी सर्व आदिवासी समाज कड़ी भर्त्सना करता है। वह पीड़ित परिवार को जब तक न्याय नहीं मिलता तब तक चुप नहीं बैठने का संकल्प संगठन ने

आंगनबाड़ी कार्यकर्ता सहायिका ने सीएम का जताया आभार

बिलासपुर , 16 सिंतबर (देशबन्धु)। छत्तीसगढ़ सरकार के मुखिया भूपेश बघेल के द्वारा आंगनबाड़ी कार्यकर्ता सहायिकाओं का सेवानिवृत्ति आयु 62 से बढ़कर 65 वर्ष किया गया एवं राज्य भर में कार्यकर्ता के 50प्रतिशत रिक्त पदों पर आंगनवाड़ी सहायिकाओं की भर्ती के लिए अभी तक 25प्रतिशत रिक्त पदों पर भर्ती का बंधन था यही नहीं भर्ती के लिए 10 वर्ष का अनुभव जरूरी था जिसे घटाकर अब 5 वर्ष कर दिया गया है। अनिश्चितकालीन धरना प्रदर्शन के 43 वें दिन 6 मार्च 23 को मुख्यमंत्री द्वारा कार्यकर्ता सहायिकाओं के मानदेय में वृद्धि की घोषणा बजट सत्र में किया गया जो अप्रैल माह से मानदेय में दिया जा रहा है। 43 दिनों का अनिश्चितकालीन धरना प्रदर्शन का मानदेय भी कुछ जिलों में भुगतान कर दिया गया है। बाकी जिलों में भी शीघ्र भुगतान करने निवेदन किया गया है। उक्त उपलब्धियों में संघ मुख्यमंत्री भूपेश बघेल, महिला बाल विकास मंत्री अनिला भेड़िया सहित संघ के कुशल रणनीतिकारों वरिष्ठ पदाधिकारियों देवेन्द्र पटेल प्रांतीय संयोजक,सरिता पाठक प्रांतीय अध्यक्ष,सुमन यादव प्रांतीय सचिव, अनिता नायक प्रांतीय उपाध्यक्ष, ममता यादव प्रांतीय सलाहकार,पी आर कौशिक प्रांतीय संरक्षक, चन्द्रशेखर पाण्डेय संभागीय संयोजक बिलासपुर,जिला अध्यक्षों में सुनीति साहू रायपुर, कामिनी चंद्रकार दुर्ग, द्रोपदी साहू महासमुंद भारती मिश्रा बिलासपुर,बीना साहू कोरबा, गायत्री चतुर्वेदी जी पी एम,अनूपा कुशवाहा अंबिकापुर, कविता यादव जसपुर, शकुंतला चक्रवर्ती कोरिया,जानकी शर्मा बलौदा बाजार,नीरा साहू बालौद,अंजू दीवान बेमेतरा, दुलारी साहू गरियाबंद, शांति मार्को मरवाही,नीता कुलदीप मुंगेली,सरिता साहू लोरमी, प्रतिक्षा शर्मा पाली,गुनेंद्री जोशी जगदलपुर,सुशीला राठौर सुकमा,सुशीला यादव दंतेवाड़ा रूखमणी गुप्ता कांकेर खेमलता मंडावी केशकाल लक्ष्मी बघेल कोण्डागांव, रेहाना खान बीजापुर,चेता बंजारे जांजगीर चांपा,सुचिता गुप्ता बलरामपुर,रीना यादव एमसीबी,सुमन सिंह चिरमिरी, ज्योति पाठक मनेन्द्रगढ़ गुलाबवती खड़गवां सहित संघ के समर्पित सभी कार्यकर्ता सहायिकाओं मिनी कार्यकर्ताओं को हार्दिक धन्यवाद ज्ञापित करती हैं। यह जानकारी भारती मिश्रा बिलासपुर जिलाअध्यक्ष ने दी।

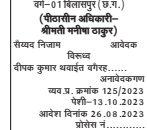

न्यायालय तहसीलदार दीपका जिला कोरबा (छ.ग.)

ईश्तहार

एतद् द्वारा आम जनता को सूचित किया जाता है कि आवेदक समार सिंह पिता हीरा लाल जाति कंवर साकिन ढुरेना तहसील दीपका जिला कोरबा के द्वारा ग्राम ढुरेना प.ह.नं. 48 तहसील दीपका में स्थित भूमि ख.नं. 662/1 में से रकबा 0.073 हे. भूमि को अनावेदक दादी सिंह पिता इतवार सिंह जाति कंवर निवासी ढुरेना तहसील दीपका से पंजीकृत विक्रय विलेख के माध्यम से क्रय की गई भूमि को अपने नाम पर नामांतरण बाबत् आवेदन पत्र प्रस्तुत किया है।

उक्त के संबंध में जिस किसी भी व्यक्ति को किसी प्रकार की आपत्ति दावा प्रस्तुत करना हो तो वे दिनांक 25/09/2023 तक स्वयं या अपने अधिवक्ता के माध्यम से प्रस्तुत कर सकते हैं, नियत तिथि के बाद में प्रस्तुत आपत्ति दावा पर कोई विचार नहीं किया जावेगा।

अतः आज दिनांक 08/09/2023 को मेरे हस्ताक्षर एवं न्यायालय की सील मुद्रा से ईश्तहार जारी किया गया।

सील
तहसीलदार
दीपका, जिला कोरबा (छ.ग.)

NECC

17.09.2023	अंडा	मुर्गी	काकरेल
फार्म	505	85	170
चिल्हर	6.00	100	195

डिलीवरी 5.20 सैकड़ा
दर्जन अंडा 70 रु.
मुर्गी खाद प्रति ट्राली 1000 रू.
CSPFA

कार्यालय, कार्यपालन अभियंता लोक स्वास्थ्य यांत्रिकी खण्ड बिलासपुर (छ.ग.)
पता :– पुराना कम्पोजिट बिल्डिंग, कक्ष क्र. 18 ,कलेक्टोरेट के सामने, Phone No. 07752-250593, Email ID - eebil-phe-cg@gov.in

:: ऑनलाईन निविदा आमंत्रित सूचना ::

जिला जल एवं स्वच्छता मिशन बिलासपुर के अन्तर्गत एकीकृत पंजीयन प्रणाली के अन्तर्गत उपयुक्त श्रेणी में पंजीकृत ठेकेदारों से निम्नांकित कार्य हेतु प्रपत्र ''अ'' (प्रतिशत दर) जल जीवन मिशन अंतर्गत ऑनलाईन निविदा आमंत्रित की जाती है। जिसका विवरण निम्नानुसार है।

क्रं.	निविदा क्रमांक/ दिनांक/ सिस्टम क्रमांक	ग्राम का नाम	विकासखण्ड का नाम	निविदा की लागत (रू. लाख में)	धरोहर राशि
1	39/ 25.08.2023/ 145666	गोबरीपाट एवं मोहदी	कोटा	175.18	132000

ऑनलाईन निविदा की अन्य विवरण एवं विस्तृत जानकारी छ.ग. शासन लोक स्वास्थ्य यांत्रिकी विभाग के ई–प्रोक्योरमेंट वेबसाइट https://eproc.cgstate.gov.in दिनांक 26.09.2023 दिनांक 17:30 बजे तक बीड डाले जा सकते हैं एवं अन्य विवरण कार्यालयीन समय पर लोक स्वास्थ्य यांत्रिकी खण्ड बिलासपुर (छ.ग.) में देखे जा सकते हैं।

कार्यपालन अभियंता/सदस्य सचिव
जिला जल एवं स्वच्छता मिशन
जिला– बिलासपुर (छ.ग.)

जी– 05422/1

कार्यालय कलेक्टर (आदिवासी विकास) जिला–मुंगेली (छ.ग.)
न्यू कलेक्टोरेट भवन, कक्ष क्र. 221/ 226
फोन नं. –07755–264122 ईमेल actdmungeli@gmail.com
क्रमांक/ 2159 / स्टोर / आदि.वि.वि./ 2023–24 / / मुंगेली, दिनांक 14/09/2023

निविदा आमंत्रण सूचना

आदिम जाति अनुसूचित जाति विकास विभाग में संचालित विभागीय छात्रावास / आश्रमों के लिये फार्मों की छपाई प्रपत्रों की छपाई का कार्य कराया जाना प्रस्तावित है। फार्म की छपाई कार्य हेतु इच्छुक फर्म मुहरबंद लिफाफा में निविदा दिनांक 04.10.2023 को सायं 3.00 बजे तक पंजीकृत डाक/ स्पीड पोस्ट के माध्यम से आमंत्रित की जाती है।

1. निविदा प्रपत्र क्रय करने हेतु आवेदन करने की अंतिम तिथि 20.09.2023 सायं 04 बजे तक
2. निविदा प्रपत्र प्राप्त करने की अंतिम तिथि 26.09.2023 सायं 04 बजे तक
3. निविदा प्रपत्र इस कार्यालय को प्राप्त होने/ जमा करने की अंतिम तिथि 04.10.2023, सायं 03 बजे तक
4. निविदा खोलने की तिथि 06.10.2023 सायं 04 बजे तक

क्र.	कार्य का नाम	अनुमानित राशि
1.	अनुसूचित जनजाति, अनुसूचित जाति एवं अन्य पिछड़ा वर्ग जाति प्रमाण पत्र फार्म छपाई हेतु निविदा	10.00 Lac

टीपः– अन्य नियम/ शर्तें कार्यालय सहायक आयुक्त, आदिवासी विकास, मुंगेली के सूचना पटल में कार्यालयीन दिवस एवं समय पर देखी जा सकती है।

(अजय कुमार शतरंज)
सहायक आयुक्त,
आदिवासी विकास, मुंगेली

जी– 05403/2

कार्यालय, नगर पालिक निगम, कोरबा (छ.ग.)
मुख्य कार्यालय– साकेत भवन, आई.टी.आई. चौक, कोरबा (छ.ग.)
(पं.रविशंकर शुक्ल नगर जोन)
फा.क्र./ 8808/ 8812/ 8819/ पं.रविशंकर शुक्ल नगर जोन/ 2023 कोरबा, दिनांक 12.09.2023

निविदा आमंत्रण की सूचना

लोक निर्माण विभाग से एकीकृत पंजीयन प्रणाली अंतर्गत सक्षम श्रेणी में पंजीकृत ठेकेदारों से निम्नलिखित कार्य हेतु प्रमुख अभियन्ता लोक निर्माण विभाग, रायपुर द्वारा प्रचलित PWD Building SOR 01.01.2015 एवं प्रमुख अभियंता लोक निर्माण विभाग, रायपुर द्वारा प्रचलित PWD Electrical SOR 01.06.2020 से प्रभावशील दर अनुसूची पर (निविदा खुलने के दिनांक तक समस्त संशोधनों के साथ) कम अधिक या समान दरों पर तथा शेड्युल अनुसार आयटम दरों पर निम्नलिखित निर्माण कार्य हेतु मैन्युअल निविदा वेबसाईट से डाउनलोड कर त्रि–लिफाफा पद्धति माध्यम से आमंत्रित की जाती है :–

1. निर्धारित प्रारूप में निविदा प्रपत्र प्राप्त होने अंतिम तिथि – 04.10.2023 सायंकाल 3:00 बजे तक
2. निविदा खुलने की अंतिम तिथि – 04.10.2023 सायंकाल 4:30 बजे तक

क्र.	कार्य का नाम	प्राक्कलन राशि में	धरोहर राशि रू. में	निविदा प्रपत्र का मूल्य	निविदा प्रपत्र	कार्यावधि	ठेकेदार का वर्ग	निविदा खुलने की अंतिम तिथि
1	वार्ड क्र. 30 अंतर्गत सर्व यादव समाज मानिकपुर के समीप सामुदायिक भवन का विकास कार्य। (महापौर मद 2023–24)	10,00,000/–	7,500/–	750/–	Form-A	04 माह	सक्षम श्रेणी	04.10.2023
2	वार्ड क्र. 10 में चबुतरा निर्माण कार्य। (महापौर मद 2023–24)	5,00,000/–	5,000/–	750/–	Form-A	03 माह	सक्षम श्रेणी	04.10.2023
3	वार्ड क्र. 12 मुड़ापार में सन्त कबीर सामुदायिक भवन में अतिरिक्त विकास कार्य। (महापौर मद 2023–24)	6,00,000/–	4,500/–	750/–	Form-A	03 माह	सक्षम श्रेणी	04.10.2023

उपरोक्त कार्यों की निविदा की सामान्य शर्तें, धरोहर राशि, विस्तृत निविदा विज्ञप्ति, निविदा दस्तावेज व अन्य जानकारी कार्यालयीन अवधि में कार्यालय से प्राप्त की जा सकती है साथ ही यह जानकारी विभागीय वेबसाइट Website : www.korbamunicipal.in एवं www.uad.cg.gov.in में देखा एवं डाउनलोड किया जा सकता है। उक्त निविदा में किसी भी प्रकार का संशोधन किया जाता है तो विभागीय वेबसाईट पर देखा जा सकता है।

// स्वच्छ भारत निर्माण में योगदान दें //

कार्यपालन अभियंता
नगर पालिक निगम, कोरबा (छ.ग.)

न्यायालय :– द्वितीय व्यवहार न्यायाधीश वर्ग–01 बिलासपुर (छ.ग.)
(पीठासीन अधिकारी– श्रीमती मनीषा ठाकुर)

सैय्यद निजाम आवेदक
विरूध्द
दीपक कुमार थवाईत वगैरह......
अनावेदकगण
व्यव.प्र. क्रमांक 125/2023
पेशी–13.10.2023
आदेश दिनांक 26.08.2023
प्रोसेस नं............

प्रति,
1– दीपक कुमार थवाईत पिता स्व. भगवती थवाईत उम्र 50 साल, निवासी ग्राम कोरबा, इन्दिरा नगर, दुरपा रोड, वार्ड नंबर 03, मकान नंबर 600, तह. व जिला कोरबा छ.ग.
2– नीलकमल थवाईत पिता स्व. भगवती थवाईत निवासी ग्राम कोरबा, इन्दिरा नगर, दुरपा रोड, वार्डनंबर 03, मकान नंबर 600, तह. व जिला कोरबा छ.ग.
3– श्रीमती परमेश्वरी थवाईत पिता स्व. भगवती थवाईत पति श्री देवेन्द्र कुमार थवाईत, मूल निवासी ग्राम कोरबा, इन्दिरा नगर, दुरपा रोड, वार्ड नंबर 03, मकान नंबर 600, तह. व जिला कोरबा छ.ग. हाल मुकाम– ग्राम भैसतरा वार्ड नंबर 06, बस्तीपारा भैसतरा पो. भैसतरा, जिला जांजगीर चांपा छ.ग.

इस न्यायालय में आवेदक/ वादी सैय्यद निजाम अली पिता सैय्यद सुनहर अली उम्र 47 साल, निवासी करैहापारा रतनपुर, पोस्ट व थाना रतनपुर, जिला बिलासपुर छ.ग. द्वारा प्रतिवादीगण के विरूद्ध वाद वास्ते संविदा के विशिष्ट अनुपालन हेतु वाद प्रस्तुत किया है जिसमें प्रतिवादीगण की उपस्थिति हेतु दिनांक 13.10.2023 को नियत है। उनके लिए राष्ट्रीय दैनिक समाचार पत्र में समंस प्रकाशन किया जाता रहा है।

आप उक्त प्रकरण की पेशी दिनांक 13.10.2023 को स्वयं या अपने अधिवक्ता के माध्यम से उपस्थित होकर आपत्ति सम्यक जवाब मय दस्तावेज प्रस्तुत कर सकते है नियत पेशी दिनांक तक कोई आपत्ति/ जवाब प्राप्त न होने पर प्रकरण में एकपक्षीय कार्यवाही की जावेगी।

यदि किसी कारणवश पेशी दिनांक 13.10.2023 को इस न्यायलय में अवकाश घोषित हो जाता है या सार्वजनिक अवकाश घोषित हो जाता है अथवा पीठासीन अधिकारी अवकाश में रहता है तो उसके अगले कार्य दिवस को अग्रिम कार्यवाही की जावेगी।

आज दिनांक 12/09/23 को मेरे हस्ताक्षर तथा न्यायालय की मुहर लगाकर जारी किया गया।

सील
(मनीषा ठाकुर)
द्वितीय व्यवहार न्यायाधीश वर्ग–01
बिलासपुर (छ.ग.)

देश

उवाच “विभिन्न प्रकार के अपराध गोपनीयता को प्रभावित कर रहे हैं। आतंकवादी एक राज्य में राष्ट्र विरोधी गतिविधियों को अंजाम देंगे और दूसरे राज्यों में छिप जाएंगे। इन सभी तत्वों को समाप्त किया जाना चाहिए।

-सिद्धारमैया, कर्नाटक के मुख्यमंत्री

तापमान	अधिकतम	न्यूनतम
दिल्ली	33.0	25.0
मुंबई	29.0	27.0
कोलकाता	31.0	27.0
चेन्नई	28.0	27.0

संपूर्ण विश्व की समृद्धि व कल्याण के लिए कार्य कर रहा भारत : ओम बिरला

नई दिल्ली, 16 सितम्बर (देशबन्धु)। लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला ने नई दिल्ली में निर्यात में उत्कृष्टता के लिए भारत सरकार के वाणिज्य और उद्योग मंत्रालय द्वारा प्रायोजित पुरस्कार वितरण समारोह में विशिष्ट सभा को संबोधित करते हुए कहा कि वैश्विक निर्यात क्षेत्र में भारत की उपलब्धियों में उनका बहुत बड़ा योगदान रहा है।

लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला ने कहा कि आज का भारत सर्वसम्मति के आधार पर दुनिया के सामने आने वाली विभिन्न वर्तमान और भावी चुनौतियों का समाधान प्रदान करने की दिशा में काम कर रहा है और यह इसीलिए संभव हुआ है क्योंकि भारत केवल अपनी समृद्धि और कल्याण ही नहीं बल्कि संपूर्ण विश्व की समृद्धि और कल्याण के लिए कार्य कर रहा है। ओम बिरला ने भारत में हाल ही में हुए जी-20 के शिखर संम्मेलन को सफल बताते हुए दावा किया कि जी-20 के दौरान, भारत का प्रयास वसुधैव कुटुंबकम के मूल्यों के आधार पर पूरी दुनिया को एकजुट करना था और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में भारत दुनिया के सामने आने वाली हर बड़ी चुनौती का समाधान प्रदान कर रहा है।

दुनिया भर में भारतीय ब्रांड व विनिर्माण हुआ मजबूत

ओम बिरला ने कहा कि उनके द्वारा किए जा रहे प्रयासों से आर्थिक विकास हुआ है और दुनिया भर में भारतीय ब्रांड और विनिर्माण मजबूत हुआ है। विश्व में भारत द्वारा किए जा रहे निर्यात

जी-20 के दौरान भारत का प्रयास वसुधैव कुटुंबकम के मूल्यों के आधार पर पूरी दुनिया को एकजुट करना था : ओम बिरला

के संदर्भ में बिरला ने कहा कि वर्तमान समय में दुनिया भर के अधिकांश देश विभिन्न क्षेत्रों में नए नवाचार और अनुसंधान के आधार पर व्यवसाय बढ़ाने के प्रयास कर रहे हैं। उन्होंने सुझाव दिया कि ऐसे समय में भारत को यह सुनिश्चित करने के लिए सभी संभव प्रयास करने चाहिए कि देश प्रौद्योगिकी, अनुसंधान और नवाचार में अग्रणी बना रहे।

प्रधानमंत्री मोदी के दूरदर्शी नेतृत्व का उल्लेख करते हुए बिरला ने कहा कि प्रधानमंत्री के कुशल नेतृत्व में भारत ने हर क्षेत्र में विकास किया है। भारत में तीव्र गति से हो रहे औद्योगिक और तकनीकी विकास का उल्लेख करते हुए बिरला ने कहा कि कृषि से लेकर अंतरिक्ष और रक्षा तक, ऐसा कोई क्षेत्र नहीं है जिसमें भारत ने प्रगति नहीं की है। आर्थिक विकास में विश्व स्तरीय बुनियादी ढांचे और लॉजिस्टिक्स के महत्व का उल्लेख करते हुए लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला ने इन सभी पहलों का श्रेय प्रधानमंत्री के दूरदर्शी नेतृत्व को दिया, जिससे लॉजिस्टिक्स लागत को कम करने में मदद मिली है। उन्होंने कहा कि ऐसे प्रयासों के फलस्वरूप आज दुनिया की बड़ी-बड़ी कंपनियां विनिर्माण के लिए भारत की ओर देख रही हैं।

इससे एमएसएमई क्षेत्र में निरंतर विकास हो रहा है और रोजगार सृजन हो रहा है, जिससे समाज के गरीब और वंचित वर्गों के युवाओं को लाभ हो रहा है।

हमारे लोग व हमारी विविधता हमारी ताकत : लोस अध्यक्ष

लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला ने कहा कि आर्थिक वृद्धि करने के साथ ही भारत दुनिया का सबसे बड़ा लोकतंत्र है और हमारे लोग और हमारी विविधता हमारी ताकत है। बिरला ने यह भी कहा कि यह सच है कि कुछ विकसित देश प्रौद्योगिकी और नवाचार के मामले में भारत से आगे हो सकते हैं, परंतु भविष्य में भारत अपने कुशल मानव संसाधनों और अत्याधुनिक प्रौद्योगिकी के आधार पर दुनिया का मार्गदर्शन करेगा। निरंतर हो रहे आर्थिक विकास के कारण लोगों की बढ़ती क्रय शक्ति की बात करते हुए बिरला ने इस बात की सराहना की कि आज भारत दुनिया के सबसे बड़े बाजारों में से एक है। उन्होंने कहा कि भारत न केवल अपनी घरेलू जरूरतों को पूरा कर रहा है बल्कि साथ ही दुनिया के विकसित देशों को विभिन्न प्रकार की वस्तुओं और सेवाओं का निर्यात भी कर रहा है।

तमिलनाडु में निपाह वायरस का कोई संक्रमण नहीं : सुब्रमण्यम

चेन्नई, 16 सितम्बर (एजेंसियां)। तमिलनाडु के स्वास्थ्य मंत्री सुब्रमण्यम ने शनिवार को कहा कि राज्य में निपाह वायरस का कोई संक्रमण नहीं पाया गया है। सुब्रमण्यम ने पत्रकारों को बताया कि केरल के उन सभी सीमावर्ती जिलों में निगरानी बढ़ा दी गई है, जहां निपाह वायरस की सूचना मिली थी। उन्होंने कहा कि केरल से आने वाले सभी लोगों का मेडिकल टीमों द्वारा गहन परीक्षण किया गया। किसी भी व्यक्ति में कोई संक्रमण नहीं पाया गया। बाद में उन्हें राज्य में प्रवेश की अनुमति दी गई। तमिल एनएसयू में डेंगू के मामलों में अचानक वृद्धि के बारे में, सुब्रमण्यम ने कहा कि अब तक 4,048 लोग डेंगू से संक्रमित हो चुके हैं और जनवरी से अब तक तमिलनाडु में तीन मौतें हुई हैं। उन्होंने कहा कि बरसात के मौसम में डेंगू और मलेरिया बुखार का फैलना सामान्य है। उन्होंने लोगों से अगले तीन महीनों तक सावधानी बरतने का आग्रह किया। सरकार डेंगू के प्रसार को रोकने और स्वास्थ्य के लिए सभी जरुरी कदम उठा रही है। इस बीच, स्वास्थ्य विशेषज्ञों ने कहा कि तीन दिनों तक बुखार रहने पर तुरंत डॉक्टर से परामर्श लेना चाहिए और उचित इलाज कराना चाहिए। जैसे-जैसे डेंगू के मामले बढ़ रहे हैं, स्वास्थ्य विभाग राज्य भर के सभी सरकारी अस्पतालों में विशेष डेंगू वार्ड भी स्थापित कर रहा है। चेन्नई में राजीव गांधी सरकारी अस्पताल में 40 बिस्तरों वाला एक वार्ड तैयार किया गया है, जिसमें पुरुषों और महिलाओं के लिए 20-20 बिस्तरों वाला वार्ड शामिल है। अस्पताल के डीन ई. थेरानीराजन ने कहा कि गहन चिकित्सा इकाई के लिए अन्य 10 बिस्तर भी अलग से रखे गए हैं।

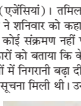

जम्मू-कश्मीर से भागकर पाकिस्तान में छिपे आतंकी कमांडरों पर बड़ी कार्रवाई

जम्मू, 16 सितम्बर (देशबन्धु)। जम्मू के किश्तवाड़ जिले में पुलिस ने आतंकियों के खिलाफ बड़ी कार्रवाई की है। पुलिस के विशेष जांच दल ने 13 आतंकी कमांडरों की संपत्तियां कुर्क की हैं। यह आतंकवादी जम्मू कश्मीर से भागकर पाकिस्तान या पीओजेके में छिप हुए हैं और वहां से अपने नापाक मंसूबों को अंजाम दे रहे हैं। पुलिस ने आतंकियों की संपत्तियों के बाहर नोटिस चिपका दिया है, जिसमें संपत्ति कुर्क करने के बारे में जानकारी लिखी गई है। राज्य जांच एजेंसी ने जम्मू संभाग के रियासी जिले के ऊपरी इलाकों में छापा मारा है। पुलिस ने शनिवार को इसे लेकर जानकारी साझा की है।

■ जम्मू के किश्तवाड़ में 13 दहशतगर्दों की संपत्ति कुर्क

पुलिस ने बताया कि यह तलाशी अभियान जम्मू-कश्मीर पुलिस की आतंकवाद निरोधक शाखा एसआईए द्वारा पौनी और माहौर तहसीलों में खुफिया रिपोर्टों के आधार पर की गई। इसमें कहा गया है कि कुछ ओवर-ग्राउंड वर्कर (ओजीडब्ल्यू) राष्ट्र-विरोधी तत्वों को रसद सहायता और जानकारी प्रदान कर रहे थे। उन्होंने बताया कि तलाशी के दौरान कुछ इलेक्ट्रॉनिक गैजेट और कई

दस्तावेज जब्त किए गए हैं। चार सितम्बर को रियासी जिले के चसाना इलाके में सुरक्षाबलों के साथ मुठभेड़ में एक आतंकवादी मारा गया, जबकि एक अन्य आतंकवादी भागने में सफल रहा। अधिकारी ने कहा कि कुछ ओजीडब्ल्यू हैं जो सीमा गाइड के रूप में काम कर रहे हैं और अपने पाकिस्तान स्थित आकाओं के संपर्क में रहने के लिए विभिन्न मोबाइल ऐप का उपयोग कर रहे हैं।

वह आतंकवादियों को रसद सहायता प्रदान कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि आतंकवादी रियासी के अंदरूनी इलाकों में अपनी गतिविधियां फिर से शुरू करने की कोशिश में जुटे हुए हैं, जिन्हें सफल नहीं होने दिया जाएगा। एसआईए पहले से ही पिछले साल गिरफ्तार किए गए दो आतंकवादियों के खिलाफ गैरकानूनी गतिविधि (रोकथाम) अधिनियम के तहत दर्ज मामले की जांच कर रही है।

राजोरी व पुंछ में इस साल 25 से अधिक आतंकी ढेर

रियासी को एक दशक से भी अधिक समय पहले आतंकवाद से मुक्त कर दिया गया था, लेकिन कथित तौर पर पिछले कुछ समय से ऊपरी इलाकों में आतंकवादियों की आवाजाही देखी जा रही है। इस साल राजोरी और पुंछ जिले में नियंत्रण रेखा और भीतरी इलाकों में अलग-अलग मुठभेड़ों में 25 से अधिक आतंकवादी मारे गए हैं।

सार संक्षेप

मोदी ने प्रकाश पर्व पर दीं शुभकामनाएं

नई दिल्ली। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी के प्रकाश पर्व के अवसर पर लोगों को अपनी शुभकामनाएं दीं। प्रधानमंत्री ने अंग्रेजी और पंजाबी, दोनों भाषाओं में अलग-अलग एक्स पर पोस्ट कर श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी के प्रकाश पर्व के अवसर पर शुभकामनाएं देते हुए कहा कि श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी शाश्वत ज्ञान और असीम करुणा के प्रतीक के रूप में खड़े हैं।

ऑनलाइन धोखाधड़ी में व्यक्ति ने गवाए 80 हजार

नासिक। महाराष्ट्र के नासिक शहर पुलिस ने शुक्रवार को ऑनलाइन धोखाधड़ी के एक मामले में कोठेगल्ली क्षेत्र के एक निवासी के बैंक खाते से 80 हजार रुपए निकालने के आरोप में एक अज्ञात व्यक्ति के खिलाफ धोखाधड़ी की शिकायत दर्ज की है। पुलिस के मुताबिक, शिकायतकर्ता सतीश एकलहरे को एक अज्ञात मोबाइल नंबर से कॉल आया और उनसे पूछा गया कि क्या उन्होंने बिल का भुगतान कर दिया है। संदिग्ध ने खुद को बिजली वितरण निगम का कर्मचारी बताते हुए उसे एक लिंक भेज। जैसे ही एकलाहरे ने लिंक खोला और उसमें सारी जानकारी भरने के बाद उसके बैंक खाते से 80 हजार रुपए की रकम ऑनलाइन निकाल ली गई।

उप्र के मथुरा में सड़क हादसे में चार की मौत

मथुरा। उत्तर प्रदेश में मथुरा के जैत क्षेत्र मे शनिवार को एक सड़क हादसे में कार और ट्रक की भिड़ंत में चार लोगों की मौत हो गयी जबकि दो अन्य गंभीर रूप से घायल हो गए। देर रात एक बजे मथुरा-दिल्ली राष्ट्रीय राजमार्ग संख्या दो पर जैत गांव के पास यह हादसा उस समय हुआ जब अलीगढ़ से पांच लोग एक कार पर सवार होकर शनिदेव मन्दिर कोकिलावन जो रहे थे कि जैत गांव के सामने उनकी कार अनियंत्रित हो गई। कार ने पहले एक ट्रक चालक को रौंद दिया और फिर सड़क के किनारे खड़े ट्रक में पीछे से घुस गई।

बीरेन ने की स्वच्छता अभियान की शुरुआत

इंफाल। मणिपुर के मुख्यमंत्री एन.बीरेन सिंह ने शनिवार को कचरा मुक्त भारत विषय पर ‘स्वच्छता ही सेवा’अभियान की शुरुआत की। सिंह ने कहा कि हम एक कठिन दौर से गुजर रहे हैं। नागरिक समाज और अन्य लोगों के समर्थन और सहयोग के साथ हम समुदायों के बीच समझ लाने तथा शांति स्थापित करने की दिशा में आगे बढ़ रहे हैं। यह कहते हुए कि जल्द से जल्द समाधान खोजने और शांति लाने की कोशिस जारी हैं, मुख्यमंत्री ने लोगों से और ज्यादा समर्थन और भगवान से आशीर्वाद मांगा।

तेदेपा संसद सत्र में चंद्रबाबू की गिरफ्तारी का मुद्दा उठाएगी

नई दिल्ली, 16 सितम्बर (एजेंसियां)। तेलुगू देशम पार्टी (तेदेपा) ने अपने राष्ट्रीय अध्यक्ष और आंध्र प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री एन.चंद्रबाबू नायडू की गिरफ्तारी का मुद्दा 18 सितम्बर से शुरू होने वाले विशेष सत्र के दौरान संसद में उठाने का फैसला किया है। यह निर्णय शनिवार को राष्ट्रीय राजधानी में आयोजित तेदेपा संसदीय दल की बैठक में लिया गया। बैठक की अध्यक्षता राष्ट्रीय महासचिव नारा लोकेश ने की। नारा लोकेश चंद्रबाबू नायडू के बेटे हैं। 1995 में नायडू के तेदेपा अध्यक्ष बनने के बाद यह पहली बार है कि संसदीय दल की बैठक की अध्यक्षता वह नहीं कर पाए। बैठक में विशेष सत्र में पार्टी द्वारा अपनाई जाने वाली रणनीति पर चर्चा की गई। चंद्रबाबू नायडू की गिरफ्तारी और न्यायिक रिमांड की पृष्ठभूमि में इसका महत्व बढ़ गया है। नायडू की गिरफ्तारी और आंध्र प्रदेश के मौजूदा हालात का मुद्दा लोकसभा और राज्यसभा दोनों में उठाने का फैसला किया गया। तेदेपा सुप्रीमो को पिछले हफ्ते आंध्र प्रदेश सीआईडी ने करोड़ों रुपये के कौशल विकास निगम घोटाले में गिरफ्तार किया था। विजयवाड़ा की एक अदालत ने उन्हें 14 दिनों की न्यायिक हिरासत में भेज दिया। नायडू फिलहाल राजमुंदरी सेंट्रल जेल में बंद हैं। उनकी अवैध गिरफ्तारी की निंदा करते हुए तेदेपा कार्यकर्ता पिछले छह दिनों से पूरे आंध्र प्रदेश में विरोध प्रदर्शन कर रहे हैं।

बुनियादी मुद्दों से ध्यान भटकाने का प्रयास कर रही भाजपा

भोपाल, 16 सितम्बर (एजेंसियां)। कांग्रेस के महासचिव एवं मध्य प्रदेश के प्रभारी रणदीप सिंह सुरजेवाला ने आरोप लगाते हुए कहा कि भारतीय जनता पार्टी और उसके नेता सनातन धर्म के मामले को लेकर लोगों का मूल मुद्दों से ध्यान भटकाने का प्रयास कर रहे हैं। सुरजेवाला ने यहां प्रदेश कांग्रेस की ओर से आगामी विधानसभा चुनाव के मद्देनजर 19 सितम्बर से निकाली जाने वालीं जन आक्रोश यात्रा के संबंध में आयोजित पत्रकार वार्ता के दौरान यह बात कही। इस अवसर पर प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष कमलनाथ और प्रदेश कांग्रेस के मीडिया विभाग के प्रभारी के के मिश्रा भी मौजूद थे।

■ भाजपा पर लगाया धर्म के नाम पर राजनीति करने का आरोप

इंडिया गठबंधन के कुछ सहयोगी दलों के नेताओं द्वारा सनातन धर्म को लेकर दिए गए विवादास्पद बयानों के संबंध में पूछे जाने पर सुरजेवाला ने कहा कि सनातन धर्म हमेशा से है, था और रहेगा। लेकिन भाजपा के नेता इस मामले को लेकर जनता से जुड़े वास्तविक मुद्दों से ध्यान हटाने का प्रयास कर रहे हैं। कांग्रेस महासचिव ने कहा कि राज्य में भ्रष्टाचार के मुद्दे को लेकर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और अन्य नेता क्यों नहीं बोलते हैं। इसके अलावा महंगाई, रोजगार भी मुद्दे हैं। इस बारे में भाजपा नेता क्यों नहीं बोलते।

महंगाई, भ्रष्टाचार व रोजगार के बारे में क्यों नहीं बोलते मोदी व अन्य भाजपा नेता : रणदीप सुरजेवाला

सुरजेवाला और कमलनाथ ने कहा कि मध्यप्रदेश में व्यापमं घोटाला हुआ। पटवारी परीक्षा के पेपर बिके और भी घोटाले हैं। भ्रष्टाचार भी है। इन सबके बारे में मोदी और अन्य भाजपा नेता क्यों नहीं बोलते।

सुरजेवाला ने कांग्रेस का 500 रुपए में गैस सिलेंडर देने, 100 यूनिट तक बिजली बिल माफ करने, 200 यूनिट तक हाफ करने, बेटियों को 1500 रुपए प्रति माह देने समेत पार्टी के अन्य वादे एक बार फिर दोहराए। कांग्रेस नेता ने कहा कि जनाक्रोश यात्रा में प्रदेश की जनता कुल 11 हजार 400 किमी की दूरी तय करेगी, जिसे पूरा करने के लिए पार्टी के सात नेता नेतृत्व करेंगे। इनमें नेता प्रतिपक्ष गोविंद सिंह 1600 किमी, पूर्व केंद्रीय मंत्री अरुण यादव 1700 किमी, पूर्व मंत्री कमलेश्वर पटेल 1900 किमी, पूर्व नेता प्रतिपक्ष अजय सिंह राहुल 1400 किमी, पूर्व केंद्रीय मंत्री सुरेश पचौरी 1400 किमी, कांतिलाल भूरिया 1700 किमी और पूर्व मंत्री जीतू पटवारी 1700 किमी का सफर तय करेंगे। एक सवाल के जवाब में सुरजेवाला ने कहा कि प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष विधानसभा चुनाव किस क्षेत्र से लड़ेंगे या कब लड़ेंगे, इस बारे में फैसला केंद्रीय नेतृत्व करेगा।

भाजपा राज के खिलाफ जनता में है आक्रोश : कमलनाथ

मप्र प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष कमलनाथ ने कहा कि 18 सालों की प्रदेश की बदहाली और बर्बादी का जनता में भाजपा राज के खिलाफ जो असंतोष था, वो अब जनाक्रोश में तब्दील हो गया है। एक तरफ जहां भाजपा राज के ख़िलाफ़ जनता में आक्रोश है तो दूसरी ओर कांग्रेस व कमलनाथ के प्रति जनता में जोश दिखाई दे रहा है। जनता की इसी आवाज को सुनकर कांग्रेस जनाक्रोश यात्रा का आगाज कर रही है। उन्होंने प्रदेश सरकार पर कई प्रकार के घोटाले करने का भी आरोप लगाया।

दक्षिणी तेलंगाना के परिवर्तन में एक नए युग की हुई शुरुआत

हैदराबाद, 16 सितम्बर (देशबन्धु)। मुख्यमंत्री के चंद्रशेखर राव ने शनिवार को पलामुरु रंगारेड्डी लिफ्ट सिंचाई योजना का उद्घाटन किया। पानी की भारी कमी वाले इस क्षेत्र के लोगों के लंबे समय से अधूरे सपने को पूरा करते हुए, उन्होंने उच्च शक्ति वाली 145-मेगावाट पंपिंग प्रणालियों में से एक को चालू किया, जो दुनिया में इस्तेमाल होने वाली अपनी तरह की पहली प्रणाली है। इसके साथ ही मुख्यमंत्री केसीआर ने इस महत्वपूर्ण परियोजना का उद्घाटन किया। इस योजना से दक्षिणी तेलंगाना के परिवर्तन में एक नए चरण की शुरुआत हुई है। इस परियोजना के लिए श्रीशैलम परियोजना के अपतटीय बिंदु से 3,200 क्यूसेक से अधिक पानी खींचा गया और विशाल सुरंग प्रणाली और सर्ज पूल के माध्यम से प्रवाहित किया गया, जिसे 35,000 करोड़ रुपए की परियोजना के चरण-1 के हिस्से के रूप में निर्मित अंजनागिरी जलाशय में डाला गया। मुख्यमंत्री के चंद्रशेखर राव वाहनों के एक बड़े काफिले में नरलापुर पहुंचे। मुख्यमंत्री ने कार्यक्रम स्थल पर एक विशेष पूजा की और ऐतिहासिक क्षण को चिह्नित करते हुए तोरण का अनावरण किया। उनके कई कैबिनेट सहयोगियों, लाभार्थी गांवों के ग्राम पंचायत सरपंचों सहित निर्वाचित प्रतिनिधियों ने उनका जोरदार स्वागत किया। परियोजना अधिकारियों ने उन्हें परियोजना के चार अन्य चरणों में पंप हाउस और सर्ज पूल पर काम की स्थिति से अवगत कराया। उन्होंने कार्यक्रम स्थल पर एक पौधा लगाया, जो पलामुरू के लिए हरित क्रांति का संकेत है। परियोजना स्थल पर भारी संख्या में जुटी भीड़ इसके उद्घाटन के बाद भारी जश्न में डूब गई। पलामूरू के लिए मुख्यमंत्री के चंद्रशेखर राव द्वारा प्रदर्शित प्रतिबद्धता के लिए नारे गूंजते रहे। यह क्षण कभी अविभाजित तेलंगाना राज्य में पानी की भारी कमी और आजीविका की तलाश में लाखों लोगों के पलायन का गवाह था।

■ केसीआर ने पलामुरु रंगारेड्डी लिफ्ट सिंचाई योजना का किया उद्घाटन

एक राष्ट्र एक चुनाव संविधान पर हमला : चिदंबरम

हैदराबाद, 16 सितम्बर (एजेंसियां)। कांग्रेस ने एक चुनाव एक राष्ट्र के विचार को संघवाद के विरुद्ध बताते हुए शनिवार को कहा कि इसके लिए संविधान में कई संशोधन करने पड़ेंगे इसलिए यह मोदी सरकार का सिर्फ मुद्दों से ध्यान भटकाने का एक प्रयास है। कांग्रेस नेता पी.चिदंबरम ने तेलंगाना की राजधानी हैदराबाद में पार्टी की सर्वोच्च नीति निर्धारित संस्था कांग्रेस कार्य समिति की बैठक के दौरान पत्रकारों से कहा कि मोदी सरकार की यह अवधारणा देश के संघवाद पर हमला है कांग्रेस इस स्पीकर नहीं करेगी। कांग्रेस नेता पी.चिदंबरम ने कहा, एक राष्ट्र, एक चुनाव संविधान पर हमला है। हम इसे खारिज करते हैं। यह संघवाद पर हमला है।

इसके लिए कम से कम पांच संवैधानिक संशोधनों की आवश्यकता होगी। भाजपा जानती है कि इन संवैधानिक संशोधनों को पारित करने के लिए उसके पास संख्या बल नहीं है फिर भी अगर यह एक राष्ट्र, एक चुनाव की मृगतृष्णा को आगे बढ़ा रही है तो यह महत्वपूर्ण मुद्दों से ध्यान भटकाने की झूठी कहानी बनाना जैसा है।

लालू व नीतीश का गठबंधन पानी और तेल की तरह : अमित शाह

मधुबनी, 16 सितम्बर (एजेंसियां)। भाजपा के वरिष्ठ नेता और देश के गृह मंत्री अमित शाह ने शनिवार को लालू प्रसाद और मुख्यमंत्री नीतीश कुमार सहित कांग्रेस पर विभिन्न मुद्दों को लेकर जमकर निशाना साधा। उन्होंने लालू और नीतीश के गठबंधन को पानी और तेल जैसा बताते हुए कहा कि तेल पानी को भी गंदा कर देता है। मधुबनी के झंझारपुर में एक रैली को संबोधित करते हुए शाह ने इस गठबंधन को स्वार्थी गठबंधन बताते हुए कहा कि एक को अपने बेटे को मुख्यमंत्री बनाना है तो नीतीश कुमार को प्रधानमंत्री बनना है। उन्होंने हालांकि यह भी कहा कि अभी प्रधानमंत्री की कुर्सी खाली नहीं है। पिछले दिनों स्कूलों में रक्षाबंधन और जन्माष्टमी की छुट्टी रद्द कर देने को लेकर भी कहा कि लोगों के आक्रोश के कारण उन्हें वापस लेना पड़ा। उन्होंने लोगों को सावधान करते हुए कहा कि मोदी को

■ झंझारपुर में आयोजित रैली को किया संबोधित

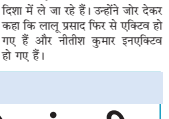

फिर से प्रधानमंत्री नहीं बनाया तो पूरा सीमांत क्षेत्र घुसपैठ से भर जाएगा। यह वोट बैंक की राजनीति करने के लिए लालू कुछ भी करने के लिए तैयार हैं।

भाजपा के नेता शाह ने कहा कि लालू और नीतीश की सरकार में हर रोज अपराध बढ़ रहे हैं। यह स्वार्थी गठबंधन बिहार को फिर से जंगलराज की दिशा में ले जा रहे हैं। उन्होंने जोर देकर कहा कि लालू प्रसाद फिर से एक्टिव हो गए हैं और नीतीश कुमार इनएक्टिव हो गए हैं।

कवायद *देशभर में सौ नए सैनिक स्कूल स्थापित करने की योजना के तहत सरकार का बड़ा कदम*

साझेदारी मोड के तहत 23 नए सैनिक स्कूलों को मंजूरी

नई दिल्ली, 16 सितम्बर (एजेंसियां) देश के हर कोने तक सैनिक स्कूलों की सुविधा उपलब्ध कराने की योजना के तहत सरकार ने 23 नए सैनिक स्कूलों को मंजूरी दे दी है। छठी कक्षा से शुरु होने वाले ये सैनिक स्कूल गैर-सरकारी संगठनों, निजी स्कूलों और राज्य सरकारों के साथ साझेदारी क्रमबद्ध तरीके से खोले जाएंगे। इन स्कूलों को सौ नए सैनिक स्कूल स्थापित करने की सरकार की पहल के तहत मंजूरी दी गई है। इस पहल के तहत सैनिक स्कूल सोसायटी द्वारा नए सैनिक स्कूलों के साथ समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए गए हैं।

रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने विभिन्न आवेदनों के मूल्यांकन के बाद 23 नए स्कूलों को खोलने की मंजूरी दी है। इस पहल से सैनिक स्कूल सोसाइटी के तत्वावधान में साझेदारी मोड के तहत खुलने वाले नए सैनिक स्कूलों की संख्या बढ़कर 42 हो गई है, इसके अलावा मौजूदा 33 सैनिक स्कूल पहले से ही पूर्ववर्ती पैटर्न के तहत काम कर रहे हैं। नए सैनिक स्कूलों की स्थापना का उद्देश्य छात्रों को राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अनुरूप गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करना और उन्हें सशस्त्र बलों में शामिल होने सहित बेहतर कैरियर के अवसर प्रदान करना है। यह निजी क्षेत्र को, युवाओं को कल का जिम्मेदार नागरिक बनाकर राष्ट्र निर्माण की दिशा में सरकार के साथ मिलकर काम करने का अवसर भी देता है। नए 23 सैनिक स्कूलों की प्रदेशवार सूची सैनिक स्कूल की वेबसाइट पर देखी जा सकती है। नए सैनिक स्कूल, संबंधित शिक्षा बोर्डों से संबद्धता के अलावा, सैनिक स्कूल सोसायटी के तत्वावधान में कार्य करेंगे और सोसायटी द्वारा निर्धारित साझेदारी मोड में नए सैनिक स्कूलों के लिए नियमों और विनियमों का पालन करेंगे।

■ छात्रों को सशस्त्र बलों में शामिल होने सहित बेहतर कॅरियर के अवसर प्रदान करना उद्देश्य

वे अपने नियमित संबद्ध बोर्ड पाठ्यक्रम के अलावा सैनिक स्कूल पैटर्न के छात्रों को अकादमिक प्लस पाठ्यक्रम की शिक्षा भी प्रदान करेंगे। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के 100 नए सैनिक स्कूल स्थापित करने के दृष्टिकोण के पीछे का उद्देश्य छात्रों को राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अनुरूप गुणवत्तापूर्ण शिक्षा और सशस्त्र बलों में शामिल होने सहित बेहतर कॅरियर के अवसर प्रदान करना है। यह निजी क्षेत्र को आज के युवाओं को भविष्य के जिम्मेदार नागरिक बनने के लिए प्रशिक्षित करके राष्ट्र निर्माण की दिशा में सरकार के साथ मिलकर काम करने का अवसर भी प्रदान करता है। साझेदारी मोड के तहत देश के 11 राज्यों में 23 नए सैनिक स्कूल खोले जाएंगे। इनमें से उत्तर प्रदेश में मथुरा, लखनऊ, इटावा, हरियाणा में कुरुक्षेत्र, हिमाचल प्रदेश में हमीरपुर में स्कूल खुलेंगे।

इसके अलावा आंध्र प्रदेश में एक, बिहार में एक, छत्तीसगढ़ में चार, कर्नाटक में एक, केरल में दो, मध्य प्रदेश में तीन, महाराष्ट्र में दो, राजस्थान में चार जिलों में स्कूल खुलेंगे।

हाना

दाई मरे धिया बर धिया मरे पिया बर।
मां-बेटी बर चिंतित रहिथे अउ बेटी ह अपन पति बर चिंतित रहिथे।कोनो मनखे ह कोनो बर बहुते काम करथे बदला म ओ मनखे ह अउ कोनो बर धियान देथे तब ये हाना ल केहे जाथे।

शब्द अरथ

1. चूरा- हाथ के कड़ा, चूड़ा
2. चूरी- हाथ के चूड़ी, कंगन
3. चुरुआ- एक हाथ की अंजलि,चुरुवा
4. चुरुक- खट्टा, थोड़ा सा
5. चुरुमुरु- हाथ-पैर को सिकोड़ने की क्रिया
6. चुर्रुकहा- अत्यधिक खट्टा
7. चुरई- पका हुआ
8. चुरैना- सोडा, राख-मिट्टी को गरम पानी में घोल डुबाया हुआ कपड़ा
9. चुरोना- पकाना
10. चुरोल- पकाया हुआ।

छत्तीसगढ़ के तीजा के रौनक

छत्तीसगढ़ म तीजा म सियान नारी घलो मायके आथे। पौराणिक कथा के अनुसार दण्डकारण्य म पार्वती ह शिव जी ल पाये बर तपस्या करे रहिस हे। आदिवासी समुदाय म ये कहिनी के रुप म मिलथे। उंहा तीजा जगार चलथे। येला चार महिला मन रातभर गाथें।

ये तिहार भासो मास के शुक्ल पक्ष के तृतीया के दिन मनाये जाथे। येला छत्तीसगढ़ के सरगुजा क्षेत्र ले ले के बस्तर तक मनाये जाथे। पोला तिहार ले येखर तैयारी शुरु हो जथे। विवाहित बेटी बहिनी मन ल भाई ह लेय बन जाथे। येमन मायके आथें अउ करु भात खा के तीजा उपास रहिथें। छत्तीसगढ़ के बस्तर अंचल में भी ये तिहार ल मनाये जाथे।

तीजा तिहार म शंकर-पार्वती के पूजा करे जाथे। इस उपास ल कुंवारी कन्या मन घलो मनवांछित वर के कामना, अउ विवाहित नारी मन अपन सुहाग के रक्षा बर करथें। निसंतान नारी ह संतान प्राप्ति बर भी करथे। तीज के दिन उपास करे के नियम हावय।

बिहनिया सबले पहिली सब नारी मन मिलके बाजा-गाजि, मोहरी वादक मन संग नदी जाथें। नदी के किनारे के रेत ल साफ धो के सात मुट्ठी एक परात म रखथें। कुछ महिला मन गीत भी गाथें। गीत के सार होथे के पार्वती मैया तोर सरिख हमन घलो ये उपास ल करे हावन। हमन ल आशीर्वाद देवव के हमन ये उपास ल पूरा कर सकन। आप मन. हमर सुहाग के रक्षा करहु अउ सबो नारी मन ल सौभाग्यवती रखना।

तीजा उपास बस्तर के सबो आदिवासी मन नइ मनावयं, फेर बस्तर मअन्य जतका भी जाती हावंय जइसे कोष्टा, पनारा, धाकड़, ठाकुर, ब्राह्मण, बैरागी, गाड़ा-घसिया, सतनामी, कलार, राजपूत, मन ये तिहार ल बहुत उत्साह ले मनाथे। हलबा, भतरा जनजाति म ये.प्रचलित हे। पहले भतरा जनजाति येला नइ मनावत रहिस हे फेर बाद म मनाये ले लगगे।

ओ परात के रेती के दू भाग करथें। अउ शिव पार्वती बनाथें। उही जगह ह फूल, चावल, धूप, दीप, कलश अउ फल ले पूजा करथें। कोनों भी नारी जेखर नवा नवा बिहाव होय हे तेन ,कुंवारी जेन उपाह रखे हावय या फेर जेखर भी पहिला तीज उपास हे या निस्संतान नारी ह अपन सिर म रेत के गौरा ल उठाथे अउ जलत कलश ल दूसर कोनों भी नारी बोह के पूजा करे के जगह म लानथें।

पूजा स्थान म बांस की कमचिल ल चौकोर बांधके एक नवा कपड़े ल या साड़ी ल ढक के फुलेरा बनाथे।, ओखर नीचे चावल, आटा, हल्दी ले चौक पूरके पीढ़ा रखथें। पीढ़ा ऊपर बालीगौरा रखे परात ल रख देथें। येखर सामने म दिया जलत कलश ल रखथें। भोग परसाद बनाथें।बस्तर डाहर कोनो कोनो जगह म अमुस तिहार या हरेली के बाद ले तीजा जगार शुरु हो जथे या फेर जेन मन मन्नत रखथे तेन मन रखथें। तीजा जगार म धनकुल वाद्य यंत्र के उपयोग होथे ये कारण येला धनकुल कहिथें।

शाम की दीया-बाती के बाद सब अपन-अपन घर के काम बुता ल निपटा के फुलेरा की जगह म पहुंचथें। इहाँ रामायण पाठ, भजन-कीर्तन करथें। जगार रखे जाथे तब जगार.गाथें।

पहिली गौरी गणेश के पूजा करथें ओखर बाद शंकर पार्वती के विशेष करे जाथे। भगवान शंकर में कनेर फूल, बेलपत्र चढ़ाथें अउ माता पार्वती म मदार के फूल अउ दूसर फूल के संग श्रृंगार के सामान चढ़ाथें। रात भर जागके अखंड ज्योत के रक्षा करथें।आरती करे के बाद सब फेर भजन-कीर्तन करथें।

दूसर दिन बिहनिया पूजा करे के बाद आरती करथें अउ सब पानफूल ल परात म रख के सिर ऊपर रखके विसर्जन करे बर.जाथें। जाये के बेरा म संग म मोहरी अउ बाजा बाजत रहिथें।

विसर्जन के बेरा म तरिया किनारे परात ल रख के फेर एक बेर पूजा करथें। लगातार गाना गावत रहिथें। जल म दीया ल छोड़ देथें। परात के रेत ल सात बार घूमावत ,गाना गावत जल में प्रवाहित कर देथें। घर वापस आके अपन उपास ल.खोलथें। फलाहार करथें। तीजा तिहार.छत्तीसगढ़ म करीब करीब सब जाती म अइसने मनाये जाथे फेर बस्तर.म तीजा जगार खास होथे।.भक्तिभाव ज्यादा रहिथे। सार्वजनिक मनाथे। फूलेरा रखथे।

आज बासी याने पहिली दिन के बनाये ठंडा खाना के जगह ताजा बने ले लगगे हावय। संस्कृति म बदलाब होवत हावय फेर गाँव आज भी वइसने हावय शहर बदल गे हावय।

सुधा वर्मा

माता बहिनी मन के निर्जला व्रत तीजा

हमर छत्तीसगढ़ के लोक-परब म सब ले बड़का अऊ सबले सुग्घर, दाई-दादा, भाई-बाहिनी के मया-पिरित के रंग मां रंगे तीजा के परब ला माने जाथे।जेकर अगोरा ल हमर दाई-बाहिनी मन ला बछर भर ले रहिथे। जइसे ही पोरा के परब हर लकठाथे। बहिनी मन अपन भाई के डहर ल देखना शुरू कर देथे। अउ जईसे ही भाई हा बाहिनी ला लेवा के ले जाथे।बहिनी अपन दुवारी मा जाके जिंनगी के सुख-दुख ला अपन हिरित-पिरीत, सखी-सहेली, अउ दाई-दादा करा गोठिया के धन्य हो जाथे। तीजा के पहिली दिन, दाई-बहिनी मन अपन जम्मो सगा-सोदर घर किंजर-किंजर के करू भात खाथें।दुसर दिन फेर उपवास रहिथे।आज के दिन माता बाहिनी मन सोला सिंगारी करके अपन पति के नाम निर्जला व्रत ला शुरू कर देथें। सम्मक घर-दुवारी, खोर-गली मा चहल-पहल दिखे लागथे।घरो-घर ,किसम - किसम के रोटी-पीठा, सोन-सोन महमहात रहिथे।संगे-संग दाई- बाहिनी मन के हंसी-ठिठोली,मया-पिरित के गोठ-बात,देखे म मन मोह लेथे। ए परब के दूसर दिन मही भात खाय अउ खवाय जाथे। जेकर बात अलग होथे। सुहागिन दाई-बाहिनी मन के कठिन उपवास के परब तीजा भादो मास के शुक्ल पक्ष म तीज के दिन होथे। एला हरितालिका परब भी कहे जाथे। ए परब म तीजा के दिन माता बहिनी मन निर्जला उपवास रहिथें। बिहनिया के बेरा म एला शुरू करथें अऊ फेर पहाती रात के झुलझूलहा बेरा मा भगवान भोले नाथ गौरी पार्वती के पूजा-अर्चना करके अपन उपवास ला पूरा करथें। ए तीज परब के संबंध म सुग्घर कथा आथे -

एक बार दक्ष प्रजापति के बेटी सती,शंकर भगवान के अर्धांगिनी रिहिसे। लेकिन राजा दक्ष हर भगवान शंकर के घोर अपमान अउ उपेक्षा कर दिस, एला देख के पार्वती हर क्षुब्ध हो के ओतकेच बेरा म यज्ञ कुंड म कूद के अपन प्राण ल त्याग दिस। फेर ऊही माता हर पर्वतराज हिमालय के घर म जनम लिस अउ ओहर पार्वती बनिस।

एकर एक ठन अउ प्रसंग आथे कि नारद मुनि के कहे म राजा हिमांचल पार्वती के बिहाव ला भगवान विष्णु करा, करवाय के इच्छा करिस। लेकिन पार्वती के मन ला देख के उकर सखी मन ओला हरण कर के कटकटात जंगल म एक ठन कंदरा म ले गिन। इहां पार्वती हर इही दिन माटी के शिवलिंग स्थापना करके भगवान ला पाए खातिर परण करिस। ओकर तपस्या ले भगवान शंकर प्रसन्न हो गिन,अऊ जेहर बिहाव नई करे के परण करईया,पार्वती के कठिन तपस्या ला देख के अपन अर्धांगिनी रूप म स्वीकार कर लिन। इही कारण से तीजा परब ल माता बहिनी मन कठिन निर्जला उपवास रखथें। अइसनहा उपवास रखे मा उमन ल सुग्घर चरित्रवान पति प्राप्त होथे। अऊ सुहागिन माता मन अपन पति के उमर ल लम्बा करे के वरदान पाथें।अउ दु, चार दिन रहिके फेर दाई-बाहिनी मन अपन जनम दुवारी ला छोड़ के अपन ससुरार विदा हो जाथें।

अईसन बेरा म दाई-दादा अपन मया ल अमर रखे खातिर सुंदर कपड़ा-लत्ता, साड़ी भेंट करथें।जेहर मईके के सबले बड़े भेंट माने जाथे।जेमा दाई-दादा के आशीष अऊ मया दुलार हर समाय रहिथे।

-अशोक पटेल 'आशु'
तुस्मा,शिवरीनारयण

तीजा के करुभात

तीजा-पोरा हा हमर छत्तीसगढ़ के माई लोगन बर विशेष तिहार हरे। राखी के बाद सब के मन मा एक अलग से खुशी झलकथे के अब तीजा-पोरा आही अउ खुशी हो ही। काबर नहीं साल भर मा एक बार ये तिहार हर आथे। वइसे तो हर तिहार हा एके घांव आथे, फेर ये तीजा मा माईलोगन मन अपन-अपन मइके जाथे। मइके के नाम म जम्मों महिला मन एक गोंड़ मा खड़े रहिथे। नवा-नेवरन्नीन मन हा आठे मनाथे अउ घेरी-बेरी फोन कर के अपन भाई-माई मन ला बुलावत रहिथे। साल मा कतको बार मइके जाही फेर तीजा मा नइ जाही ता घेरी-बेरी पारा-पड़ोस संग गोठिया डरथे। अई ये दारी मैं तीजा नइ गए हंव बहिनी अब्बड़ सुरता आवत हे दाई-बाबू, भाई-भतीजा मन के। अपन अंचरा म आंसू पोछत बतावत रहिथे। फेर यहू तिहार हर दिनोंदिन कम होवत जावत हे। एके दिन बर जाथे अउ लुगरा धर के आ जाथे।

करू भात काबर खाये जाथे - करेला अउ चना अधिकांश घर म बनथे अउ येला खा के माई लोगन मन उपास रहिथे। करेला काबर खाय जाथे येखर वैज्ञानिक कारण भी हे, करेला मा विशेष प्रकार से पोषक तत्व मिले रहिथे। येमा विटामिन सी, मैंगनीज,पोटेशियम जइसे तत्व मिले रहिथे। येहा औषधि के भी काम करथे। करेला मा पानी के मात्रा मौजूद रहिथे जेकर से प्यास बहुत कम लगथे।

ये तिहार हर पोरा ले शुरू हो के गणेश चतुर्थी तक रहिथे। करुभात के विशेष महत्व रहिथे ये तिहार म। घर-घर माई लोगन मन घूम-घूम के करेला साग खाये ला जाथे। वो दिन काकरो घर साग नइ पूछे, काबर कि सबो घर तो करेला ह बने रहिथे अउ बजार म करेला के भाव अगास छुअत रहिथे, एकरो दिन आथे। रात किन माई लोगन मन अपन-अपन लोग-लइका ला धर के घरोघर जाथे। अइ चल न बहिनी करेला चीखे बर जाबोन या इही बहाना सबों झन संग भेंट मुलाकात हो जाही।

करू भात काबर खाये जाथे - करेला अउ चना अधिकांश घर म बनथे अउ येला खा के माई लोगन मन उपास रहिथे। करेला काबर खाय जाथे येखर वैज्ञानिक कारण भी हे, करेला मा विशेष प्रकार से पोषक तत्व मिले रहिथे। येमा विटामिन सी, मैंगनीज,पोटेशियम जइसे तत्व मिले रहिथे। येहा औषधि के भी काम करथे। करेला मा पानी के मात्रा मौजूद रहिथे जेकर से प्यास बहुत कम लगथे, अउ चना मा कैल्सियम किसम-किसम के पोषक तत्व के भरमार रहिथे। शरीर ला ऊर्जा देथे। ओकर कारण से माई लोगन मन ह करेला याने की करुभात खा के दूसर दिन निर्जला उपवास रहिथे।

पुरखा के बात - हमर छत्तीसगढ़ मा करेला साग ला विशेष महत्व दिए जाथे। सियान मन बहुत सोच विचार कर के नियम ला बनाए हे ताकि आने वाला पीढ़ी येकर लाभ उठा सकें। कभू-कभू लगथे की पुरखा मन ये समय ला जानत रिहिन का... के आने वाला पीढ़ी के मन निर्जला उपास नइ रहे सकें। येकर कारण करेला मा विशेष फायदा देख के उपास के पहिली दिन करू भात खाये के नियम बनाए हे। ताकि महिला मन येकर लाभ उठा सकें अउ पुरखा के मान रख सकें ।

आज के पीढ़ी ला विशेष ध्यान रखना चाहिए अउ भरपूर लाभ घलो उठाना चाहिए। ये प्रकार से करुभात खाये के महत्व हे।

-प्रिया देवांगन प्रियू, राजिम

तीजा पोरा के तिहार

आगे आगे आगे तीजा पोरा के तिहार आगे
गुदगुद गुदगुद नांदिया बईला ला दौड़ाबो
चंउर ह तो मिले नई रेती धुर्रा पीस पोरा चलाबो
हमर संस्कृति अउ तिहार मन अइसने प्रकृति ले जुड़े हवे
बईला के पूजा किसान मितानी के बात हवे
कीथे घलो की यही दिन सुवा ह जनम धरथे
धान के फसल म यही दिन तो दूध भरथे
घोरवा चिला के मान अजब हे
तेकरे सती हमर तिहार गजब हे
पोरा तिहार के बिहनिया ले दाई ल तेलइ बैठाबो
दीदी तीर फोन लगा के तीजा लेबर आवत हों कहीके चेताबो
ठेठरी खुर्मी बड़ा सोंहारी संग गुजिया भजिया ला खाबो
भाई भैया संग बहिनी दीदी ला तीजा लेवा के लाबो
आगे तिहार तीजा पोरा के
अब तो सल्लग तिहार मनाबो।।

-लेमेंद्र साहू, 'अनुराग'
परसदा (मोखा), गुंडरदेही बालोद

हमर लोक तिहार: तीजा परब

हिन्दू परम्परा म तीजा परब के विशेष महत्व माने गेहे, सुहागिन माईलोगन मन अपन घरवाला के लंबा उमर बर वरत ल करथें। तीजा के ए परब ह मां पारवती पर आधारित हे , एकरे सेती तीजा के दिन म गौरी-शंकर के पूजा करे जाथे।

भारत के अउ दूसर राज्य म सुहागिन माईलोगन मन तो वरत रखथे फेर, संग म कुंवारी नोनी मन तको जेनला सुयोग्य वर चाहिये रहिथे ओहा तको तीजा के ए वरत के पालन करथे अउ तीजा मनाथे। फेर हमर छत्तीसगढ़ म ए वरत ल सुहागिन माईलोगन मन ही करथे अऊ इंकरे मन के द्वारा ही तीज परब म वरत अउ पूजा करे जाथे।

तीजा परब के महत्ता-ए वरत म सुहागिन मन अपन घरवाला के लम्बा आयु बर अउ सौभाग्य के रक्छा बर ए वरत के पालन अड़बड़ कठोरता ले करथे। ए वरत म निर्जला ऊपवास रखे जाथे।

तीजा परब ले जुड़े हावय एकठन पौरानिक कथा-

नारद ह पारबती के बाबू ले किहिस कि तोर बेटी ह अड़बड़ बछर ले तपस्या करे हे उही ले प्रसन्न होके श्री बिसनु ह आपमन के बेटी ले विवाह करे के इच्छा रखथे। ए कारण ले मेंहा ए संदेसा ल आपमन तक पहुंचाये ल आय हंव। ओकर बाबू ह किहिस कि- मोला कोई आपत्ति नई हे कहिके। एमा नारद जी ह विष्णु ल ए विवाह बर स्वीकृति बता दिस। जब पारवती ल ए बात मालूम होईसे त ओहा अड़बड़ दुख होके प्रान त्यागे के सोंचे ल लग गे। ऐला देखके ओकर एकझन सहेली ह ओला घना जंगल में जाके भगवान के तपस्या करे के सलाह दिस। पारवती ह अंतस मन ले भगवान शंकर के तपस्या करेला लग गे। भाद्र पक्छ शुक्ल तृतिया के दिन वरत करके शिवलिंग के पूजा अउ रात जागके तपस्या करके सेती शिवजी प्रसन्न होके परघट होगे अऊ ओला अपन अर्धांगनी स्वीकार कर लिस। संकर जी ह पारवती ले किहिस कि ए तीजा वरत ल जेन स्त्री ह मन से करही ओकर सुहाग ह तोर असन पवित्र होही। अउ ओकर रक्छा भी मेंहा स्वयम करहूं कहिके।

के दिन के होथे तीज तिहार ह- तीज तिहार के पहिली दिन करू भात खाथे। सबो दाई, दीदी बहिनी मन एक दूसर घर जाके करू भात खाथे ओकर बाद ले रात ले लेके दू रात अउ एक दिन तक तीजहारिन मन ह कठिन निर्जला उपास रहिथे, ए वरत ह पूरा होए के बाद फरहरी करथे। फरहर के दिन तीजहारिन मन ह अपन मायके म देय नवा लुगरा ल पहिनके शंकर पारवती के पूजा करथे अउ अपन उपास ल टोरथे। ए दिन घर म रंग-रंग के छत्तीसगढ़ी पकवान सुंहारी बड़ा, भजिया, ठेठरी, खुरमी आदि अड़बड़ अकन ले पकवान चुरथे।

गणेश्वर पटेल

छत्तीसगढ़ी भाखा के जबर खासियत

शब्द ल एक बार उचारे म आने अरथ अउ दू पइत संघरा उचारे म उहिच शब्द के आनेच अरथ।

हमर महतारी भाखा छत्तीसगढ़ी के ए जबर खासियत आय, के एमा कुछ अइसनो शब्द हे, जेला एक पइत उचारे म वोकर अरथ आने जनाथे, त उचिह शब्द ल सरलग दू पइत उचारे म वोकर अरथ बदल जाथे. आवौ देखथन अइसने एकाध शब्द मनला- हमर इहां एक शब्द हे- गाड़ा। गाड़ा ल सबो जानथें, एकर छोटे रूप ल गाड़ी कहिथन, जे बइला फांद के कहूँ आए-जाए या कुछ समान डोहारे के काम आथे. हमन लइका राहन त भँइसा गाड़ा अउ बइला गाड़ी दूनों च म बरात जावन. कभू-कभू धान लुवई के मौका म सीला बीने बर घलो वो खार म जवइया गाड़ा या गाड़ी म बइठ के चल देवत राहन।

गाड़ा शब्द के दूसर अरथ इहां धान नापे के एक इकाई के रूप म घलो होथे। सियान मन धान मिंजाई के सीजन म पूछ परथें- ए बछर तुंहर घर के गाड़ा धान लुएव गा? ए जगा इही गाड़ा शब्द ह कतका बोरा या कतका क्विंटल धान होइस। एकर रूप म बउरे जावत हे। तब इहां नापे खातिर बड़े काठा अउ छोटे काठा के उपयोग करे जावय। बड़े काठा म लगभग तीन तीन किलो असन धान आवय त छोटे काठा म दू किलो के पुरति। इही काठा ल जब बीस बार नापे जावय, त वो एक खांड़ी कहावय अउ फेर बीस खांड़ी हो जावय त वोला एक गाड़ा कहे जावय।

अब देखौ इही गाड़ा शब्द के दू पइत संघरा उचरई ल- गाड़ा-गाड़ा बधाई कहे म एकर अरथ ह एकदम बदल जाथे। अब एकर अरथ ह सैकड़ों अउ हजारों गुना बधाई देवई हो जाथे। अनंत अउ अनगिनत बधाई देना हो जाथे। ठउका अइसने एक अउ शब्द देखन- झारा-झारा शब्द ल सुनते मन म बरा-सोंहारी बनाए के बेरा तेलहा कराही ले चुरे-पके बरा-सोंहारी ल निकाले के काम आने वाला एक औजार के सुरता आ जथे।

अब इहीच झारा शब्द ल दू पइत संघरा कर के देखन, त ए ह रांधे-चुरोए के अपन औजार वाले रूप ल छोड़ के जेवन-पानी खातिर नेवता देवइया शब्द बन जाथे- आज फलाना मंडल घर कुल देवता पूजा के नेवता हे गा, तुमन ल उंहचे जेवन खातिर झारा-झारा नेवता हे। अब ए नेवता खातिर इही झारा शब्द ह दू पइत संघरा उचारे म जम्मो परिवार ल संघरा नेवता देवइया शब्द बनगे हे। ए आय हमर छत्तीसगढ़ी भाखा के महानता अउ मौलिकता।

-सुशील भोले,
संजय नगर, रायपुर

कमेलिन नोनी

कहिनी

नही गुरुजी! मोर काकी के इलाज बर कमाये ला लागही मोला। सबके किस्मत में विद्या धन नइ राहय। मोरो मा नइ होही...? फेर लांघन नइ मरो गुरुजी मेंहा अउ मोर काकी-कका बर जिये ला लागही! कका बिगड़ाहा होगे हावय तब महुं तो अपन आदत ला मइलाहा नइ कर सकवं गुरुजी! कंचन के विचार ल सुन के गुरुजी गदगद होगे। भलुक वोकर घर जाय बर नइ खंधिस कंचन हा फेर गुरुजी के अंतस म घर बना डारिस।

चौमासा के घरी। किसान मन के मन कुलकत हे ऐसो के पानी-बादर ल देख के। इही करिया-करिया बादर तो आय जौन ह किसान ल भविस के आस देखाथे। भलुक करिया हाबे ते का होइस? रंगीन सपना के उजास घला देखाथे। कोइली के कुहुक-कुहुक पपीहा के पिहिप-पिहिप अउ मैना के चैंक-चैंक अब्बड़ सुग्घर लागत हाबे। ...अउ चिरई जाम के पिंजरा म धंधाये मिट्ठू के बोली, अब्बड़ गुरतुर लागथे। करिया-बादर ले जादा करिया-करिया चिरई जाम (जामुन)... ? मुंहू म पानी आ जाथे। ललचा जाथे-मन हा।

सबरदिन बरोबर वोकरो मन ललचावत हावय अब्बड़। पांखी रिहितिस ते उड़िया जातेंव-अगास ला अमरे बर। रंग रिहितिस ते बगर जातेंव-इंद्रधनुष कस। अंजोर रिहितिस ते बन जातेंव जोगनी-रिगबिग-रिगबिग बरे बर अउ पइसा रिहितिस ते बन जातेंव- महुं ह विद्यार्थी। नवा स्कूल ड्रेस, टाई, जूता-मोंजा पहिर के इतरातेंव। चुन्दी ल पाटी पारे, आंखी म काजर आंजे नवा बस्ता टिफिन डब्बा धरे स्कूल जातेंव-वोकरो मन कलबलावत हाबे।

बारा-पंद्रा बच्छर के नोनी आय वोहा-कंचन। कोनो राजकुमारी नोहे फेर स्कूल के आगू के जगह ह वोकरे आय-पोगरी। जंगल के जम्मो रुख-राई वोकरे आय। बेरा बखत म टोर लेथे फल-फलहरी ल। जौन घरी तौन रिकम के जिनिस। जिमीकांदा, चार, तेंदू, केरा, गभोती अउ केछरवा कांदा ले बुचरवा कांदा जम्मो मिलथे नोनी कंचन करा। इही जम्मो ल बिन के आनथे अउ स्कूल के आगू म पसरा लगा के बेच लेथे।

हमर छत्तीसगढ़ ह पोठ राज आय। जम्मो कोती अइसन दिखथे...अउ बस्तर के मोहाटी कांकेर जिला चारामा में ये जम्मो मनमोहनी जिनिस अब्बड़ सुग्घर दिखत हाबे। शहरिया अउ गंवइहा जम्मो के मन ल भाथे।

आज अपन पसरा म चिरई जाम अउ सरई बोड़ा बेचत हाबे कंचन हा। जम्मो अवइया-जवइया मन चिथो-चिथो कर डारिस।

'कतका किलो हरे सरई बोड़ा ह नोनी?

नवा-नवा उतरे हाबे अभिन सरई बोड़ा हा। अभिन मेछराये के बेरा हाबे। मेछरावत हाबे अपन दाम मा। नवा बइला के नवा सिंग चल रे बइला टिंगे-टिंग। कतको झन पूछिस अउ हिरक के देखे बिना मुंहू करू करत चल दिस। तब कोनो के मोल भाव नइ पटे के सेती लहुटगे। ...अउ कोनो हा मोल-भाव करत हाबे।

दू सौ रुपिया पाव ले कमती नइ होवय सेठ...।

एक सौ तीस रुपिया पाव लगा न ओ !

अब्बड़ बेरा ले जोजियावत हाबे सेठ हा। नब्बे रुपिया ले शुरू करके पांच-पांच रुपिया बढ़त एक सौ तीस रुपिया तक अमरे हाबे।

जंगल-झाड़ी,कांटा-खूंटी, अझमहा-निझमहा मा किंजरबे तब मिलथे सरई बोड़ा हा सेठ ! हुडरा-बघवा, चितवा-भालू ले ओरभेट्टा हो जाथे कभु-कभु। पाछु बच्छर तो कमारिन दीदी ल भालू खखोल दे रिहिन। लटपट बाचीस। अतका सस्ता म नइ पोसाये सेठ !

भाव नइ पटिस। अब नोनी कंचन के गोठ सुनके अपन सोना-चांदी के दुकान कोती सुटूर-सुटूर रेंग दिस सेठ हा। आज तो बेरा हाबे सेठ ले बदला हेरे के। पाछु दरी काकी के माला टुटगे रिहिस, बना के दिस तब एक्को पइसा कमती नइ करिस। अब्बड़ कहे रिहिन पांच रुपिया चिल्हर नइ हाबे सेठ! जी छड़ा के मांगे रिहिन। कंचन फुसफुसाइस।

बोड़ा का हरे बड़का गुरुजी?

स्कूल कोती ले तीन झन मास्टर आवत हाबे गोठ-बात करत।

अब्बड़ गरमी ले तिपे भुंइयां म अकरस पानी गिरथे। ये बेरा तापमान आद्रता अउ दंद-कुहर जादा रहिथे तब सरई रुख के जर हा एक रिकम के केमिकल के स्राव करथे। जिहां फंगस ह एसोसिएशन करके अपन ग्रोथ करथे अउ सादा चीनी बाटी बरोबर अपन आकार बना लेथे। इही ला सरई बोड़ा कहिथन। जौन अब्बड़ मिठाथे-गुरतुर। मौसमी जिनिस आय अउ लाने म अब्बड़ मिहनत लागथे वोकरे सेती अब्बड़ महंगा बेचाथे।

ऐहा अब्बड़ पुसटई घला होथे। खनिज, लवन, विटामिन अउ आयरन अब्बड़ रहिथे।

लंच के बेरा आवय। स्कूल के तीनों मास्टर मन रोज आथे पसरा म कुछु जिनिस बिसाये बर-बड़का मंझला अउ नान्हे मास्टर। अब कंचन के पसरा के तीर म आगे। लइका मन के खेल-खेलई ल मगन होके देखत हाबे नोनी कचन हा। कोनो लइका झूलना झूलत हाबे तब कोनो लइकामन छू-छुवउल खेलत हाबे।

के रुपिया आय चिरई जाम हा?

कंचन के धियान टूटिस अउ आगू म गुरुजी मन ल देख के हड़बड़ागे। टुपटुप-टुपटुप पांव परिस।

एक सौ बीस रुपिया किलो आय सर! सौ रुपिया लगाहूं।

भलुक अवइया-जवइया मन पूछिन तब एको पइसा कम नइ करिस कंचन ह फेर बिन मोल-भाव करे आगू ले चिरई जाम के भाव कम कर दिस।

बड़का गुरुजी ह किलोभर भर बिसा डारिस चिरई जाम ल जम्मो स्टॉफ बर। भलुक किलो भर तौलिस फेर वोकर ले आगर रिहिस।

गु गु...गुरुजी एक गोठ रिहिस। पूंछव का?

कंचन के आंखी म आंसू छलछलावत रिहिस। अब्बड़ दिन के पूछे के उदिम करत रिहिस फेर आज सामरथ करिस कचन हा।

पूछ न बेटी! का बात आय?

गुरूजी! हमन जंगल के रहवइया आन। अब्बड़ रुख-राई लगाथन। हमर कोती गुंगुवा उड़इया कल-कारखाना घला नइ हाबे। जौन ऑक्सीजन ल मइलाहा कर देथे तभो ले गांव वाला बर ऑक्सीजन कइसे कमती परगे कोरोना दरी मा? शहरिया मन बाचगे अउ गवइया मन काबर मरगे? हमर परसा डोली बाहरा खेत ल बेचिन तब एक ठन ऑक्सीजन सिलेंडर बिसाइस कका ह। अइसन बिपत के बेरा सिलेंडर अब्बड़ महंगा काबर बेचाथे गुरुजी?

गुरुजी अकबकागे। ससन भर देखे लागिस नोनी कंचन ला। सांवर बरन दाढ़ी म तीन बुंदिया गोदना तेरा-चौदह बच्छर के नोनी चिरहा ओन्हा पहिरे। कजरारी आंखी नरी म ताबीज अउ बजरहा खिनवा पहिरे। गोल उदास चेहरा ल देखे लागिस गुरुजी हा।

कोरोना महामारी विश्व त्रासदी आय बेटी! कतको झन के जम्मो परिवार सिरागे ए मा। इही तो बेरा रिहिस, अपन अउ बिरान चिन्हे के। मानवता ल जाने के। आज घला कतको अस्थि के विसर्जन नइ होये हाबे। मालखाना म धुर्रा खावत परे हे। पुलिस के रजिस्टर म लावारिस हाबे। भलुक वोकर संपत्ति के सुख भोगइया कोरी-खइरखा हे।

गुरुजी गुन डारिस जम्मो ल छिन भर मा। वोकरो एकलौता हीरा बेटा ल लील डारिस कोरोना ह ऑक्सीजन के कमती होय ले।

का करबो बेटी! प्रकृति महतारी के आगू जम्मो नतमस्तक हावन ओ।

बड़का गुरुजी किहिस अउ रोनहुत होगे। लइका मन के सकेलाये के घण्टी घला बाजगे अब। कांपत थरथरावत गुरुजी लटपट स्कूल अमरिस अउ लझरंग ले खुर्सी म बइठगे। नोनी कंचन के कोंवर चेहरा ह आंखी-आंखी म झूलत हाबे अउ गोठ ह कान म चोट करत हाबे। पढ़इया लइका मन के मूल्यांकन कर डारिस गुरुजी हा। फेर पसरा वाली नोनी के कइसे मूल्यांकन करही ? कोन श्रेणी मा राखही ए बी सी...।

गुनत-गुनत आठवीं क्लास म पढ़ाये लागिस-पराक्रमी राजा के कहानी। जौन अपन राज के विस्तार करे बर कतको झन सिपाही के वध करके वोकर लइका मन ल अनाथ कर डारिस। असली पराक्रमी कोन आय-युद्ध में लड़इया सिपाही हा कि अनाथ लइका जौन जीवन भर आंसू लेके जीही? नान-नान जिनिस बर कुकुर गत होही? पढ़े के उम्मर म मुड़ी म बोझा डोहारही, बाजार म पसरा लगाही।

गुरुजी ल आज पढ़ाये के मन नइ होइस। कभु जुच्छा खुर्सी म कंचन के बइठे के सपना देखथे गुरुजी ह तब कभू घेरी-बेरी खिड़की के ओ पार धियान चल देवय जिहां कंचन पसरा लगाए हाबे।

कंचन आधा बोड़ा ले जादा ल बेच डारिस अब अउ चिरई जाम तो उरक घलागे। सोना-चांदी के दुकान वाला इहां के नामी सेठ ह फेर लहुट के आगे हावय कंचन के पसरा म सरई बोड़ा बिसाये बर।

हे... हे... अब तो छंटागे नोनी बोड़ा हा। अब डेढ़ सौ मा एक पाव दे दे।

सेठ हाँसत किहिस अउ फेर जोजियाये लागिस।

नहीं सेठ! आज तो रेट कमती नइ होवय।

निच्चट ढीठ हस टूरी! छंटवा माल ल घला कमती नइ करस। बैपार करे बर घला नइ आवय।

ढीठ करे बर तो तुहरे मन ले सीखे हंव सेठ! जइसे तुमन आनी-बानी के टेक्स लगाथो तभो ले दू पइसा कमती नइ करो-कोनो जिनिस मा। भलुक बैपार करे बर नइ आवय फेर मया बढ़ाये ला आथे सेठ! हमर तो अब्बड़ लरा-जरा हाबे अभिन बेचत भर ले बेचहूं ताहन घर जाके फोकट म बांटहू।

सेठ के मुंहू उघरा होगे। अतका महंगा जिनिस ल फोकट मा बांटबे?

काबर नइ बांटहू सेठ! वोहू मन तो हमन ल देथे। रउतइन ह मही देये रिहिन काली, सोनारिन दाई ह गोलेन्दा भाटा। गोंदली के फोरन डार के बनाये रिहिन मोर काकी हा। अब्बड़ मिठाइस रात के साग ल आज बिहनिया घला खाये रेहेंन चाट-चाट के।... वोकरो करजा ल छूटे ल लागही?

तुम छत्तीसगढ़िया मन भलुक अब्बड़ कमा लेथो फेर खाये ला नइ जानव। सब साग मा प्याज लसुन डार के स्वाद ला बिगाड़ देथो।

इही गोंदली तो हरे सेठ! जौन मइनखे के गरमी ला उतारथे।... अउ पइसा के गरमी ला घला उतारथे। तहुं मन ला खाना चाहिए। कंचन के गोठ चटकन कस लागिस सेठ ला। ऐती-ओती देखे लागिस।

तुमन तो भलुक प्याज खाये ला छोड़ देये हव फेर ब्याज खाये बर कब छोड़हु सेठ!

सिरतोन सेठ के मुंहू करू होगे। पच्च ले थुकिस अउ गुटखा के पाउच के जिनिस ला चभलाये लागिस। रुपिया ले भरे बेग ल एक खांध ले दूसर खांध म पलटिस अउ फेर जोजियाये लागिस।

डेढ़ सौ म एक पाव दे दे नोनी! सरई बोड़ा। अतका बेरा ले एक-दू झन अउ बिसा डारिस। बांचे-खोंचे चिरई जाम ल तो उरक घला गे। ले सेठ अब्बड़ जोजियाथस। आधा किलो लेबे तब लगाहुं डेढ़ सौ रुपिया पाव-तीन सौ के आधा किलो।

नहीं! एक पाव भर दे।

अब्बड़ अकन माई-पिला हाबो सेठ! आधा किलो ह पुरही। ले ले।

सेठ लिस आधा किलो अउ बड़का गड्डी ले पांच सौ के कड़कड़ाती नोट ल निकाल के दिस कंचन ला। बचत पइसा ला झोंकिस अउ अपन बड़का सोना-चांदी के दुकान कोती चल दिस। सांझ होगे स्कूल के घंटी बाजिस अउ छुट्टी के बेरा होगे। किलो-बाट टुकनी ला सकेलिस। बोरी ले सिलाये नानकुन पाल ल घरियाइस अउ घर लहुटे के तियारी करत हाबे। फेर उदुप ले देखथे ते पोटा कांप जाथे। जवनहा आवय। माते हाबे छत्तीसगढ़ के सरकारी रसा म। पांव लड़भड़ावत हाबे अउ मुंहू ले भभका आवत हे। काकी के कनिहा पीरा के पांच रुपिया के दवई लेये बर पइसा नइ हे कहिके हाथ ल झर्रा देये रिहिस बिहनिया अउ अभिन? संझा बेरा खुद पी के झुमरत हाबे।

दे टूरी पइसा दे, कतका कमाये हस?

तकादा करे लागिस। कंचन के सगे कका आय।

आज जादा नइ कमाये हंव कका! तभो ले, चल घर में दुहुं।

अभिन तो सेठ ह गड्डी निकालत रिहिस तोला देये बर। लबरी, मोला लबारी मारथस। कतका चामड़ी डांटे हाबे जम्मो बुकनी ला झर्रा देहूं घर जाहूं तब। अभिन दे मोला पइसा।

दारू के सेती अइसने गोठियावत हस कका ! नइ पीयस तब अब्बड़ दुलारथस। काबर अब्बड़ दारू पीथस कका! झन पीये कर।

नानकुन टूरी! मोला बरजथस। मंदहा ला झन बरज। मंदहा बांच जाथे अउ बरजईया मन मर जाथे। तोर दाई-ददा अब्बड़ बरजे मोला-झन पी सिरा जाबे अइसे फेर उही मन सिरागे कोरोना मा।

सिराना रिहिन तब जम्मो परिवार मर जातेंव। दाई-ददा दुनो कोई मरगे अउ टूरी ला छोड़ दिस। अब पढ़ाई-लिखाई शादी-बिहाव के खर्चा मोर माथे परगे। खेत घला बेचागे का थोथना मा बिहाव करहूं तोर... ?

झोला के चार सौ ला झटक लिस कका हा अउ फेर सरकारी अमृत दुकान कोती रेंग दिस बड़बड़ावत। आजकल नाचा नंदागे फेर गम्मत देखइया कमती नइ हे। सकेलागे भीड़। कोनो कमेलिन नोनी के मान नइ राखिस भलुक दांत खिसोर के हाँसिस जम्मो कोई। लइका आय ते का होइस? वोकरो मान हाबे। फेर आज गांव के सियान मन घला भीष्म पितामह बनगे अउ जौन बेरा भीष्म पितामह आंखी मुंदथे तब सिरतोन महाभारत होथे। इहां तो महुआ रस के नरवा बोहावत हे कोन दुरपति बाचही? स्कूल के छुट्टी होगे। जम्मो लइका अब अपन-अपन घर जावत हाबे। गुरुजी घला,फेर कंचन के रोनहुत बरन ला देख के अतरगे। तीर मा आके अउ गोठिया डारिस।

बेटी तोला पढ़े के साध हाबे ते स्कूल मा आ जाबे।

नहीं गुरुजी! पइसा कमा के नइ जाहूं तब मोर कका हा मारही नंगते ले। भलुक मोर काकी अब्बड़ मया करथे फेर कका बखानथे। टूरा रहितेस तब राखतेंव। कोट-कोट ले दाइज-डोल आतिस फेर तेहां तो टूरी आस-खरचा करइया। घर ला जुच्छा करइया। भलुक कोनो संग भाग जाबे फेर बिहाव के खरचा झन कराबे कहिथे। कहां भागे के गोठ करथे गुरुजी कका हा? जौन भागथे तौन मन ला पइसा नइ लागे?

गुरुजी फेर मुक्का होगे। आंखी म आंसू आगे। कुछु गुनिस अउ उदुप ले कहिथे।

बेटी! मोर घर रहिबे चल, जतका पढ़बे पढ़ाहूं। अपन बेटी बना के जतन करहूं।

नहीं गुरुजी! भलुक कका हा मोला मर जाये कहिके सरापथे फेर काकी अब्बड़ मया करथे। मोर बिना वोहू हा नइ जी सकही। गुरुजी! वोला छोड़ के नइ जाववं। नवा नत्ता जोरे बर जुन्ना नत्ता ला नइ टोरो गुरुजी!

गुरुजी देखते रहिगे कंचन के चेहरा ला। गरब अउ साभिमान मा सिरतोन कंचन बरोबर चमकत हाबे।

ठीक हे तोर कका ला रोजी ले मतलब हे न। मेंहा देहूं तोला पइसा। फेर काली ले बुता झन करबे सिरिफ पढ़बे।

नहीं गुरुजी! मोर काकी के इलाज बर कमाये ला लागही मोला। सबके किस्मत में विद्या धन नइ राहय। मोरो मा नइ होही... ? फेर लांघन नइ मरो गुरुजी मेंहा अउ मोर काकी-कका बर जिये ला लागही! कका बिगड़ाहा होगे हावय तब महुं तो अपन आदत ला मइलाहा नइ कर सकवं गुरुजी!

कंचन के विचार ल सुन के गुरुजी गदगद होगे। भलुक वोकर घर जाय बर नइ खंधिस कंचन हा फेर गुरुजी के अंतस म घर बना डारिस। अब कॉपी-किताब बिसाये बर चलदिस गुरूजी हा। नोनी भलुक कतको कमा ले आखर अंजोर तो सब ला चाही।

ठीक हे बेटी! तोला रोज पढ़ाहूं छुट्टी के पाछू। तभे तो पोठ बनबे। अपन अधिकार ला जानबे। अपन घर मा भलुक रहा फेर कोनो भी जिनिस के कमती होही अपन बाबूजी समझ के मांग लेबे।

गुरुजी के गोठ सुनके टुपटुप-टुपटुप पांव परिस कंचन हा। आंखी ले आंसू आवत हाबे अब। गुरुजी घला अपन एकलौता बेटा के दुख ला बिसरा डारिस कंचन ला देख के। जम्मो लइका मन नाचत-कूदत घर लहुटत हाबे काली नवा उछाह संग स्कूल लहुटे बर। कंचन घला अपन डलिया टुकनी ला मुड़ी मा बोहो के घर कोती लहुटत हाबे अब। ससनभर देखत हाबे गुरुजी हा लुसुर-लुसुर रेंगइया कंचन ला, कमेलिन नोनी अउ गुणवती नोनी ला।

चन्द्रहास साहू द्वारा श्री राजेश चौरसिया
आमातालाब रोड श्रध्दानगर धमतरी

उल्टा पुल्टा

पहला कैदी - तुम्हें पुलिस ने क्यों पकड़ा?
दूसरा कैदी - बैंक लूटने के बाद वहीं बैठकर पैसे गिनने लगा तो
पुलिस ने पकड़ लिया।
पहला कैदी - वहीं पर पैसे गिनने की क्या जरूरत थी?
दूसरा कैदी - वहां पर लिखा था कि काउंटर छोड़ने से पहले पैसे गिन लें,
बाद में बैंक जिम्मेदार नहीं होगा।

ब्राम्हण समाज का विशाल समागम आज, बहुउद्देशीय परिसर का होगा शिलान्यास

मुख्यमंत्री बघेल और कृषि मंत्री चौबे होंगे शामिल

बिलासपुर, 16 सिंतबर (देशबन्धु)। छत्तीसगढ़ ब्राम्हण समाज का विशाल समागम रविवार को बिलासपुर के साइंस कालेज मैदान में रखा गया है। इस समागम में प्रदेशभर के 25 हजार से अधिक लोग जुट रहे है। इस अवसर पर प्रदेश के मुख्यमंत्री भूपेश बघेल और कृषि मंत्री रविन्द्र चौबे के अलावा गौ सेवा आयोग के अध्यक्ष पं रामसुंदर दास अतिथि रहेंगे।

कार्यक्रम की जानकारी देते हुए समाज के अध्यक्ष डॉ प्रदीप शुक्ला और कार्यकारी अध्यक्ष संजय शर्मा ने बताया कि प्रदेश के मुख्यमंत्री भूपेश बघेल ने समाज को दो एकड़ भूमि उपब्ध कराया है। समाज ने इस भूमि को बहुउद्देशीय परिसर के रूप में विकसित करने का निर्णय लिया है। इस भवन में एक मुख्यभवन रहेगा जो 22 हजार स्क्वेयर फिट में बनेगा और दूसरा भवन रहेगा जो 7 हजार स्क्वेयर फिट का रहेगा। रविवार को प्रदेश के मुख्यमंत्री भूपेश बघेल, कृषि मंत्री रविन्द्र चौबे और गौ सेवा आयोग के अध्यक्ष पं राम सुंदर दास बतौर अतिथि के रूप में उपस्थित रहेंगे। इस कार्यक्रम में मुख्यमंत्री के सलाहकार प्रदीप शर्मा, योग आयोग के अध्यक्ष ज्ञानेश शर्मा, रायपुर नगर निगम के सभापति प्रमोद दुबे, जैव विविधता बोर्ड के अध्यक्ष राकेश चतुर्वेदी और कृषक कल्याण बोर्ड के अध्यक्ष सुरेंद्र शर्मा भी विशिष्ट अतिथि के रूप में शिरकत कर रहे है।

कार्यक्रम साइंस कालेज मैदान में सुबह 10.30 बजे शुरू होगा और शाम के पांच बजे तक चलेगा। कार्यक्रम में भुनिपूजन के अलावा छत्तीसगढ़ में रहने वाले सभी समाजों को एकजुट रखने के लिए विचार मंथन भी किया जाएगा। इस आयोजन में बिलासपुर, रायपुर, दुर्ग, भिलाई, राजनांदगांव, जांजगीर, चांपा, कोरबा, रायगढ़, सारंगढ़, अंबिकापुर, सरगुजा, जगदलपुर समेत पूरे छत्तीसगढ़ से समाज के लोग एकत्रित हो रहे है। आटोजकों का दावा है कि इस कार्यक्रम में 25 हजार से अधिक लोग शिरकत करेंगे। गौरतलब है कि ब्राम्हण समाज की मांग पर पीछले दिनों मुख्यमंत्री ने डीएलएस कालेज के पास समाज को दो एकड़ जमीन उपलब्ध कराया है। इसमें आबंटन में मुख्यमंत्री भूपेश बघेल के सलाहकार प्रदीप शर्मा की विशेष भूमिका रही है। अब इस जमीन को बहुउद्देशीय परिसर के रूप विकसित किया जाएगा।

जिले में स्वीप के तहत महिलाओं ने लगाई एक मेंहदी स्वीप की

■ हाथों में स्वीप बिलासपुर लिखकर किया मतदान के लिए प्रेरित

बिलासपुर, 16 सिंतबर (देशबन्धु)। मतदाता जागरूकता कार्यक्रम के तहत बिलासपुर सहित कोटा एवं बिल्हा के ग्राम मिट्ठू नवागांव और सेमरताल क्षेत्र में महिलाओं ने मेंहदी लगाकर शत प्रतिशत मतदान का संदेश दिया। सिरगिट्टी में आयोजित कार्यक्रम में महिलाओं ने साज सज्जा कर और बाएं हाथ में स्वीप बिलासपुर एवं दाहिने हाथ में आकर्षक डिजाइन की मेंहदी लगाकर मतदाता जागरूकता गीत पर अपनी सुंदर प्रस्तुति दी। इसी प्रकार जनपद पंचायत कोटा के मिठू नवागांव सेक्टर में महिला स्व सहायता समूह की दीदियों के साथ ही नववधुओं ने अपने हाथों में मेंहदी लगाकर मतदान के लिए लोगों को प्रेरित किया। बिल्हा विकासखण्ड के सेमरताल में भी एक मेंहदी स्वीप की शीर्षक मतदाता जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया। जिसमें बिहान की महिलाओं ने बैनर और हाथों में बिलासपुर का अभिमान शत प्रतिशत मतदान एवं स्वीप बिलासपुर लिखकर शत प्रतिशत मतदान के लिए लोगों को प्रेरित किया। सिरगिट्टी में आयोजित कार्यक्रम में परियोजना अधिकारी श्रीमती पाण्डेय, श्रम कल्याण बोर्ड की शिक्षिका श्रीमती नीता सिंह, समाज सेविका मुस्तरी खान, लता तिवारी, फरजाना, भुवनेश्वर कोरी, पर्यवेक्षक मोनिका मौर्य, प्रतिमा पाण्डेय, पत्रकार संतोष साहू, सिरगिट्टी क्षेत्र की आंगनबाड़ी कार्यकर्ता, सहायिकाऐं एवं बड़ी संख्या में महिलाऐं उपस्थित रहीं। परिक्षेत्र पर्यवेक्षक ऋचा तिवारी द्वारा कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

सार-संक्षेप

वीडियोग्राफी के लिए 3 अक्टूबर तक निविदा आमंत्रित

बिलासपुर, 16 सिंतबर (देशबन्धु)। विधानसभा चुनाव से संबंधित महत्वपूर्ण कार्यों की वीडियोग्राफी के लिए 3 अक्टूबर तक निविदा आमंत्रित की गई है। इच्छुक व्यक्ति अथवा फर्म उक्त तिथि को दोपहर 3 बजे तक कलेक्टोरेट स्थित निर्वाचन शाखा में निविदा जमा कर सकते है। निविदा उसी दिन 3 बजे के बाद खोली जाएगी। निविदा के लिए निर्धारित फॉर्म की बिक्री निर्वाचन कार्यालय द्वारा 22 सितंबर तक की जायेगी। जिला प्रशासन की आधिकारिक वेबसाइट में इस संबंधी विस्तृत शर्तों का अवलोकन किया जा सकता है।

महिला के गुम हुए बैग को पुलिस ने लौटाया

बिलासपुर, 16 सिंतबर (देशबन्धु)। महिला के गुम हुए बैग को सिविल लाइन पुलिस ने सतर्कता दिखाते हुए ढूंढ निकाला बैग के साथ 4 लाख के जेवरात महिला को सुरक्षित वापस दिलाया। उक्त महिला स्टेशन से महाराणा प्रताप चौक आते समय अपना बैग ऑटो में भूल गई थी। जिसे सीसीटीवी फुटेज के मदद से ढूंढ कर उक्त महिला को लौटाया गया महिला के बैग में400000 के जेवरात थे जो उसे लौटाया गया।

शराब के साथ अधेड़ पकड़ाया

बिलासपुर, 16 सिंतबर (देशबन्धु)। मल्हार पुलिस के द्वारा नशे के कारोबार पर अंकुश लगाने हेतु विशेष अभियान चलाया जा रहा है कि अभियान के दौरान मुखबिर सूचना पर मल्हार पुलिस टीम द्वारा पचपेड़ी रोड़ मल्हार के पास आरोपी के कब्जे से देशी प्लेन शराब 35 पाव, एवं एक सायकल को जप्त किया गया। आरोपी सीताराम बर्मन पिता स्वर्गीय सेवक दास बर्मन उम्र 59 साल निवासी बहतरा थाना पचपेड़ी के विरूद्ध आबकारी एक्ट की धारा 34(2) के तहत अपराध पंजीबद्ध किया गया एवं न्यायिक रिमांड पर भेजा गया।

मस्तूरी विधायक ने चौहा, अकोला डोडकी में किया विकास कार्यों का भूमि पूजन

बिलासपुर 16 सिंतबर (देशबन्धु)। मस्तुरी विधायक, ने शनिवार को अपने निर्वाचन क्षेत्र के दर्जनों गांव में जनसंपर्क किया और एक-एक कार्यकर्ताओं से रूबरू हुए अपने तय कार्यक्रम के अनुसार सुबह 10-00 बजे विधायक ग्राम पेंड्री पहुंचे और कार्यकर्ताओं से भेंट इस दौरान उन्होंने परिवर्तन यात्रा की तैयारियों को लेकर भी कार्यकर्ताओं को जिम्मेदारी सौंपी साथ ही कार्यकर्ताओं से विभिन्न विषयों पर चर्चा की अपने तय कार्यक्रम के अनुसार उनका काफिला सुबह 11 बजे ग्राम कहरौदा पहुंचा वहां पहले से विधायक का इंतजार कर रहे कार्यकर्ताओं ने उनका आत्मीय स्वागत किया इसके बाद बैठक प्रारंभ हुई बैठक के दौरान विधायक ने कार्यकर्ताओं से परिवर्तन यात्रा सहित मस्तूरी के विकास सहित विभिन्न सामाजिक विषयों पर चर्चा की कार्यकर्ताओं ने मस्तूरी विकास के लिए विधायक बांधी की सराहना की विधायक ने इस कार्यक्रम के तहत दर्जनों जिसमे डोडकी, चौहा, अकोला, कहरौदा, पेंड्री, देवगांव, हिर्री उन्होंने जनसंपर्क किया, जिसका उद्देश्य ग्रामीणों के बीच विकास कार्यों के संबंध में जानकारी प्राप्त करना और उनकी आवश्यकताओं को समझना था। आज के कार्यक्रम में मस्तूरी विधायक ने ग्राम चौहा, अकोला सहित डोडकी में सीसी रोड का भूमिपूजन किया इस दौरान मस्तूरी मंडल के पदाधिकारी भी इस आयोजन में उपस्थित रहे और ग्रामीणों के साथ संवाद किया। इस दौरान मस्तूरी विधायक डॉ कृष्णमूर्ति बांधी ने कहा कि यह जनसंपर्क कार्यक्रम ग्रामीण समुदाय के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने का प्रयास है और उनकी समस्याओं और आवश्यकताओं का समाधान ढूंढने के लिए सरकारी योजनाओं को सुनिश्चित करने का हिस्सा है। इस दौरान चौहा के ग्रामीणों ने भाजपा को समर्थन देने की बात कही जिस पर बांधी ने फिर कहा कि जब कोई मुझ पर भरोसा करता है तो मेरी जिम्मेदारी और बढ़ जाती है। उन्होंने ग्रामीणों को ग्राम विकास का भरोसा दिलाया।

नो-पार्किंग में ट्रैफिक पुलिस की कार्रवाई

बिलासपुर, 16 सिंतबर (देशबन्धु)। विगत तीन माह से निरंतर डीएसपी ट्रैफिक के निर्देश पर मोडीफाई साइलेंसर लगे बुलेट पर कार्यवाही जारी है। इसी क्रम में आज यातायात के सउनि डी.डी. सिंह पेट्रोलिंग टीम आरक्षक यासीन हुसैन,रोहित साहू अन्य टीम के द्वारा 07 बुलेट वाहन थाना यातायात लाया जा कर मेकेनिक के माध्यम से ओरिजनल साइलेंसर लगवाया गया। व पेट्रोलिंग के दौरान 02 डार्क फिल्म लगी कार के शीशे से डार्क फिल्म निकलवा कर चलान कटा गया। नोपार्किंग व अन्य धाराओं में यातायात पुलिस ने कुल-103 वाहनों पर कार्यवाही करते हुए,37,700 का चलान कटा गया।

लंबित मांगों को लेकर निजी विद्यालय संघ ने डीईओ को सौंपा ज्ञापन

बिलासपुर, 16 सिंतबर (देशबन्धु)। प्रदेश के अशासकीय स्कूलों की लंबित मांगों को लेकर जिला निजी विद्यालय सगंठन ने जिला शिक्षा अधिकारी को ज्ञापन सौंपा।

संगठन ने बताया कि पिछले 12 वर्षों से आर.टी.ई. की राशि में कोई वृद्धि नहीं की गई है. आर.टी.ई. की राशि प्राथमिक कक्षाओं में 7000 से बढ़कर 15000, माध्यमिक की 11,500 से बढ़ाकर 18,000 एवम हाई और हायर सेकंडरी की अधिकतम सीमा को 15,000 से बढ़ाकर 25,000 तक किया जाय। बसों की अवधि जो छत्तीसगढ़ में 12 वर्ष है और देश के अधिकांश राज्यों में यह अवधि 15 वर्ष है. बसों की अवधि छत्तीसगढ़ में भी 15 वर्ष किया जाना चाहिए।आर.टी.ई. की रुकी हुई प्रतिपूर्ति राशि को अविलंभ स्कूलों के खाते में हस्तांतरित किया जाये। निजी स्कूलों के सभी खातों को पीएफ़एमएस के अंतर्गत पंजीकृत किया जाए। गणवेश की राशि 540 रुपए से बढ़कर 2000 की जाए। निजी विद्यालय में अध्ययनरत एससी एसटी ओबीसी वर्ग के विद्यार्थियों को मिलने वाले प्री मैट्रिक एवम पोस्ट मीट्रिक छात्रवृत्ति की राशि बढ़ाई जाय। निजी स्कूलों के अध्यापकों को स्कूली शिक्षा में भर्ती पर बोनस अंक प्रदान किया जाये, जैसे आत्मानंद के शिक्षकों को किया जाता है। धरना मे पुणेश पटेल,विनोद शुक्ला भोगीलाल बंजारे सुरेंदर मधुकर म लाल जायसवाल,अखिलेश यादव ,हरप्रसाद केवर्ट,उदल पटेल,अंकेश गुप्ताचन्दनसिंह दिवाकर धर्मपाल भारद्वाज लोमश ,शिसीर मौर्य मुकेश पटेल सेमन धृतलाहरे, नंदकुमार साहू ,देव प्रसाद पटेल नीतू सिंह पवाररविन्द्र गंधर्व बद्री प्रसाद देवांगन जॉन फ्रेमन के के पाटीक,दिलीप पाटिल ,विनोद शुक्ला नंदकुमार साहू उपस्थित थे।

संकुल स्तरीय टीएलएम कबाड़ से जुगाड़ मेला तिफरा में

बिलासपुर, 16 सिंतबर (देशबन्धु)। शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय तिफरा में संकुल स्तरीय कबाड़ से जुगाड़ मेला का आयोजन किया गया, जिसमें बिल्हा शहरी स्त्रोत समन्वयक क्रांति साहू अतिथि के रूप में उपस्थित रहे और उन्होंने तिफरा संकुल के मेले की खुल कर प्रशंसा की और शिक्षकों का हौसला बढ़ाया। साथ में प्रभारी प्राचार्य रवि कांत दुबे ने संकुल में हर वर्ष मेला और उनके लगातार सफलता की सराहना की , संकुल समन्वयक सुनील पांडेय ने स्वागत अतिथियों का फूल और बुके से स्वागत किया। मंच संचालन जय कौशिक व्याख्याता और आभार प्रदर्शन रंजीत बनर्जी ने किया। निर्णायक के रूप में सविता त्रिवेदी और जय कौशिक ने सभी टीएलएम का बारिकी से निरिक्षण किया और इससे संबंधित चर्चा शिक्षकों और बच्चों से से की। सभी स्कूलों के शिक्षको ने बहुत मेहनत से एक से बढ़कर एक टीएलएम बनाये थे, जिसमे पूर्व माध्यमिक शाला परसदा प्रथम और तिफरा द्वितीय स्थान में रहे,हर विद्यालय से दो बच्चो ने क्विज में भाग लिये। जिसमें परसदा पूर्व माध्यमिक शाला प्रथम और तिफरा द्वितीय स्थान में रहे, प्राथमिक विद्यालय में परसदा प्रथम और प्राथमिक शाला तिफरा द्वितीय स्थान में रहे। मेला में इस बार विशेष आकर्षण का केंद्र छत्तीसगढ़ व्यंजन रहा जिसमें परसदा प्राथमिक शाला से रश्मि पाण्डेय और उनकी टीम ने बहुत ही उत्कृष्ट व्यंजन की सजावट की थी कबाड़ से जुगाड झरूमेला और क्विज में सभी को सहभागिता प्रशस्ति पत्र दिया गया और प्रथम द्वितीय स्थान वालो को साथ में मोमेंटो प्रदान किया गया। तीजा पोरा विशेष छत्तीसगढ़ी व्यंजन आकर्षण का केंद्र था। छत्तीसगढ़ व्यंजन और छत्तीसगढ़ त्योहार और छत्तीसगढ़ ओलंपिक, छत्तीसगढ़ राज्य गीत संबंधित विभिन्न प्रश्न और छत्तीसगढ़ से संबंधित विभिन्न प्रश्न पूछे गये। आज के कार्यक्रम में शामिल होने वाले शिक्षक प्रधान पाठिका शासकीय पूर्व माध्यमिक शाला परसदा श्रीमती मौरिन सैमुअल संध्या ठाकुर अर्चना रावत संगीता शर्मा सिलवंती एक्का क्रांति रेड्डी सुनीता पांडे, प्रधान पाठिका शासकीय प्राथमिक शाला परसदा श्रीमतीरश्मि पांडे ,नंदनी कौशिक ,प्रीति साहू ,आशीष दयाल, फिरोज बानो, प्रधान पाठिका शासकीय प्राथमिक शाला तिफरा श्रीमती रईसा बेगम हेमलता बघेल जोगिंदर सिंह हरबंस प्रधान पाठिका शासकीय प्राथमिक शाला आर्याकालोनी श्रीमती विजयलक्ष्मी पाठक, प्रीति सिंह, चंद्रकांत जायसवाल, मीना राय, प्रधान पाठिका शासकीय प्राथमिक शाला यदुनंदन नगर तिफरा जोसेफिन एक्का ,अंजू तिवारी ,आशा तिवारी, प्रधान पाठक शास. प्राथमिक नयापारा परसदा के श्याम नारायण पांडे ,अनीता यादव ,शा उ,मां,शाला तिफरा सपना पांडे, शहनाज बेगम, कृष्ण कुमार साहू सहित क्विज वाले बच्चों की सहभागिता सराहनीय रही।

सरस्वती शिशु मंदिर के बच्चों ने दिखाई प्रतिभा

बिलासपुर, 16 सिंतबर (देशबन्धु)। सरस्वती शिशु मंदिर तिलकनगर में वैदिक गणित और विज्ञान मॉडल प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं। शिशु , बाल , किशोर और तरुण वर्ग में आयोजित इन सभी प्रतियोगिताओं ने दोनों विषयों में बाल प्रतिभाओं ने गजब का प्रदर्शन किया। यदि इनको सही मार्गदर्शन मिला तो यह भविष्य में इन दोनों विश्व में वैज्ञानिक बन सकते हैं। गणित और विज्ञान मनुष्य जीवन के दो महत्वपूर्ण विषय माने गए हैं जिन पर मानव सभ्यता का विकास आधारित है। स्कूल में आयोजित छोटे बच्चों ने चंद्रयान मिशन 3 हाइड्रो पावर प्लांट वर्षा जल संरक्षण सुरक्षित यातायात जैसे महत्वपूर्ण तत्कालीन विषयों पर आधारित रोचक मॉडल बनाए। उसे महीने पहले कोरोमंडल एक्सप्रेस मालगाड़ी और अन्य एक्सप्रेस ट्रेन की आपस में भिड़ंत को बखूबी से मॉडल में दिखाया गया था। रेलवे के द्वारा भविष्य में इस तरह की दुर्घटनाओं से बचने के लिए क्या उपाय किए जा रहे हैं। सुरक्षा संबंधी सेंसर प्रणाली और चलती हुई ट्रेन को ऐसी आशंका होने पर रोक दिए जाने की तकनीकी को भी शानदार तरीके से प्रदर्शित किया गया था। गणित में समभुज बहुभुज जैसी विभिन्न आकृतियों के गुणधर्म और विविध आकृतियों के क्षेत्रफल और आयतन पर आधारित ऐसे मॉडल बनाए गए थे जिनको देखते ही साथ बच्चों को कम समय में अधिक से अधिक गणित का ज्ञान आसानी से दिया जा सकता है। विजेंद्र पांडेय ने मानव हृदय की क्रियाविधि और ग्रेविटी बैटरी के मॉडल ने लोगों को विशेष आकर्षित किया। परिणाम वैदिक गणित में गणित मॉडल प्रश्न मंच प्रयोगात्मक पत्र वाचन की बाल , किशोर , तरुण वर्ग की विभिन्न प्रतियोगिताओं में ममता जायसवाल , अंश मिश्रा , अथर्व यादव , खुशी शर्मा , वैभवी देवांगन , संस्कार कठौती , मयंक दास , सारिका साहू , प्रिया सोनी , नित्या शर्मा , दिव्यांशु देवांगन , विक्की कुमार तेजस सोमवार , अंकित कुमार वैष्णव , चंद्रकांत श्रीवास लिली शर्मा ने पुरस्कार प्राप्त किया। इन सभी को व्यवस्थापक डा. भुवनसिंह राज सहव्यवस्थापक बैजनाथ राय ने प्रशस्ति पत्र मेडल देकर उत्साह वर्धन किया। शिक्षक में ज्योति साहू, भरत श्रीवास , निधि अवस्थी, नवलकिशोर सिंह, राकेश साहू , समता देवांगन , सुदर्शन पटेल, भारती पांडेय , अनुपम दुबे, आदि का योगदान उल्लेखनीय रहा।

महुआ शराब के साथ महिला व युवक गिरफ्तार

बिलासपुर , 16 सिंतबर (देशबन्धु)। पुलिस अधीक्षक बिलासपुर के द्वारा अवैध नशे के कारोबार तथा नशे से निजात हेतु सभी थानो को अभियान चलाकर अवैध नशे पर लगातार कार्यवाही करने निर्देशित किया गया है। इसी तारतम्य में अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक ग्रामीण राहुल देव शर्मा एवं अनुविभागीय पुलिस अधीकारी कोटा सिद्धार्थ बघेल के मार्गदर्शन में थाना रतनपुर पुलिस द्वारा क्षेत्र में हो रहे अवैध नशे के खिलाफ धर पकड़ अभियान लगातार चलाया जा रहा है। कि आज ग्राम बिरगहनी रतनपुर में संतोष कुमार गंर्धव के द्वारा अवैध शराब बेचने की सूचना पर मौके पर तस्दीक कार्यवाही हेतु संतोष कुमार गंर्धव पिता स्व0 घासीराम गंर्धव के घर में दबिश दिया संतोष कुमार गंर्धव के बाडी में 20 लीटर वाली प्लास्टिक के डिब्बा में 14 लीटर कच्ची महुआ शराब बरामद किया । और वंही ग्राम जाली में संगीता नेताम नामक महिला घर में भारी मात्रा में बिक्री हेतु शराब रखने की सूचना पर थाना महिला बल के साथ ग्राम जाली संगीता नेताम के घर में दबिश देकर तस्दीक किया जो संगीता नेताम के घर से 06 नग प्लास्टिक की 15 लीटर वाली जेरिकेन में 90 लीटर कच्ची महुआ शराब तथा 05 नग 10 लीटर वाली जेरिकेन में 50 कि.ग्रा. महुआ लहान को जप्त कर दोनो आरोपीयो के विरूद्ध धारा 34(2) आबकारी अधिनियम के तहत कार्यवाही कर न्यायिक रिमांड पर भेजा गया। थाना रतनपुर पुलिस द्वारा नशे के विरूद्ध लोगो में जागरूकता तथा अवैध नशे के कारोबारियों पर कार्यवाही जारी है।

रेलवे अपर महाप्रबंधक ने स्वच्छता पखवाड़ा का किया शुभारंभ

दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे में स्वच्छता पखवाड़ा पर निकाली प्रभात फेरी

बिलासपुर, 16 सिंतबर (देशबन्धु)। भारतीय रेलवे द्वारा स्वच्छ-रेल स्वच्छ-भारत के तहत दिनांक 16 सितम्बर से 02 अक्टूबर' तक स्वच्छता-पखवाडा का आयोजन किया जा रहा है । जोनल मुख्यालय में प्रथम दिन आज दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे अपर महाप्रबंधक विजय कुमार साहू ने सभी विभागाध्यक्ष को स्वच्छता की शपथ दिलाईं गई । इस शपथ समारोह में विभागाध्यक्षो एवं अधिकारियों, कर्मचारियो बड़ी संख्या उपस्थित थे । ज़ोनल मुख्यालय के साथ साथ तीनों रेल मंडलो में भी स्वच्छता की शपथ दिलाईं गई ।

16 सितम्बर से 02 अक्टूबर तक आयोजित स्वच्छता पखवाडा में रेल यात्रियों से एवं यात्रा के दौरान मेरी सीट मेरा डब्बा अभियान के अंतर्गत साफ-सफाई एवं स्वच्छता बनाए रखने का विशेष आह्वान किया जाएगा । इस स्वच्छता पखवाडा में दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे के सभी स्टेशनों तथा गाडियों में प्रत्येक दिवसों के थीम के अनुसार विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन किया जा रहा है । 16 को स्वच्छ शपथ और स्वच्छ जागरूकता, 17-09-23 को स्वच्छ संवाद, 18 तथा 19-09-23 को स्वच्छ स्टेशन, 20 तथा 21-09-23 को स्वच्छ रेल गाड़ी, 22-09-23 को स्वच्छ पटरी, 23-09-23 को स्वच्छ रेल परिसर 24 तथा 25-09-23 को स्वच्छ आहार, 26-09-23 को स्वच्छ नीर, 27-09-23 को स्वच्छ जलाशय एवं पार्क, 28-09-23 को स्वच्छ प्रसाधन एवं पर्यावरण, 29-09-23 को स्वच्छ स्पर्धा (प्रतियोगिता) , 30-09-23 को सिंगल यूज प्लास्टिक पर प्रतिबंध, 01-10-23 को स्वच्छता कार्यों की समीक्षा एवं दिनांक 02-10-23 को गांधी जयंती स्वच्छता ही सेवा थीम पर कार्य किए जाएंगे । आज स्वच्छता पखवाडा का शुभारंभ महाप्रबंधक कार्यालय से प्रात: 07.00 बजे प्रभात फेरी निकालकर की गई । यह प्रभात फेरी महाप्रबंधक कार्यालय, डीआरएम ऑफिस से बिलासपुर रेलवे स्टेशन तक निकाली गयी ।

इस प्रभात फेरी में स्लोगन एवं पोस्टर के माध्यम से स्वच्छता जागरूकता का संदेश देते हुए बिलासपुर रेलवे स्टेशन में समाप्त हुई । प्रभातफेरी में अपर महाप्रबंधक विजय कुमार साहू, अपर मंडल रेल प्रबंधक, सहित सभी विभागाध्यक्ष, मुख्यालय एवं मंडल के अधिकारीगण, सैकडों की संख्या में कर्मचारीगण, नागरिक सुरक्षा दल की टीमों ने भाग लिया । स्वच्छता पखवाडा के शुभारंभ अवसर पर सभी मंडल के सहित सभी प्रमुख स्टेशनों एवं रेलवे कालोनियों में भी प्रभातफेरी निकालकर कालोनियों के निवासियों एवं यात्रियों को स्वच्छता जागरूकता हेतु प्रेरित किया गया। साथ ही स्वच्छता शपथ समारोह का आयोजन कर स्वयं एवं अन्य लोगों को स्वच्छता के प्रति जागरूक करने एवं साल 100 घंटा श्रम दान करते हाये आसपास के माहौल को स्वच्छ रखना एवं आपने साथ 100 अन्य व्यक्तियों को भी स्वच्छ के लिए प्रेरित करने की शपथ ली गयी । बिलासपुर स्टेशन में स्वच्छ जागरूकता थीम पर स्काउट-गाइड के बच्चों द्वारा नुक्कड-नाटक की जीवंत प्रस्तुति से यात्रियों को कचरा फैलाने अथवा गंदगी के दुष्परिणामों के बारे में बताकर स्वच्छता जागरूकता का संदेश दिया गया । मंडल के ब्रजराजनगर, रायगढ, कोरबा, चांपा, अनूपपुर, शहडोल, अम्बिकापुर, मनेन्द्रगढ, उमरिया सहित सभी प्रमुख स्टेशनों एवं रेलवे कालोनियों में प्रभातफेरी निकालकर कालोनियों के निवासियों एवं यात्रियों को स्वच्छता जागरूकता हेतु प्रेरित किया गया । रायपुर रेल मंडल में भी स्वच्छता पखवाड़ा अभियान के अंतर्गत आज मंडल रेल प्रबंधक संजीव कुमार, द पू म रे रायपुर एवं नागपुर रेल मण्डल में स्वच्छता पखवाड़ा अभियान के अंतर्गत प्रथम दिन अपर मंडल रेल प्रबंधक, द पू म रे नागपुर ने उपस्थित सभी अधिकारियों व रेल कर्मियों को स्वच्छता के प्रति शपथ दिलाई कि न गंदगी करेंगे न ही किसी और को गंदगी करने देगे । तीनों रेल मंडलो में अधिकारीगण तथा रेल कर्मियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया तथा विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन किया गया

सेपको कंपनी के 3 चीनी अधिकारियों की याचिका खारिज

कोरबा, 16 सितंबर (देशबन्धु)। 14 साल 23 सितंबर 2009 को बालको में हुए चिमनी हादसे के मामले में काईकोर्ट ने सेपको कंपनी के 3 चीनी अधिकारियों की याचिका खारिज कर दी है। तीनों अधिकारियों ने कोरबा एडीजे कोर्ट द्वारा आरोप तय करने के खिलाफ हाईकोर्ट में क्रिमिनल रिवीजन लगाई थी।

कोर्ट ने सेपको के जिम्मेदार अधिकारियों के खिलाफ जिला कोर्ट में मामला चलाने का भी आदेश दिया है। ध्यान रहे कि कोर्ट ने धारा 304 और 201 के तहत आरोप निर्धारित किया है, जिसमें आरोपियों पर जानबूझकर जान जोखिम वाले काम करने और साक्ष्य छिपाने का आरोप तय किया गया है। हाईकोर्ट में शासन की ओर से डिप्टी एडवोकेट जनरल श्रीमती मधुनिशा सिंह ने पैरवी की।

ज्ञात हो कि बालको में निर्माणाधीन 1200 मेगावाट विद्युत संयंत्र के लिए 275 मीटर ऊंचाई की दो चिमनियों का निर्माण होना था। इनमें से एक का निर्माण पूर्ण हो चुका था। 23 सितंबर 2009 को बारिश के दौरान बालको प्लांट में निर्माणाधीन 240 मीटर ऊंची चिमनी ढह गई थी। घटना में 40 मजदूरों की मौत हुई थी। चिमनी 1200 मेगावाट पॉवर प्लांट के लिए बन रही थी। पुलिस ने प्रारंभिक जांच के बाद बालको, जीडीसीएल, सेपको के जिम्मेदार अधिकारियों के खिलाफ अपराध दर्ज कर उनकी गिरफ्तारी भी की। इसके बाद एडीजे कोर्ट ने 13 दोषियों के खिलाफ आरोप तय किए हैं। इनमें से चीनी ठेका कंपनी सेपको के प्रोजेक्ट मैनेजर वू छूनान, ल्यू जॉक्सन, वांग क्यूंग शामिल हैं।

धारा 304 को 304 ए में बदलने की याचिका

मामले में पुलिस ने भी कोर्ट में चालान पेश कर दिया है। इसमें बालको सहित चीनी ठेका कंपनी सेपको, उप ठेका कंपनी जीडीसीएल और एनसीसीबीएस के अधिकारियों पर भारतीय दण्ड विधान की धारा 304, जानबूझकर ऐसा कृत्य करना जिससे किसी की मृत्यु हो सकती हो और धारा 201 साक्ष्य छुपाने का आरोप लगाया गया था। इस पर आरोपियों ने धारा 304 को 304 ए, गैर इरादतन हत्या में बदलने के लिए याचिका दाखिल की थी। एडीजे कोर्ट ने आरोपियों के आवेदन को नामंजूर करते हुए सभी के खिलाफ धारा 304 और 201 के तहत आरोप निर्धारित किया। एडीजे कोर्ट के इसी फैसले के खिलाफ हाईकोर्ट में अपील की गई थी जो खारिज कर दी गई।

सार-संक्षेप

श्रमदान के साथ स्वच्छता ही सेवा पखवाड़ा की शुरुआत

कोरबा, 16 सितंबर (देशबन्धु)। युवा कार्यक्रम एवं खेल मंत्रालय भारत सरकार के द्वारा 15 सितंबर से 2 अक्टूबर तक स्वच्छता ही सेवा अभियान के माध्यम से स्वच्छ, स्वस्थ व नवीन भारत के निर्माण को जन आंदोलन के रूप में मनाते हुए समर्पित सेवा के लिए देशवासियों को प्रेरित करना है।

इसी कड़ी में नगर पालिक निगम के संयोजकत्व में स्वच्छता दौड़, श्रमदान तथा स्वच्छता शपथ का कार्यक्रम किया गया। महापौर राजकिशोर प्रसाद, सभापति श्याम नारायण सोनी तथा आयुक्त सुश्री प्रतिष्ठा ममगाई ने कोसाबाड़ी चौक पर पूर्व प्रधानमंत्री लाल बहादुर शास्त्री की प्रतिमा पर माल्यार्पण कर स्वच्छता दौड़ को रवाना किया। महाविद्यालयों व विद्यालयों के राष्ट्रीय सेवा योजना, एनसीसी व स्काउट गाइड के स्वयंसेवकों व अधिकारियों ने भाग लिया। सार्वजनिक स्थानों पर स्वच्छता को बढ़ावा देने, शौचालयों के उपयोग से शहर को खुले में शौच मुक्त बनाने, गीले व सूखे कचरे के पृथक-पृथक संग्रहण के माध्यम से रिड्यूस रिसाइकल, रियूस को बढ़ावा देने हेतु युवाओं ने नारे लगाए। महाराणा प्रताप चौक के पास मेला ग्राउंड में स्वयंसवकों ने सिंगल यूज़ प्लास्टिक संग्रहण हेतु श्रमदान किया। राजस्व मंत्री ने भी श्रमदान में भाग लेकर युवाओं व सभी स्वच्छाग्रहियों का उत्साहवर्धन किया। इस अवसर पर अपर आयुक्त खजांची कुम्हार, स्वच्छता अधिकारी डॉ. संजय तिवारी, वरिष्ठ अभियंता मनोरंजन सरकार, गौरव सिंह, स्वयंसेवक जयप्रकाश पटेल, मनीष चंद्रा, राजेंद्र कुमार यादव, सनीराव जगताप, चमन पटेल, देवांश कुमार, वर्णिता, सीमा बाखला, पूजा गुप्ता, घनश्याम शाह, मनीष कंवर, मनोरमा पंडित, चंद्रमुखी पाण्डेय, अभिषेक कर्ष, विशाल कुमार का योगदान रहा।

सप्तदेव मंदिर में भादी अमावस्या उत्सव पर हुआ मंगलपाठ

कोरबा, 16 सितंबर (देशबन्धु)। सप्तदेव मंदिर में शुक्रवार को भादी अमावस्या उत्सव धूमधाम से मनाया गया। संगीतमय मंगलपाठ में 200-250 पंजीकृत मंगलपाठी बहनों ने अपने पूरे परिधान नथ, चूड़ा, चुनरी एवं सुहाग पिटारी के साथ कार्यक्रम में उपस्थित होकर एक स्वर में लयबद्ध होकर मंगलपाठ किया। कोलकोता के अनिल लाटा एंड पार्टी ने संगीतमय मंगलपाठ किया। इस अवसर पर मंदिर में बड़ी संख्या में भक्तगण उपस्थित थे जिन्होंने कार्यक्रम का पुण्य लाभ अर्जित किया। कार्यक्रम विराम पश्चात महाआरती व भंडारा में मंगलपाठियों के साथ-साथ सैंकड़ों की संख्या में भक्तों ने प्रसाद ग्रहण किया। प्रमुख ट्रस्टी अशोक मोदी ने बताया कि हमारे संस्कार, संस्कृति और सनातन धर्म की रक्षा के लिये इस तरह के आयोजन अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। हमें आने वाली पीढ़ी को इस बात को अवश्य रूप से ध्यान दिलाते रहना चाहिये कि समाज में सदैव इस प्रकार के धार्मिक कार्यों के निरंतर किये जाने की आवश्यकता है अन्यथा संस्कार, संस्कृति और हमारा धर्म केवल हम तक ही सीमित रह जायेगा।

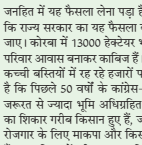

मोटरसाइकिल चोर को ग्रामीणों ने पकड़ा

कोरबा, 16 सितंबर (देशबन्धु)। मोटरसाइकिल की चोरी कर भाग रहे चोरों को तानाखार के पास ग्रामीणों ने पकड़ कर जमकर खबर ली। एक चोर मौका देखकर फरार हो गया वहीं सूचना पर 112 की टीम मौके पर पहुंची और चोर को पकडक़र कटघोरा पुलिस के सुपुर्द किया। बताया गया कि कुसमुंडा गेवरा बस्ती निवासी धर्म सिंह ने थाना कुसमुंडा में स्प्लेंडर मोटरसाइकिल क्रमांक सीजी-12बीके-0773 के चोरी होने की रिपोर्ट दर्ज कराई थी। इस बीच ग्रामीणों को सूचना मिली कि मोटरसाइकिल चोर तानाखार के पास देखे गए हैं जहां इन्हें मोटरसाइकिल सहित पकड़ लिया वहीं एक चोर मौका देखकर मोटरसाइकिल की चाबी लेकर फरार हो गया।

लाचार वन अमला, हाथी ने फिर मारा ग्रामीण को

कोरबा, 16 सितंबर (देशबन्धु)। जिले के कटघोरा वन मंडल के केंदई और पसान रेंज में हाथियों का तांडव जारी है। शुक्रवार की शाम करीब 7 बजे दंतैल हाथी ने एक और ग्रामीण को मौत के घाट उतार दिया। पिछले एक सप्ताह में यह चौथी घटना है जब हाथी के हमले से जनहानि हुई है। बता दें कि एक माह के भीतर हाथी के हमले से 5 लोगों की जान जा चुकी है वहीं हाथियों ने किसानों की सैकड़ों एकड़ खेतों में धान की फसल को भी तबाह कर दिया है। ग्रामीण अपनी जान बचाने रतजगा करने को मजबूर हैं वहीं वन विभाग के अधिकारी लाचार नजर आ रहे हैं।

पूर्व अधिग्रहित जमीन मूल किसानों को वापस लौटाएं - माकपा

कोरबा, 16 सितंबर (देशबन्धु)। शहरी निकाय क्षेत्रों में नजूल भूमि पर बसे लोगों को भूस्वामी पट्टा देने के कांग्रेस राज्य सरकार के निर्णय का स्वागत करते हुए मार्क्सवादी कम्युनिस्ट पार्टी ने पुनर्वास गांवों में बसाये गए भू-विस्थापित किसानों को भी पट्टा देने, पूर्व में अधिग्रहित भूमि को मूल भूस्वामी किसानों को लौटाने की मांग के साथ ही जिन विस्थापितों को पुनर्वास सुविधा नहीं मिली है, उन्हें बुनियादी सुविधाओं के साथ पुनर्वास देने की भी मांग की है।

जारी बयान में माकपा जिला सचिव प्रशांत झा ने कहा है कि पिछले दस सालों के लगातार संघर्ष का नतीजा है कि राज्य सरकार को जनहित में यह फैसला लेना पड़ा है। अब माकपा यह सुनिश्चित करेगी कि राज्य सरकार का यह फैसला केवल चुनावी फैसला बनकर न रह जाए। कोरबा में 13000 हेक्टेयर भूमि पर 1.75 लाख से ज्यादा गरीब परिवार आवास बनाकर काबिज हैं। इसमें कोरबा नगर निगम में शामिल कच्ची बस्तियों में रह रहे हजारों परिवार भी सम्मिलित हैं। इससे स्पष्ट है कि पिछले 50 वर्षों के कांग्रेस-भाजपा राज में उद्योगों के नाम पर जरूरत से ज्यादा भूमि अधिग्रहित की गई है। इस जबरन अधिग्रहण का शिकार गरीब किसान हुए हैं, जो आज भी मुआवजा, पुनर्वास और रोजगार के लिए माकपा और किसान सभा के झंडे तले संघर्ष कर रहे हैं। जब किसानों की जबरन अधिग्रहित भूमि पर काबिज लोगों को पट्टे दिए जा रहे हैं, तो पुनर्वास गांवों के हजारों भू-विस्थापित किसानों को पट्टों से वंचित रखना समझ के परे है।

बिजली, सुधरवाने पहुंचे जेई तो ग्रामीणों ने घेरकर पीटा

गांव में 3 दिनों से बंद है बिजली

डॉयल 112 के कर्मियों ने सुरक्षित निकालकर पहुंचाया थाना, शिकायत पर जांच जारी

कोरबा, 16 सितंबर (देशबन्धु)। ग्राम उमरेली में पिछले 3 दिन से बिजली गुल होने के कारण जब इसके सुधार के लिए अमले के साथ कनिष्ठ यंत्री गांव पहुंचे तो ग्रामीणों ने उनकी एक न सुनी। जेई अपनी बात कह भी नहीं पाए कि ग्रामीणों ने उन्हें घेर लिया और कॉलर पकडक़र मारपीट, धक्का-मुक्की शुरू कर दिया। करीब एक घंटे तक जेई को ग्रामीणों ने घेर रखा था।

जानकारी के अनुसार छत्तीसगढ़ राज्य विद्युत वितरण कंपनी के बरपाली सब स्टेशन के अंतर्गत आने वाले ग्राम उमरेली विकासखंड करतला में पिछले 3 दिनों से बिजली गुल थी। सुधार के लिए फॉल्ट पिछले दो-तीन दिनों से तलाशा जा रहा था। विद्युत विभाग के कर्मचारी इस काम में लगे हुए थे और सूचना पर बरपाली सब स्टेशन में पदस्थ जेई संदीप मानिकपुरी, लाइनमैन व स्टाफ के साथ 15 सितंबर को शाम करीब 4 बजे गांव पहुंचे थे। गांव पहुंचे जेई को देखकर ग्रामीणों का गुस्सा फूट पड़ा। चूंकि कल ही गांव में बीदर का त्यौहार भी मनाया जा रहा था इसलिए अधिकांश लोग नशे में भी थे। इनके द्वारा जेई को घेर कर उनके साथ हाथ-मुक्का से मारपीट की जाने लगी और कॉलर पकडक़र झूम झटकी भी किया गया। जेई को गिरा देख लाइनमैन और स्टाफ ने बचाव किया तो इन्हें भी घेर लिया गया। इस दौरान जेई एक क्लीनिक में घुसकर अपनी जान बचाई और किसी तरह इसकी सूचना डायल 112 को दिया। बरपाली में तैनात 112 की टीम तत्काल मौके पर पहुंची। मौके पर करीब 100 से 200 की संख्या में ग्रामीण इकट्ठा थे। 112 के कर्मियों को देखकर ग्रामीण और उग्र होने लगे थे कि जेई को लेकर जाने नहीं दिया जाएगा। इस बीच विद्युत सुधार कार्य भी जारी था और ग्रामवासियों आश्वस्त किया जाता रहा कि जल्द ही बिजली आ जाएगी लेकिन ग्रामीण मानने को तैयार नहीं थी। आखिरकार 112 के कर्मियों आरक्षक हरमेश खूंटे व चालक कोमल साहू ने काफी सूझबूझ के साथ जेई को ग्रामीणों के बीच से बाहर निकाला। इस दौरान धक्का-मुक्की में कर्मियों का मोबाइल भी गिर पड़ा था जो बाद में मिल गया। जेई को उरगा थाना पहुंचाया गया जहां उन्होंने मामले की शिकायत किया है।

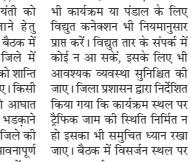

पंडाल-बैनर, पोस्टर लगाने, अवैध विद्युत कनेक्शन पर होगी कार्रवाई

कोरबा, 16 सितंबर (देशबन्धु)। कलेक्टर सौरभ कुमार के मार्गदर्शन तथा एसी उदय किरण, जिला पंचायत सीईओ श्री विश्वदीप, अपर कलेक्टर प्रदीप साहू, दिनेश नाग, अपर आयुक्त खजांची कुम्हार, तहसीलदार अमित केरकेट्टा की उपस्थिति में जिला स्तरीय शांति समिति की बैठक कलेक्टोरेट सभा कक्ष में आयोजित की गई।

बैठक में 19 सितंबर को गणेश चतुर्थी और 28 सितंबर को ईद-ए-मिलाद (मिलाद-उन-नबी), अनंत चतुर्दशी, भगत सिंह जयंती को शांति पूर्वक मनाए जाने हेतु आवश्यक चर्चा की गई। बैठक में निर्णय लिया गया कि जिले में हमेशा की तरह सभी पर्व को शान्ति और सौहार्दपूर्ण मनाया जाए। किसी के धार्मिक भावनाओं को आघात पहुचाने और समाज को भडक़ाने वाले कार्य न किए जाए। जिले की शांति व्यवस्था और सदभावनापूर्ण माहौल को खराब करने वालों पर कड़ी कार्यवाही का निर्णय लिया गया। शांति समिति की बैठक में गणेश प्रतिमा के विसर्जन को लेकर समितियों को निर्देशित किया गया कि विसर्जन से पूर्व वे नियमानुसार सूचना और अनुमति अपने क्षेत्र के एसडीएम से लेवें। इस दौरान विसर्जन रुट और स्थल की जानकारी भी दें, प्रतिमा की ऊँचाई भी बहुत ज्यादा न हो, ताकि जिला प्रशासन द्वारा आवश्यक व्यवस्था सुनिश्चित की जा सकें।

जिला प्रशासन द्वारा निर्देशित किया गया कि आवागमन वाले सडक़ों पर पंडाल न लगाई जाए। मुख्य मार्ग में बैनर पोस्टर लगाने पर कार्यवाही की जाएगी। किसी भी कार्यक्रम या पंडाल के लिए विद्युत कनेक्शन भी नियमानुसार प्राप्त करें। विद्युत तार के संपर्क में कोई न आ सकें, इसके लिए भी आवश्यक व्यवस्था सुनिश्चित की जाए। जिला प्रशासन द्वारा निर्देशित किया गया कि कार्यक्रम स्थल पर ट्रैफिक जाम की स्थिति निर्मित न हो इसका भी समुचित ध्यान रखा जाए। बैठक में विसर्जन स्थल पर साफ सफाई, प्रकाश व्यवस्था, तैराक-गोताखोरों की व्यवस्था, अग्निशमन, अस्पताल में आपात स्थिति के लिए चिकित्सक की उपलब्धता सुनिश्चित करने के निर्देश दिए गए। इसी तरह ईद-ए-मिलाद के अवसर पर मुस्लिम समाज द्वारा जुलूस निकालने के संबंध में भी आवश्यक निर्देश दिए गए हैं। बैठक में समिति के सदस्य उपस्थित थे।

घर के सामने खड़ी 2 बोलेरो पार, चोरों पर जुर्म दर्ज

कोरबा-कटघोरा, 16 सितंबर (देशबन्धु)। कटघोरा थाना क्षेत्र से 3 दिन के भीतर दो बोलेरो की चोरी हो गयी। दोनों मामलों में अपराध दर्ज कर पता-तलाश किया जा रहा है। जानकारी के अनुसार चन्द्रशेखर श्रीवास पिता स्व. जोगिंदर प्रसाद श्रीवास 35 वर्ष ग्राम लखनपुर (ललमटिया) थाना कटघोरा निवासी जेंजरा डी.ए.वी. स्कूल एवं ढेलवाडीह बीकन स्कूल के बच्चों को लाने-ले जाने का काम करता है। वह अपनी बोलरो क्र. सीजी-12आर-3154 में बच्चों को घर छोडक़र 14 सितंबर की शाम 3 बजे अपने घर के सामने खड़ी कर लॉक किया था। रात तकरीबन 10 बजे खाना खाकर दरवाजा बंद करके घर अंदर सो गया। 15 सितंबर को तडक़े 4.30 बजे लघुशंका करने उठा तो घर के बाहर 4 लाख रुपये कीमती बोलरो नहीं था। पता तलाश किया तो पता नहीं चला। इससे पहले कन्हैया लाल यादव पिता स्व. नारायण प्रसाद उम्र 45 साल साकिन लखनपुर (खुटरापारा) की स्वयं के उपयोग के लिए रिखी कुमार यादव के नाम पर खरीदी गई बोलेरो सीजी-12 एजी-0453 को 11-12 /09/23 के मध्य रात 9 से सुबह 6 बजे के बीच कोई घर के बगल से चोरी कर लिया। दोनों मामलों में धारा 379 के तहत अलग-अलग अपराध दर्ज किया गया है।

टैंकर पलटा तो डीजल भरने उमड़ पड़े लोग

कोरबा, 16 सितंबर (देशबन्धु) सुबह डीजल से भरा एक टैंकर क्रमांक सीजी-07सीडी-4728 बीच सडक़ पर अनियंत्रित होकर पलटा गया। टैंकर पलटने से सडक़ पर डीजल बहने लगा तो आसपास की बस्ती के लोग बाल्टी और डब्बों में उसे भरने के लिए दौड़ पड़े। यहां लोगों का हुजूम उमड़ पड़ा। दुर्घटना में टैंकर के चालक को मामूली चोंटे आई हैं। गेवरा हेलीपेड से ठीक पहले मोड़ के पास लगभग 10 बजे टैंकर के पहिए सडक़ किनारे बने गड्ढे में जा समाए जिससे टैंकर अनियंत्रित होकर सडक़ किनारे पलट गया। टैंकर के पलटते ही डीजल सडक़ पर बहने लगा जिसके बाद गेवरा खदान से कोयला लदान के लिए लाइन लगाकर खड़े हुए अन्य ट्रक के चालक व परिचालक अपने-अपने वाहनों से बाल्टी निकालकर दौड़ते हुए पलटे हुए वाहन के पास आए और डीजल भरकर भागने लगे। देखते ही देखते डीजल लूटने वालों की भीड़ लग गई। ट्रक पलटने की सूचना ड्राइवर ने अपने मालिक को दी जिसके बाद मालिक ने तत्काल घटनास्थल के आसपास रहने वाले अपने परिचितों को घटना की जानकारी देते हुए मौके पर पहुंचने को कहा।

सामान्य सभा में 4 करोड़ से अधिक के विकास कार्यों का अनुमोदन

कोरबा, 16 सितंबर (देशबन्धु)। जिला पंचायत अध्यक्ष श्रीमती शिवकला छत्रपाल सिंह कंवर की अध्यक्षता में गुरुवार को जिला पंचायत के सभागार में हुई सामान्य सभा की बैठक में 15वां वित्त आयोग अनुदान वित्तीय वर्ष 2023-24 हेतु जिला पंचायत की सामान्य सभा के द्वारा गाइडलाइन के अनुसार 4 विषयों-स्वच्छता, पेयजल, शिक्षा एवं अधोसंरचना अंतर्गत कुल 4 करोड़ 32 लाख 97 हजार रुपए के विकास कार्यों का प्रस्ताव सर्व सम्मति से अनुमोदित किया गया। इसके साथ ही जिला पंचायत अध्यक्ष द्वारा विभागीय कार्यों की समीक्षा करते हुए कार्यों में प्रगति लाने के निर्देश दिए गए।

विश्वदीप सीईओ जिला पंचायत की उपस्थिति में हुई सामान्य सभा की बैठक मे पूर्व निर्धारित एजेंडा अनुसार वन मंडल कोरबा एवं कटघोरा, महिला एवं बाल विकास विभाग तथा आदिवासी विकास विभाग के कार्यों की समीक्षा की गई। जिला पंचायत अध्यक्ष श्रीमती शिवकला कंवर ने विभागों के कार्यों में प्रगति लाने के निर्देश दिए। जिला पंचायत सदस्यों ने जनहित के विषयों पर चर्चा करते हुए शासन की योजनाओं का लाभ अधिकतम ग्रामीणों तक पहुंचाने की बात कही। सामान्य सभा की बैठक में जिला पंचायत अध्यक्ष श्रीमती शिवकला कंवर, जिला पंचायत उपाध्यक्ष श्रीमती रीना जायसवाल, जिला पंचायत सदस्य गणराज सिंह कंवर, प्रेमचंद पटेल, संदीप कंवर, रामनारायण उरैती, श्रीमती गोदावरी राठौर, श्रीमती रामेश्वरी जगत, श्रीमती नीलिमा धृतलहरे, श्रीमती प्रीति कंवर, श्रीमती कमला देवी राठिया,सांसद प्रतिनिधि प्रमोद राठौर सहित विभागीय अधिकारी-कर्मचारी उपस्थित थे।

हादसे में बाइक चालक की मौत

कोरबा, 16 सितंबर (देशबन्धु)। पाली थाना क्षेत्र के फोरलेन में तेज रफ्तार टैंकर के चालक ने तेजी एवं लापरवाही पूर्वक वाहन चलाते हुए बाइक को चपेट में ले लिया। हादसे में बाइक चालक की मौके पर ही दर्दनाक मौत हो गई जबकि दूसरा व्यक्ति गंभीर रूप से घायल हो गया है। उसे उपचार के लिए स्थानीय अस्पताल में दाखिल कराया गया है। दुर्घटना होते ही लोगों का आक्रोश फूट पड़ा और विभिन्न मांगों को लेकर लोगों ने कटघोरा-पाली फोरलेन मार्ग में चक्का जाम कर दिया।

ठेका कर्मचारियों का हो जनरल प्रमोशन, ओपीडी सहित पूर्ण चिकित्सा सुविधा मिले

बालको की मजदूर विरोधी नीतियों पर एटक का प्रदर्शन

कोरबा, 16 सितंबर (देशबन्धु)। एल्युमिनियम इंप्लाइज यूनियन (एटक) बालको के द्वारा परसाभाठा में एक दिवसीय धरना प्रदर्शन किया गया। बालको प्रबंधन की मजदूर विरोधी नीतियों के खिलाफ यह धरना प्रदर्शन आम सभा में परिणित हो गया। महासचिव सुनील सिंह ने कहा कि प्रबंधन को समस्याओं को लेकर पत्र दिया गया था जिसका निराकरण नहीं किया गया। बालको प्रबंधन द्वारा लगातार श्रमिकों का शोषण किया जा रहा है। ठेका कर्मचारियों का एसटीएस-1 वर्ष 2017 में प्रबंधन के साथ कई बैठक होने के बाद एक ऐतिहासिक वेतन समझौता हुआ था। ठेका कर्मचारियों का सालाना इंक्रीमेंट 12 प्रतिशत था और प्रमोशन पॉलिसी भी बना हुआ था लेकिन किसी भी श्रमिकों का प्रमोशन नहीं हुआ है। प्रबंधन से मांग है कि ठेका कर्मचारियों का जनरल प्रमोशन किया जाए तथा श्रमिकों को बालको चिकित्सालय में ओपीडी सहित पूर्ण चिकित्सा सुविधा मुहैया कराई जाए। कारखाने के आसपास की श्रमिक बस्तियां की महिला पुरुषों को रोजगार दिया जाए एवं जिन कर्मचारियों का प्लांट में काम करते-करते आकस्मिक मृत्यु हो गई या ऐसी बीमारी से ग्रसित हो गए जो कभी ड्यूटी नहीं जा पा रहे है उनके परिवार के एक सदस्य को नौकरी मिलना चाहिए। आमसभा को संगठन के अध्यक्ष एस के सिंह, संगठन सचिव धर्मेंद्र तिवारी, सहायक महासचिव धर्मेंद्र सिंह, कोषाध्यक्ष पी के वर्मा तथा राज्य एटक के सचिव एम एल रजक ने भी संबोधित किया।

प्रतिबद्धता व समर्पण को अपनाकर मिलती है सफलता-एमडी

सीएसईबी पश्चिम में याद किए गए मोक्षगुण्डम

कोरबा, 16 सितंबर (देशबन्धु)। भारत रत्न सर मोक्षगुण्डम विश्वेश्वरैय्या का जन्मदिवस अभियंता दिवस के रूप में रविन्द्र सांस्कृतिक भवन कोरबा पश्चिम में मुख्य अतिथि संजीव कटियार प्रबंध निदेशक की उपस्थिति में एवं विशिष्ट अतिथिगण एसके बंजारा, कार्यपालक निदेशक मड़वा, संजय शर्मा मुख्य अभियंता उत्पादन, हेमंत सचदेवा, विनय दुबे रायपुर, अनिल श्रीवास्तव, अनिल धर की उपस्थिति और सेवानिवृत्त अभियंताओं की मौजूदगी में पॉवर कंपनीज के युवा अभियंताओं की सहभागिता व अध्यक्ष अभियंता संघ राजेश कुमार पाण्डेय की उपस्थिति में मनाया गया।

इस अवसर पर सभी अभियंताओं ने मोक्षगुण्डम विश्वेश्वरैय्या के द्वारा किए गए उत्कृष्ट कार्यों को याद किया। उनके द्वारा स्थापित अभियांत्रिकीय मापदंडों पर गहन चर्चा कर विचार मंथन किया। वर्तमान परिपेक्ष्य में कंपनी के समक्ष भविष्य में आने वाली चुनौतियों एवं संभावनाओं पर अभियंताओं ने अपने विचार प्रस्तुत किए। डॉ. विश्वेश्वरैय्या के जीवन से सीख लेते हुए किसी भी कार्य को अनुशासन में रहकर और समय सीमा में पहले करना है। उनका जीवन समाज की बेहतरी के लिए समर्पित था। डॉ. विश्वेश्वरैय्या शतायु बने एवं अभियांत्रिकी में नए कीर्तिमान स्थापित किये। प्रदेश के मुख्यमंत्री भूपेश बघेल ने पावर कंपनी के अध्यक्ष प्रबंध निदेशक के कुशल मार्गदर्शन में छत्तीसगढ़ राज्य विद्युत उत्पादन कंपनी मर्यादित पूरे भारतवर्ष के स्टेट इलेक्ट्रिसिटी बोर्ड में केन्द्रीय विद्युत प्राधिकरण द्वारा जारी अंतरिम सूची में नंबर वन है और इसका कारण है कि मड़वा ताप विद्युत गृह ने पिछले कई महिनों में लगातार अच्छा प्रदर्शन किया है जिसका पूरा श्रेय मड़वा ताप विद्युत गृह के मुखिया एसके बंजारा एवं उनकी पूरी टीम के अभियंताओं को जाता है। प्रतिबद्धता और समर्पण दो ऐसे गुण है जिसे दिल से अपना कर किसी भी कार्य में सफलता हासिल की जा सकती है। उत्पादन कंपनियों के अभियंताओं में यह सभी गुण है जिसका प्रतिफल है कि छत्तीसगढ़ राज्य विद्युत उत्पादन कंपनी मर्यादित आज नंबर वन पर है।

विश्वेश्वरैय्या बैडमिंटन हाल का उद्घाटन

इस अवसर पर एसके कटियार प्रबंध निदेशक उत्पादन कंपनी ने मोक्षगुण्डम विश्वेश्वरैय्या बैडमिंटन हाल का उद्घाटन किया। उन्होंने कहा कि आज हमारी उत्पादन कंपनी 33 राज्य स्तरीय विद्युत उपक्रमों में प्रथम स्थान पर है। इसका श्रेय सभी अभियंताओं को जाता है। 2×660 मेगावाट सुपर क्रीटिकल ताप विद्युत परियोजना का शिलान्यास हो चुका है। जल्द ही मार्च-अप्रैल तक निविदा जारी कर कार्यादेश जारी किया जाएगा। 1200 मेगावाट की प्रस्तावित पम्प स्टोरेज बांगो परियोजना प्रक्रियाधीन है। मड़वा ताप विद्युत गृह में एक अन्य इकाई के प्रस्ताव के लिए डीपीआर पर कार्य जारी है जिसको पूर्ण होने पर छग सरकार की तरफ से प्रस्ताव प्रस्तुत करेंगे।

रिकार्ड किपिंग का समाधान है डिजिटलीकरण

पावर कंपनीज के अभियंताओं के कौशल विकास के लिए अभियंता संघ एक प्रशिक्षण कार्यक्रम प्रारंभ करने जा रहा है जिसकी शुरूआत अक्टूबर में होगी। आने वाले समय में रिकार्ड किपिंग सबसे बड़ी समस्या है जिसका समाधान है डिजिटलीकरण। इसके माध्यम से रिकार्ड का प्रबंधन सुगमता से किया जा सकेगा एवं रिकार्ड किपिंग में सम्मिलित मानव संसाधन को अन्य कार्यों में नियोजित किया जा सकेगा जिससे समय एवं संसाधन का समुचित उपयोग किया जा सकेगा।

सार-संक्षेप

नगर पालिका मनेन्द्रगढ़ में इंडियन स्वच्छता लीग 2.0 का शुभारंभ

मनेन्द्रगढ़ 16 सितंबर (देशबन्धु)। भारत सरकार द्वारा निकाय स्तर पर स्वच्छता ही सेवा 2023 अंतर्गत स्वच्छता अभियान, इंडियन स्वच्छता लीग एवं सफाई मित्र सुरक्षा शिविर के आयोजन हेतु प्राप्त निर्देशानुसार आज दिनांक 16 सितंबर को इंडियन स्वच्छता लीग का शुभारंभ नगर पालिका परिषद मनेन्द्रगढ़ में अध्यक्ष श्रीमती प्रभा पटेल द्वारा हरी झंडी दिखाकर 15 सितंबर से 2 अक्तूबर तक चलने वाले इंडियन स्वच्छता लीग 2.0 - स्वच्छता ही सेवा पखवाड़ा का शुभारंभ किया गया। साथ ही लोगों को स्वच्छता के प्रति रैली में माध्यम से जागरूक करते हुए नपा प्रांगण में सभी ने स्वच्छता शपथ ली इस अवसर पर सम्माननीय जनप्रतिनिधि पार्षदगण पप्पू हुसैन, श्यामसुंदर पोद्दार, श्रीमति गौरी केरकेट्टा, गंभीर सिंह, अबरार अहमद, इमरान खान के साथ समस्त पार्षदगण, नोडल अधिकारी नम्रता सिंह, स्वच्छता प्रभारी विजय मिश्रा, मुनताज अहमद, विनोद चतुर्वेदी, मो. अजीज, निकाय के अधिकारी कर्मचारीगण एवं स्वच्छता दीदियां, स्कूली बच्चे तथा बड़ी संख्या में आमजन उपस्थित रहे।

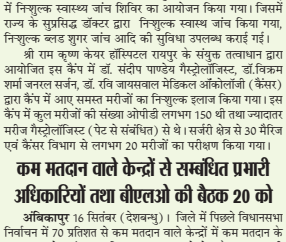

सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र मनेन्द्रगढ़ में हुआ नि:शुल्क जांच शिविर का आयोजन

मनेन्द्रगढ 16 सितंबर (देशबन्धु)। कलेक्टर नरेंद्र कुमार दुग्गा के निर्देशानुसार जिला स्वास्थ्य इकाई एवं रामकृष्ण केयर अस्पताल के सहयोग से 16 सितंबर 2023 को सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र मनेन्द्रगढ़ में निःशुल्क स्वास्थ्य जांच शिविर का आयोजन किया गया। जिसमें राज्य के सुप्रसिद्ध डॉक्टर द्वारा निःशुल्क स्वास्थ जांच किया गया, निःशुल्क ब्लड शुगर जांच आदि की सुविधा उपलब्ध कराई गई।

श्री राम कृष्ण केयर हॉस्पिटल रायपुर के संयुक्त तत्वाधान द्वारा आयोजित इस कैंप में डॉ. संदीप पाण्डेय गैस्ट्रोलॉजिस्ट, डॉ.विक्रम शर्मा जनरल सर्जन, डॉ. रवि जायसवाल मेडिकल ऑंकोलॉजी (कैंसर) द्वारा कैंप में आए समस्त मरीजों का निःशुल्क इलाज किया गया। इस कैंप में कुल मरीजों की संख्या ओपीडी लगभग 150 थी तथा ज्यादातर मरीज गैस्ट्रोलॉजिस्ट (पेट से संबंधित) से थे। सर्जरी क्षेत्र से 30 मैरिज एवं कैंसर विभाग से लगभग 20 मरीजों का परीक्षण किया गया।

कम मतदान वाले केन्द्रों से सम्बंधित प्रभारी अधिकारियों तथा बीएलओ की बैठक 20 को

अंबिकापुर 16 सितंबर (देशबन्धु)। जिले में पिछले विधानसभा निर्वाचन में 70 प्रतिशत से कम मतदान वाले केन्द्रों में कम मतदान के कारण जानने एवं शत प्रतिशत मतदान कराने हेतु केन्द्रवार प्रभारी अधिकारियों की नियुक्ति की गई है। प्रभारी अधिकारियों के सर्वेक्षण उपरांत केन्द्रवार कारणों के आधार पर कार्य योजना निर्मित कर शत् प्रतिशत मतदान हेतु क्रियान्वयन किया जाना है। कार्यों की समीक्षा एवं कार्ययोजना पर चर्चा हेतु 20 सितंबर 2023 को अपरान्ह 3.00 बजे से जिला पंचायत सभाकक्ष में बैठक सह कार्यशाला का आयोजन किया गया है। जिला पंचायत के मुख्य कार्यपालन अधिकारी एवं स्वीप के नोडल अधिकारी नूतन कुमार कंवर ने उक्त बैठक में सभी प्रभारी अधिकारियों एवं संबंधित बी.एल.ओ. की उपस्थित होने कहा है। बैठक में प्रभारी अधिकारी केन्द्रवार मतदान कम होने के कारण व वर्तमान निर्वाचन में शत प्रतिशत मतदान हेतु कार्य योजना व अब तक संपादित जागरूकता गतिविधियों की जानकारी के साथ उपस्थित होंगे। उन्होंने सभी संबंधित बीएलओ को गत विधानसभा में कम मतदान प्रतिशत रहने के कारण एवं उनका समाधान से संबंधित जानकारी के साथ उपस्थित होने कहा है।

बालिका से छेडछाड़ के आरोपी को तीन वर्ष की कड़ी कैद

रायगढ़ 16 सितंबर (देशबन्धु)। 14 वर्ष की बालिका से छेड़छाड के मामले में फास्ट टेऊक्र स्पेशल कोर्ट ने आज आरोपी को दोषी मानते हुए तीन वर्ष के कठोर कारावास व जुर्माने दंडित किया है। अभियोजन पक्ष के अनुसार मामला संक्षेप में इस प्रकार है कि पीड़िता 14 वर्ष की बालिका ने सिटी कोतवाली में रिपोर्ट दर्ज कराया कि 30 अक्टूबर की सुबह 5 बजे वह बाथरूम करने घर के बाहर गयी थी, तभी उसके मोहल्ले का लड़का शनि चैहान पिता अर्जुन चैहान 20 साल उससे छेड़छाड करने लगा और पकड़ने लगा। पीडिता के द्वारा विरोध करने और चिल्लाने पर उसके चाचा जब मौके पर पहुंचे तो आरोपी पीड़िता को धक्का देकर वहां से फरार हो गया। पीड़िता की आवाज सुनकर आस-पास के रहने वाले भी आये और पीड़िता तथा उसके परिजनों से मामले की रिपोर्ट कोतवाली थाने में करने की सलाह दी। जिसके बाद पीड़िता अपने पिता को लेकर थाने पहुंची। पीडिता की उक्त लिखित शिकायत के आधार पर थाना सिटी कोतवाली रायगढ में धारा 354 भारतीय दंड संहिता एवं धारा 12 अपराधों से बालकों का संरक्षण अधिनियम के तहत प्रथम सूचना रिपोर्ट प्रदर्श पी 2 पंजीबद्ध कर प्रकरण में विवेचना की कार्यवाही प्रारंभ की गयी। उक्त मामला न्यायालय में विचाराधीन रहने के दौरान फास्ट टेऊक्र स्पेशल कोर्ट में पहुंचा जहां दोनों पक्षों की सुनवाई पश्चात फास्ट टेऊक्र स्पेशल कोर्ट की विद्वान न्यायाधीश श्रीमती प्रतिभा वर्मा ने आरोपी को दोष सिद्ध मानते हुए अलग-अलग धाराओं में तीन वर्ष के कठोर कारावास तथा पांच-पांच सौ रूपये के अर्थदण्ड से दंडित किया है। अदालत के निर्णय में आरोपी के द्वारा जुर्माना न पटाने पर दो-दो माह का अतिरिक्त कारावास भुगताने की व्यवस्था की गई है।

करैत ने युवक को काटा , 112 ने बचाई जान

रायगढ़ 16 सितंबर (देशबन्धु)। घरघोड़ा थाना क्षेत्र के ग्राम कोसमपाली निवासी अशोक मांझी को जहरीले करैत साँप ने काट लिया था जिससे अशोक मांझी की हालत खराब हो रही थी , साँप के काटने की सूचना 112 को दी गई , घटना की सूचना को थाना प्रभारी शरद चंद्रा को अब अवगत कराया गया। थाना प्रभारी के निर्देश पर आर 645 बीरबल भगत चालक जनार सिंह मौके पर पहुँचे और पीड़ित अशोक मांझी को तत्काल नजदीक हॉस्पिटल कुडुमकेला में प्राथमिक उपचार कराया गया।

मंत्री अमरजीत भगत ने खिलाड़ियों को दी सौगात

अम्बिकापुर 16 सितंबर (देशबन्धु)। कैबिनेट मंत्री अमरजीत भगत ने शनिवार को दौरा कर खिलाड़ियों को नई सौगात दी। विकासखंड मैनपाट में मंत्री श्री भगत ने ग्राम सिकरिया में स्थानीय फुटबॉल स्पर्धा में शामिल होकर खिलाड़ियों की मांगों को पूरा कर उनकी हौसलाअफजाई की। इसी कड़ी में उन्होंने खेल महोत्सव के पोस्टर का विमोचन किया। इस दौरान उन्होंने कहा कि मुख्यमंत्री श्री भूपेश बघेल के नेतृत्व में छत्तीसगढ़ सरकार द्वारा हर वर्ग का ध्यान रखा जा रहा है और उनके कल्याण के लिए नई योजनाएं और कार्यक्रम संचालित किए जा रहे हैं। छत्तीसगढ़ सरकार द्वारा पारंपरिक खेलों और स्थानीय खेलों को बढ़ावा देने के छत्तीसगढ़िया ओलंपिक की शुरुआत की गई जिसका बेहतर परिणाम देखने को मिल रहा है। युवा और बच्चे इसमें बढ़ चढ़ कर भाग ले रहे हैं।उन्होंने कहा कि खेल प्रेमियों को मंच दिया जाएगा जिससे परम्परा और संस्कृति जीवित रहे। उन्होंने इस दौरान सीतापुर खेल महोत्सव पोस्टर का विमोचन किया। इसमें चार अलग-अलग खेल हैं, क्रिकेट, खो-खो, फुटबॉल और कबड्डी, हर खेल के लिए अलग-अलग विजेता इनाम राशि भी रखी गई है।

30 लाख की लागत से होगा खेल सुविधाओं का विस्तार

मंत्री श्री भगत ने प्रदेश के विकास कार्यों को जनता से साझा किया गया। स्थानीय खेल स्पर्धा में विजेताओं को इनाम प्रदाय किया। उन्होंने खिलाड़ियों की मांग को देखते हुए 30 लाख रुपए के निर्माण कार्यों की सौगात दी। मंत्री श्री भगत ने बतौर पुरस्कार खिलाड़ियों को प्रोत्साहन राशि दी, और कहा कि इससे खिलाड़ियों में उत्साह बढ़ेगा और खिलाड़ी खेल में बेहतर प्रदर्शन करेंगे। साथ ही बनेया स्टेडियम के लिये दिए 30 लाख रूपये से इन कामों को पूरा कराया जायेगा। इसमें स्टेज व शेड निर्माण के लिए 10 लाख रुपये, स्टेडियम की सीढ़ी व दर्शक दीर्घा के जीर्णोद्धार के लिए 10 लाख रुपये, खेल मैदान के समतलीकरण व विकास के लिए 10 लाख रुपए शामिल हैं। खिलाड़ियों ने मांग पूरी होने की खुशी में छत्तीसगढ़ शासन के प्रति आभार व्यक्त किया। इस दौरान मंत्री श्री भगत ने ग्राम रोपाखार में सामुदायिक भवन एवं कमलेश्वरपुर से बगनखीपारा के मध्य सुपलगा सड़क का भूमिपूजन किया।

भाजपा का महापौर के खिलाफ लाया गया अविश्वास प्रस्ताव ध्वस्त

21 में से मात्र 18 पार्षद पहुंचे थे सृजन

भाजपा नही जुटा पाई समर्थन

रायगढ़ 16 सितंबर (देशबन्धु)। नगर पालिक निगम में कांग्रेस की महापौर जानकी काटजू को लेकर लाया गया अविश्वास प्रस्ताव ध्वस्त हो गया। जिला कलेक्टर द्वारा सृजन कक्ष में वोटिंग के लिये दिये गए समय सीमा में भाजपा के 21 पार्षदों में से मात्र 18 पार्षद ही पहुंचे जबकि ऐन वक्त पर भाजपा की एक महिला भाजपा पार्षद पुष्पा निरंजन साहू कांग्रेस में शामिल हो गई थी और कांग्रेस के कोई भी पार्षद वहां नही पहुंचे।

बीते 31 अगस्त को बीजेपी नेता प्रतिपक्ष पूनम सोलंकी के द्वारा कलेक्टर को को दिया गया था, इसका प्रस्ताव को लेकर आज रायगढ़ के कलेक्ट्रेट के सभा कक्ष में इसका अविश्वास प्रस्ताव पर विशेष सम्मेलन आयोजित किया गया था। इस प्रक्रिया में कांग्रेस महापौर के अलावा सभी पार्षद उपस्थित नहीं हुए हैं। जानकारी के अनुसार कांग्रेस के सभी पार्षद जिले से बाहर चले गए थे। चूंकि कुछ दिन पहले आये पार्टी के अबर्जावर ने एक रणनीति के तहत कांग्रेस के सभी पार्षदों को आवश्यक दिशा निर्देश देते हुए पार्टी के अनुशासन के खिलाफ नही जानें की चेतावनी भी दी थी।

रायगढ़ निगम में कुल 48 वार्ड है जिसमें कांग्रेस के 26 पार्षद बीजेपी के 21 वही एक बीजेपी पार्षद की पूर्व में मौत हो जाने के कारण 47 पार्षद है। जिससे आज यह अविश्वास प्रस्ताव इसलिये गिर गया चूंकि भाजपा के 21 में से मात्र 18 पार्षद ही पहुंचे और इनमें कांग्रेस ने भाजपा के पार्षदों में सेंध लगाते हुए वार्ड नं. 34 की एक महिला भाजपा पार्षद को अपनी पार्टी में शामिल कराकर भाजपा को बडी चोट दे दी।

इस संबंध में जिला कलेक्टर तारण सिन्हा ने बताया कि रायगढ़ नगर निगम में महापौर के विरूद्ध अविश्वास प्रस्ताव का सम्मेलन बुलाया गया था। 11 बजे से सम्मेलन आरंभ की गई थी। सम्मेलन के दौरान कोरम पूरा होनें के पश्चात कार्यक्रम आगे बढाई गई लेकिन मौके पर उपस्थित किसी भी पार्षदो के द्वारा मतदान प्रक्रिया में भाग नही लिया गया। इसलिये अविश्वास प्रस्ताव पारित नही हो सका।

विधायक प्रकाश व जयंत की रणनीति कर गई काम

सूत्रों से मिली जानकारी के अनुसार नगर निगम की महापौर जानकी अमृत काटजू के खिलाफ भाजपा के द्वारा लाये गए अविश्वास प्रस्ताव की पेशकश के बाद जिले के कांग्रेसी नेता इस प्रस्ताव को ध्वस्त करने के लिये रणनीति पर काम कर रहे थे। एक तरफ जहां कांग्रेस के वरिष्ठ नेता सभापति जयंत ठेठवार ने कांग्रेसी पार्षदों को एकजुट रखने में अहम भूमिका निभाई तो वहीं दूसरी ओर रायगढ़ विधायक प्रकाश नायक ने ऐसे संवेदनशील मौके पर भाजपा की एक महिला भाजपा पार्षद को कांग्रेस में शामिल कराकर न केवल अपनी कुशल रणनीति व बुद्धि चातुर्य का परिचय दिया, बल्कि इन दोनों नेताओं के संयुक्त प्रयास से शहर में भाजपा की किरकिरी भी कर डाली।

प्रधान मंत्री मोदी ने की एनटीपीसी तिलाईपाली से लारा तक की एमजीआर प्रणाली देश को समर्पित

रायगढ़ 16 सितंबर (देशबन्धु)। प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी ने छत्तीसगढ़ के रायगढ़ जिले में एक कार्यक्रम में तलईपल्ली कोयला खदान से एनटीपीसी लारा तक एमजीआर (मेरी-गो-राउंड) प्रणाली राष्ट्र को समर्पित की।

65 किलोमीटर लंबी विद्युतीकृत एमजीआर प्रणाली एनटीपीसी लारा से कम लागत और विश्वसनीय बिजली उत्पादन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगी, जिससे देश की ऊर्जा सुरक्षा मजबूत होगी। 2071 करोड़ रुपये की लागत से निर्मित एमजीआर प्रणाली का उपयोग एनटीपीसी की तलईपल्ली कोयला खदान से छत्तीसगढ़ में 1600 (2इ800) मेगावाट एनटीपीसी लारा सुपर थर्मल पावर स्टेशन तक कम लागत और उच्च ग्रेड कोयले की डिलीवरी के लिए किया जाएगा। यह प्रतिष्ठित परियोजना हावड़ा-मुंबई मुख्य रेलवे लाइन से भी जुड़ी होगी, जिसका उपयोग देश के अन्य हिस्सों में कोयले के परिवहन के लिए किया जा सकता है। इसके अलावा, मौजूदा परिवहन प्रणाली जो दैनिक आधार पर 20,000 टन कोयला पहुंचा रही है, अपनी पूरी क्षमता पर 8 एमएमटीपीए

कोयला परिवहन तक पहुंच जाएगी।

एमजीआर प्रणाली कोयला खदानों से बिजली स्टेशनों तक कोयला परिवहन में आधुनिक तकनीकों का प्रमाण होगी। कोटारलिया में मौजूदा रेलवे लाइन पर 61 मीटर के गर्डर ब्रिज के साथ, नवीनतम एमजीआर प्रणाली में ट्रैक के साथ कई स्थानों पर जानवरों को पार करने का भी प्रावधान होगा। एमजीआर प्रणाली अपने पूरे विस्तार में 200 से अधिक पुलों और पुलियों का भी दावा करती है।

इस अवसर पर टी एस सिंह देव, उप मुख्यमंत्री, छत्तीसगढ़ सरकार, रेणुका सिंह सरुता, माननीय केंद्रीय जनजातीय मामलों के राज्य मंत्री, श्रीमती गोमती साई, माननीय संसद सदस्य (लोकसभा), रायगढ़, नारायण चंदेल, विपक्ष के नेता, छत्तीसगढ़ विधानसभा के साथ-साथ अन्य गणमान्य व्यक्ति।

अवैध उत्खनन करने वालों के विरुद्ध कार्रवाई

अंबिकापुर 16 सितंबर (देशबन्धु)। कलेक्टर कुंदन कुमार के निर्देशानुसार खनि विभाग द्वारा जिले में रेत एवं अन्य खनिजों के अवैध उत्खनन, परिवहन एवं भण्डारण की प्रभावी रोकथाम हेतु कार्यवाही की गई है। प्राप्त निर्देशों का कड़ाई से पालन करते हुए खनिज विभाग द्वारा लगातार कार्यवाही की जा रही है। खनि विभाग अधिकारी ने बताया कि छत्तीसगढ़ गौण खनिज 2015 के तहत अवैध परिवहन में संलिप्त वाहनों को जप्त कर प्रकरण दर्ज किया गया है।

एसआई राजेन्द्र साहू पदोन्नत होकर बने टीआई

सूरजपुर 16 सितंबर (देशबन्धु)। बीते दिन पुलिस मुख्यालय रायपुर के द्वारा एसआई से निरीक्षक के पद पर पदोन्नति का आदेश जारी किया है जिसमें जिले के एसआई राजेन्द्र साहू का नाम शामील है। शनिवार को पुलिस अधीक्षक आई कल्याण एलिसेला ने पदोन्नत हुए एसआई राजेन्द्र साहू के कंधों पर स्टार लगाकर टीआई पद पर पदोन्नति दी। पुलिस अधीक्षक ने पदोन्नत हुए टीआई को पूरी मेहनत व लगन से अनुशासन में रहकर कार्य करने के लिए प्रेरित करते हुए कहा कि पदोन्नति के साथ-साथ विभागीय दायित्व भी बढ़ता है, इसलिए अपने कार्यों को नए जोश के साथ बखूबी निभाना चाहिए।

पीओपी मूर्तियां, धार्मिक गानों व पूजन सामग्री में हिंदू देवी देवताओं के चित्र पर प्रतिबंध की मांग

रायगढ 16 सितंबर (देशबन्धु)। गणेश चतुर्थी विश्वकर्मा पूजा और अन्य धार्मिक आयोजनों में प्लास्टर ऑफ पेरिस की मूर्तियां के उपयोग, पूजा पंडालों में फिल्मी गाने बजाने, पूजन सामग्री आदि में हिंदू देवी देवताओं के चित्र होने जैसे मुद्दों पर प्रतिबंध लगाने अखिल भारत हिंदू महासभा युवा ने कलेक्टर को ज्ञापन सौंपा।

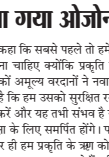

सौंपे गए ज्ञापन में उनका कहना है कि प्लास्टर ऑफ पेरिस से बनी मूर्तियों, पूजन सामग्रियों को उपयोग के बाद इन्हें कचरे में नाली में फेंक दिया जाता है जिससे ना केवल देवी देवताओं का अपमान होता है जो हमारे हिंदू परंपरा के खिलाफ है बल्कि प्रदूषण भी फैलता है,इसके अलावा धार्मिक आयोजनों में पंडालों में अश्लील गाने बजाने पर भी रोक लगाने की मांग की है।विश्वकर्मा पूजा और गणेश पूजा में भारी मात्रा में बाजार में प्लास्टर ऑफ पेरिस की मूर्तियां बिकती है जो की जल में ठीक तरह विलय नहीं हो पाती जिससे जल प्रदूषण का खतरा होता है साथ ही साथ हिंदू देवी देवता की मूर्ति जल में ठीक से विसर्जन नहीं हो पाती और किनारे पर आकर टुकड़े-टुकड़े के रूप में एकत्रित हो जाती है और कई दिनों तक पड़ी रहती हैं जोकि सनातन धर्म के अनुसार शुभ नहीं है और सनातनियों की भावनाओं के साथ भी खिलवाड़ है साथ ही साथ पंडालों और विसर्जन में फिल्मी गाना बजाया जाता है जिससे फूहड़ता का प्रचार हो रहा है और भक्ति के माहोल को बिगाड़ा जा रहा है एवं पूजन सामग्री में चाहे अगरबती हो चाहे धूप बत्ती चाहे हवन सामग्री या कोई भी पूजन सामग्री का पैकेट जिसमें हिंदू देवी देवताओं के चित्र हो उस भी पूर्ण प्रतिबंध लगाया जाए क्योंकि व्यवहार में आने के बाद वह डब्बा कचरे में नाली में पड़े रहता है जिससे हम सनातनी देवी देवताओं का अपमान होता है जो की उचित नहीं है इसका हिंदू महासभा कड़ा विरोध करता है। अत: आप इस पर छापा मार उचित कानूनी कार्रवाई किया जाए।

विजयहायर सेकण्डरी स्कूल में मनाया गया ओजोन डे

मनेन्द्रगढ़ 16 सितंबर (देशबन्धु)। नगर के प्रतिष्ठित विद्यालय विजय इंग्लिश मीडियम हायर सेकेण्डरी स्कूल में ओजोन डे मनाया गया साथ ही भारत सरकार के द्वारा आयोजित राष्ट्रीय छात्र पर्यावरण प्रतियोगिता में हिस्सा लेने वाले विद्यार्थियों को प्रमाणपत्र प्रदान किया गया। इस अवसर पर विगत 17 वर्षों से पर्यावरण के क्षेत्र में कार्यरत, राष्ट्रीय हरित वाहिनी के पूर्व जिला समन्वयक, शासकीय कन्या उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के पूर्व व्याख्याता सतीश उपाध्याय, पर्यावरण हेतु समर्पित एवं पर्यावरण उत्थान हेतु प्रख्यात व समर्पित संस्था ग्रीनवैली के समर्पित सदस्य व नगरपालिका सूरजपुर में पदस्थ उपअभियंता श्री बसंत जायसवाल, श्री सतीश सिंह एवं श्री नरोत्तम शर्मा अतिथि के रूप में उपस्थित रहे। अतिथियों का स्वागत संस्था के सचिव श्री संजय सेंगर ने तिलक लगा व स्मृतिचिन्ह प्रदान कर किया।

उपाध्याय ने कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कहा कि पर्यावरण संरक्षण के लिए हम सभी गंभीर रूप से जागरूक होकर कार्य करना होगा। इसके लिये आवश्यक है कि हम देश-दुनिया के भविष्य हमारे बच्चों को इसके लिए जागरूक करें और उन्हें पर्यावरण संरक्षण की शिक्षा प्रदान करें और ना सिर्फ शिक्षा प्रदान करने वरन् उन्हें इस क्षेत्र में क्रियाशील भी बनायें। श्री बसंत जायसवाल जी ने कहा कि सबसे पहले तो हमें प्रकृति के प्रति कृतज्ञ होना चाहिए क्योंकि प्रकृति के द्वारा हम सभी को अनेकों अमूल्य वरदानों ने नवाजा गया है। हमारा कर्तव्य है कि हम उसको सुरक्षित रखते हुए उसका सदुपयोग करें और यह तभी संभव है जब हम पर्यावरण की सुरक्षा के लिए समर्पित होंगे। पर्यावरण को सुरक्षित रखकर ही हम प्रकृति के ऋण को चुकाने का प्रयास कर सकते हैं। श्री सतीश सिंह व श्री नरोत्तम शर्मा ने भी पर्यावरण संरक्षण के महत्व को बताते हुए कहा कि आज के इस ओजोन डे को मनाने का उद्देश्य भी इसी बात पर निर्भर करता है। पर्यावरण प्रदूषण के कारण ही ओजोन की परत क्षतिग्रस्त होती है जो कि हम मनुष्यों के लिए हानिकारक है अत: आवश्यक है कि हम पर्यावरण को सुरक्षित रखें। इसके लिए अति आवश्यक है कि हम सभी ज्यादा से ज्यादा वृक्षारोपण करें और उन्हें सुरक्षा प्रदान करें। इसी कार्यक्रम के अंतर्गत भारत सरकार के द्वारा आयोजित राष्ट्रीय छात्र पर्यावरण प्रतियोगिता 2023 का आयोजन किया गया था जिसमें संस्था विजय इंग्लिश मीडियम हायर सेकण्डरी स्कूल मनेन्द्रगढ़ के विद्यार्थियों व शिक्षक-शिक्षिकाओं ने भी हिस्सा लिया था। इस प्रतियोगिता में हिस्सा लेने वाले सभी प्रतिभागियों को अतिथियों के हाथों प्रमाणपत्र भी प्रदान किया गया।

धूम्रपान व तम्बाकू निषेध संबंधी जागरूकता शिविर का आयोजन

अम्बिकापुर 16 सितंबर (देशबन्धु)। मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ आरएन गुप्ता के निर्देशानुसार एवं जिला नोडल अधिकारी डॉ शैलेन्द्र गुप्ता के मार्गदर्शन में शुक्रवार को राष्ट्रीय तम्बाकू नियंत्रण कार्यक्रम अंतर्गत शैक्षणिक संस्थानों को तम्बाकू एवं धूम्रपान निषेध संबंधी जागरूकता शिविर का आयोजन हॉली क्रॉस कन्या महाविद्यालय अम्बिकापुर में किया गया।

जागरूकता कार्यक्रम में कोटपा अधिनियम की धाराओं ने तम्बाकू के सेवन से व्यक्ति को होने वाले दुष्परिणाम को बताया गया। तम्बाकू के सेवन से होने वाले दुष्परिणाम निकट भविष्य में तंबाकू के सेवन होने वाले बिमारी श्वसन तंत्र के कैंसर, फेफड़े, संपूर्ण ऊपरी जठरांत्र संबंधी, यकृत (लीवर), अग्न्याशय, गुर्दा, मूत्राशय, मौखिक कैविटी, नाक कैविटी (गुहा), गर्भाशय ग्रीवा, आदि से समस्याओं से जुड़ा होता हैं। धुंआ रहित तंबाकू मुख कैंसर का प्रमुख कारण है। इस दौरान बताया गया कि व्यक्ति में नशे की अन्य आदतों वाले पदार्थों द्वारा गतिविधियों में सहनशीलता विकसित होती हैं। तंबाकू सेवन के हानिकारक प्रभावों के बारे में जागरूकता पैदा करें, तंबाकू उत्पादों के उत्पादन और आपूर्ति को कम करना, सिगरेट और अन्य तंबाकू उत्पाद (व्यापार और वाणिज्य, उत्पादन और आपूर्ति और वितरण का निषेध) अधिनियम 2003 कोटपा के तहत प्रावधानों के प्रभावी कार्यान्वयन को सुनिश्चित कराना। जागरूकता शिविर में धारा-4 सार्वजनिक स्थान पर धूम्रपान का प्रतिषेध, धारा-5 सिगरेट एवं अन्य तम्बाकू उत्पादों के विज्ञापन में प्रतिषेध, धारा-6 अठारह वर्ष से कम आयु के व्यक्ति को और विशिष्ट क्षेत्र में सिगरेट या अन्य तम्बाकू उत्पादों के विक्रय पर प्रतिषेध, धारा-7 बिना विनिर्दिष्ट चेतावनी के सिगरेट एवं अन्य तम्बाकू उत्पादों व्यापार तथा वाणिज्य तथा उनके उत्पादन, उन्होंने बताया कि तम्बाकू के धुएं में लगभग 7000 रसायन होते है जैसे एसीटोन, आर्सेनिक, कार्बन मोनोऑक्साइड, हाइड्रोजन साइनाइड, कैडमियमनोडल के बारे में बताया गया।

शिविर में बताया गया कि पूरे भारत में तम्बाकू नियंत्रण कानून 2003 को लागू करने के लिए वर्ष 2007-08 में राष्ट्रीय तम्बाकू नियंत्रण कार्यक्रम की शुरुआत की गई और तम्बाकू के दुष्प्रभावों के बारे मे जनसामान्य में अधिक से अधिक जागरूकता लाया जा सके, किसी भी रूप में धूम्रपान करने वाले एक साथ 30 ऐसे रसायन ले रहे होते हैं, जो कैंसर का कारण बनते हैं। इसके अलावा स्ट्रोक व हृदयाघात की आशंका भी बढ़ जाती है, तंबाकू शरीर के लिए धीमा जहर है धीरे-धीरे व्यक्ति इसका आदी हो जाता है। उसके बाद चाहते हुए भी इस

छात्रों ने रंगोली के माध्यम से दिया जागरुकता का संदेश

इस अवसर पर छात्राओं के द्वारा तम्बाकू रोकथाम संबंधी रंगोली एवं चित्रकला तैयार की गई, उत्कृष्ट चित्रकला हेतु कुल 10 छात्राओं को स्मृति चिन्ह प्रदाय किया गया तथा समस्त शिक्षकगण एवं छात्राओं को शपथ दिलायी गई। इस अवसर पर प्राचार्य डॉ सिस्टर सांता जोसेफ, डॉ सिस्टर मंजू टोप्पो, प्रभारी सोशन वर्क विभाग अल्मा मिंज, श्री नवीन सिंह एवं बड़े संख्या में छात्र- छात्राएं उपस्थित थी। इसके साथ ही जिला प्रशासन के द्वारा चलाये जा रहे मतदाता जागरूकता कार्यक्रम के तहत छात्राओं एवं शिक्षकगण को शत प्रतिशत मतदान कराये जाने तथा आमजनों को जागरूक करने की शपथ दिलायी गई।

लगातार बारिश 25 घण्टे में 13 फीट बढ़ गया महानदी का जलस्तर

जांजगीर, 16 सितम्बर (देशबन्धु)। लगातार हुई बारिश से महानदी उफान पर है। 25 घण्टों में महानदी का जलस्तर 13 फीट बढ़ गया। 14 सितंबर गुरूवार की दोपहर 12 बजे से महानदी का जलस्तर बढ़ना शुरू हुआ। 15 सितंबर दोपहर 3 बजे तक महानदी का जलस्तर 13 फीट बढ़ गया। शुक्रवार दोपहर महानदी में 33 फीट पानी था। महानदी शबरी पुल से मात्र 6 फीट नीचे बह रही है। हांलाकि शुक्रवार सुबह से महानदी का जलस्तर बढ़ने की रफ्तार एकदम धीमी हो गई है। महानदी के जलस्तर बढ़ने का कारण लगातार हुई बारिश का पानी है।

जानकारी के अनुसार अब तक किसी भी डैम से पानी नहीं छोड़ा गया है। महानदी का जलस्तर बढ़ने पर प्रशासन अलर्ट पर है। महानदी के किनारे बसे गावों में मुनादी भी

कराई गई है। शबरी पुल के पास पुलिस व होम गार्ड के जवान तैनात किए गए हैं। महानदी के बढ़े जलस्तर के कारण नदी का नजारा देखने महानदी के घाटों पर लोग पहुँच रहे हैं।

तटीय क्षेत्रों के इलाकों में रहने वाले लोगों को जारी किया अलर्ट पुल से महज चार फीट नीचे ही महानदी का पानी बह रहा है। जिले मेंदो दिनों से रुक - रुक कर हो रही वर्षा से महानदी का जल स्तर बढ़ गया है। महानदी शबरी सेतु पुल से आवागमन अभी जारी है। जलस्तर बढ़ने के बाद पुल से लोगों का आना - जाना बंद कर दिया जाएगा। ऐसा होने पर जांजगीर जिले का संपर्क बलौदाबाजार, सारंगढ़ - बिलाईगढ़, महासमुंद और रायपुर जिले से टूट जाएगा। जिला प्रशासन ने लगातार हो रही वर्षा को देखते हुए महानदी के किनारे बसे गांव और तटीय क्षेत्रों के इलाकों में रहने वाले लोगों को अलर्ट जारी किया है। शिवरीनारायण के वार्ड नंबर एक शिकारी डेरा, नटराज चौक वार्ड 14 -15 नीचली बस्तियों में पानी पहले पहुंचता है। बाढ़ की स्थिति से निपटने के लिए नगर पालिका और राजस्व की टीम को तैनात कर दिया गया है। नदी का पानी स्थिर है। गंगरेल बांध से अभी पानी नहीं छोड़ा गया है। नदी के तटवर्तीय क्षेत्रों का निरीक्षण कर जायजा लिया गया है।

पुलिस द्वारा बाढ़ बचाव दल तैनात

थाना शिवरीनारायण क्षेत्र के अंतर्गत ग्राम रिंगनी के नाला में बारिश की वजह से बाढ़ आ जाने से, कोई जन हानि घटना न हो, जिसको ध्यान में रखते हुए जिला *पुलिस द्वारा बाढ़ बचाव दल तैनात किया जा रहा है। साथ ही उक्त मार्ग में आने जाने वाले लोगो को पुल के ऊपर से पार न करने हेतु समझाया जा रहा है।

जान जोखिम में... बरमकेला मार्ग बंद

सारंगढ़ 16 सितंबर (देशबन्धु)। जिले में लगातार बारिश से टिमरलगा लात नाला बरमकेला मार्ग बंद हो चुका है। यहां फंसे नागरिकों को भारी परेशानी हो रही है वाहनों की आवाही बंद होने के चलते मजबूरी में लोग जान जोखिम में डाल कर नाव से नदी पार कर रहे है। महानदी उफान में है जिसके चलते आस पास के क्षेत्रों में तेजी से पानी भर रहा है। पुल में छः फीट ऊपर पानी बह रही है। प्रशासनिक अधिकारियों की चेतावनी के बाद भी लोग नहीं मान रहे हैं। नदी पार करना खतरनाक है, लोगों को सुरक्षित स्थान पर चले जाने को कहा गया। मौके का जायजा लेने नोडल अधिकारी माहेश्वरी ने नाव में सवार हो कर बाढ़ क्षेत्र को नजदीकी से देखा और कलेक्टर के निर्देश पर आपदा राहत प्रकोष्ठ का फोन नंबर जारी भी किया गया है तथा बाढ प्रभावित क्षेत्रों को चिन्हित कर इनमें कोटवारों के माध्यम से मुनादी कराई जा रही है। वही बरमकेला ब्लॉक के ग्राम पंचायत लिसी का पंचायत भवन में जल भराव से लोगो को सुरक्षित स्थान पर चले जाने मुनादी कराया गया।तथा कलेक्टर के निर्देश पर एसडीएम मोनिका वर्मा भी बाढ प्रभावित क्षेत्रों का दौरा टीम के साथ कर रही हैं।

धांगर नाला में मिली लाश

धरमजयगढ़ कालोनी के धांगर नाला में धरमजयगढ़ थाना क्षेत्र के अंतर्गत आने वाले ग्राम संग्रह निवासी रमेश बैगा पिता समारू बैगा 35 साल की लाश मिली है। लाश को देखकर आशंका जताई जा रही है कि रात को हुए झमाझम बारिश में यह लाश बहकर आई होगी।

रोजगार मेले में 312 युवाओं को तत्काल मिली नियुक्ति

रोजगार मेला सह कैरियर मार्गदर्शन का हुआ आयोजन

जांजगीर, 16 सितम्बर (देशबन्धु)। जिला रोजगार एवं स्वरोजगार मार्गदर्शन केन्द्र जांजगीर चांपा द्वारा जिले के युवाओं को रोजगार के अवसर उपलब्ध कराने के उद्देश्य से ''रोजगार मेला सह कैरियर मार्गदर्शन'' का आयोजन आज लाईवलीहुड कालेज जांजगीर में किया गया। इस अवसर पर भारी संख्या में युवा रोजगार मेला सह कैरियर मार्गदर्शन कैम्प में शामिल हुए। रोजगार मेला में निजी क्षेत्र के 16 नियोजक द्वारा 2058 रिक्त पदो पर भर्ती की कार्यवाही की गई।

जिसमें से 312 आवेदकों का तत्काल नियुक्ति किया गया। साथ ही अन्य 3214 आवेदकों का प्रारंभिक चयन भी किया गया है।

रोजगार मेला सह कैरियर मार्गदर्शन में आज ग्राम गोविन्दा के बेरोजगार युवा जगदीश प्रसाद पटेल का फीटर ट्रेड अंतर्गत वेदांता स्कीम ट्रेनिंग सेंटर बालकों में फीटर पद पर प्रारंभिक चयन, ग्राम देवरी निवासी श्री शिवकुमार धीवर का सेक्यूरिटी गार्ड में प्रारंभिक चयन हुआ है। इसी प्रकार रोजगार मेले में पहुंचे अन्य कई विभिन्न युवाओं का विभिन्न निजी संस्थानों में प्रारंभिक चयन हुआ है। रोजगार मेला में प्रारंभिक चयन होने पर युवाओं के चेहरे खिले तथा सभी युवाओं ने जिला प्रशासन के प्रति आभार जताते हुए धन्यवाद दिया। जिला रोजगार अधिकारी ने बताया कि रोजगार मेला सह कैरियर मार्गदर्शन कैम्प में निजी क्षेत्र के 16 नियोजक द्वारा 2058 रिक्त पदो पर भर्ती की कार्यवाही की गई। जिनमें से 3214 आवेदकों का प्रारंभिक चयन किया गया है। जिसमें से 312 आवेदकों का अंतिम चयन किया गया। निजी क्षेत्र के नियोजकों में डी.बी.पावर लिमिटेड बाड़ादरहा डभरा, एक्सिस बैंक चांपा, नव किसान बॉयो प्लांटेक बिलासपुर, बांबे इंटेलिजेन्स सिक्युरिटी रायपुर, न्यूट्रीन्टी क्राप केयर बिलासपुर, फायर सेफ्टी एण्ड डिजास्टर मैनेजमेंट इन्स्टीट्यूट, डी.एम. गट्टानी होन्डा, वेदांता स्कील्ड स्कूल बाल्को कोरबा, केपस्टन सर्विस लिमिटेड हैदराबाद, टीआरव्ही इंडस्ट्रीज़ कोरबा, भारतीय जीवन बीमा निगम नैला, एलआईसी लाईफ प्लस ऑफिस जांजगीर, चैतन्य इंडिया फिन क्रेडिट प्राइवेट लिमिटेड रायगढ़, ईएसएएफ कॉपरेटिव बीसी ऑफ ईएसएएफ स्मॉल फाइनेस केरला, एलआईसी आफ इंडिया (हेमंत कुमार मिश्रा), एसबीआई लाईफ चांपा एवं लक्ष्य रुप कोरबा द्वारा विभिन्न पदों पर भर्ती के लिए स्टॉल लगाया गया।

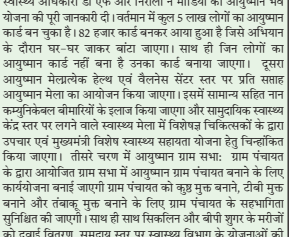

एसडीएम ने गिरदावरी के कार्य का किया निरीक्षण

जांजगीर, 16 सितम्बर (देशबन्धु)। अनुविभागीय अधिकारी पामगढ़ आरके तम्बोली द्वारा तहसील पामगढ़ अन्तर्गत ग्राम खरखोद में चल रहे गिरदावरी का निरीक्षण किया गया। गिरदावरी निरीक्षण में राजस्व अभिलेख में दर्ज खसरा व रकबा के अनुसार मौके पर लगे फसल का वास्तविक गिरदावरी करने एवं राजस्व रिकार्ड में सही इन्द्राज करने हेतु हल्का पटवारी, ग्राम कोटवार निर्देशित किया गया एवं आंगनबाड़ी केन्द्र क्रमांक 02 व 03 का निरीक्षण किया गया। आंगनबाड़ी में उपस्थित कार्यकर्ता एवं सहायिका को नियमित उपस्थिति एवं मीनू के अनुसार बच्चों को गर्म एवं ताजा पोषण देने निर्देशित किया गया।

सार-संक्षेप

आयुष्मान भव योजना अभियान आज से 31 दिसंबर तक

सारंगढ़ 16 सितंबर (देशबन्धु)। कलेक्टर डॉ फरिहा आलम सिद्दीकी ने कलेक्टोरेट में मीडिया को संबोधित करते हुए कहा कि आयुष्मान भव अभियान की गतिविधियां जिले में मैदानी स्तर पर रविवार 17 सितंबर से 31 दिसंबर 2023 तक स्वास्थ्य विभाग के कर्मचारी और मितानिनों के माध्यम से किया जाएगा। कलेक्टर ने जिले के नागरिकों से अपील की है कि सभी व्यक्ति अपना आयुष्मान कार्ड अनिवार्य रूप से बनवाए। आयुष्मान ग्राम सभा में उपस्थित होकर स्वास्थ्य विभाग के प्रति अपने अधिकारों व कर्तव्यों को जाने तथा स्वास्थ्य मेला में सामान्य एवं गंभीर रूप से पीड़ित व्यक्तियों का उपचार में सहयोग प्रदान करें। मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ एफ आर निराला ने मीडिया को आयुष्मान भव योजना की पूरी जानकारी दी। वर्तमान में कुल 5 लाख लोगों का आयुष्मान कार्ड बन चुका है। 82 हजार कार्ड बनकर आया हुआ है जिसे अभियान के दौरान घर-घर जाकर बांटा जाएगा। साथ ही जिन लोगों का आयुष्मान कार्ड नहीं बना है उनका कार्ड बनाया जाएगा। दूसरा आयुष्मान मेलप्रत्येक हेल्थ एवं वैलनेस सेंटर स्तर पर प्रति सप्ताह आयुष्मान मेला का आयोजन किया जाएगा। इसमें सामान्य सहित नान कम्युनिकेबल बीमारियों के इलाज किया जाएगा और सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र स्तर पर लगने वाले स्वास्थ्य मेला में विशेषज्ञ चिकित्सकों के द्वारा उपचार एवं मुख्यमंत्री विशेष स्वास्थ्य सहायता योजना हेतु चिन्हांकित किया जाएगा। तीसरे चरण में आयुष्मान ग्राम सभा: ग्राम पंचायत के द्वारा आयोजित ग्राम सभा में आयुष्मान ग्राम पंचायत बनाने के लिए कार्ययोजना बनाई जाएगी ग्राम पंचायत को कुष्ठ मुक्त बनाने, टीबी मुक्त बनाने और तंबाकू मुक्त बनाने के लिए ग्राम पंचायत के सहभागिता सुनिश्चित की जाएगी। साथ ही साथ सिकलिन और बीपी शुगर के मरीजों को दवाई वितरण, समुदाय स्तर पर स्वास्थ्य विभाग के योजनाओं की जानकारी दी जाएगी।

बीईओ ऑफिस के सामने लबालब भरा पानी

डभरा, 16 सितम्बर (देशबन्धु)। विकासखंड शिक्षा अधिकारी कार्यालय डभरा के सामने बारिश का पानी लबालब भरा हुआ है जिस कारण अधिकारियो एवं विकासखंड शिक्षा कार्यालय में पदस्थ कर्मचारियों एवं शिक्षकों पालकों को ऑफिस आने-जाने में भारी कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा है। इन दिनों हो रही लगातार बारिश से विकासखंड शिक्षा कार्यालय के सामने लबालब पानी भरा हुआ है ऑफिस के सामने डबरी में तब्दील हो चुका है बीईओ ऑफिस के बगल में मिट्टी मुरूम बिछा कर बाजार बनाया गया है तो दूसरी तरफ अन्य विभाग का भवन बन रहा है जिससे पानी का निकासी नहीं हो पा रहा है।

तीन सूत्रीय मांगों को लेकर प्लेसमेंट कर्मचारी महासंघ ने निकाली रैली

रायगढ़ 16 सितंबर (देशबन्धु)। अपनी तीन सुत्रीय मांगों को लेकर रायगढ़ के प्लेसमेंट कर्मचारी आंदोलनरत हैं लिहाजा शुक्रवार को नगर निगम प्लेसमेंट कर्मचारियों ने रामलीला मैदान से होकर कलेक्ट्रेड तक विशाल रैली निकाली और कलेक्टर कार्यालय पहुंचकर मुख्यमंत्री के नाम डिप्टी कलेक्टर को ज्ञापन सौंपा।

सौंपे गए ज्ञापन में प्लेसमेंट कर्मचारियों ने कहा है कि 14 नगर पालिक निगम, 43 नगर पालिका परिषद एवं 113 नगर पंचायतों कुल 170 नगरीय निकायों में कार्यरत समस्त प्लेरमेंट कर्मचारियों का संगठन है और अपने सदस्यों के हित के लिए 3 सूत्रीय मांगों को लेकर विगत वर्षो से वे निरंतर संघर्षरत है।कांग्रेस ने सरकार बनने पर 10 दिन में प्राथमिकता से हमारी मांगों को पूरा करने का वादा किया था। जिसमें अनियमित कर्मचारियों के नियमितीकरण करने, छटनी न करने तथा आउट सोर्सिग बंद करने की बात कही गई थी।यहां तक कि सरकार ने घोषणा की कि इस वर्ष किसानों लिए है आगामी वर्ष कर्मचारियों का होगा हम इस वचन से हम काफी आशान्वित थे। परन्तु सरकार के लगभग 04 वर्ष पूर्ण होने के उपरांत भी नगरीय निकाय के प्लेसमेंट कर्मचारियों को नियमित करने हेतु सरकार किसी प्रकार का पहल नही कर रही है। इससे 170 नगरीय निकायों के समस्त प्लेसमेंट कर्मचारी परिवार में काफी असंतोष एवं आक्रोश व्याप्त है।

सार्वजनिक वितरण दुकान का शुभारंभ

चांपा, 16 सितम्बर (देशबन्धु)। छत्तीसगढ़ शासन ने सार्वजनिक वितरण प्रणाली के अंतर्गत प्रत्येक राशन कार्ड धारकों की सुविधा के लिए राशन दुकानों का विस्तार किया गया है जिसके तहत वार्ड क्रमांक 21 के हितग्राहियों के लिए मां काली महिला स्वयं सहायता समूह को राशन दुकान संचालित करने का कार्य मिला है, जिसका उद्घाटन आज जिला कांग्रेस कमेटी के प्रवक्ता पार्षद नागेंद्र गुप्ता ने पूजा अर्चना एवं नारियल फोड़कर किया। और हितग्राहियों को राशन प्रदान किया और उपस्थित वार्ड वासियों से कहा कि छत्तीसगढ़ की कांग्रेस सरकार सबको सुविधा अनुसार राशन सही समय में प्राप्त हो आने-जाने में सुविधा हो दुकान दूर होने की वजह से राशन लाने में खासकर महिलाओं बुजुर्गों को परेशानी होती थी। इस अवसर पर वार्डवासी चेतन देवांगन, महेंद्र देवांगन, तीरथ देवांगन, गोपाल देवांगन, जोएधा प्रसाद देवांगन पार्वती रोहिदास समूह की संचालक श्रीमती सुनीता महंत बड़ी संख्या में वार्ड वासी उपस्थित थे।

एमएमआर महाविद्यालय में मनाया गया हिन्दी दिवस

चाम्पा, 16 सितम्बर (देशबन्धु)। एमएमआर स्नातकोत्तर महा.वि.में हिंदी विभाग द्वारा 14 सितम्बर को हिंदी दिवस के अवसर पर प्राचार्य डॉ. बीडी दीवान के मार्गदर्शन में हिन्दी दिवस मनाया गया। इस दौरान समाज शास्त्र के विभागाध्यक्ष डॉ. बीके डहरिया ने हिन्दी हमारी भाषा है, हिन्दी हमारी आशा है, हिन्दी हमारी अभिलाषा है, कहकर अपने विचार व्यक्त किये। अर्थशास्त्र के विभागाध्यक्ष डॉ. एसपी भारद्वाज ने हिन्दी भाषा के विकास के सन्दर्भ में अपने विचार प्रस्तुत किये। वाणिज्य विभाग के सहा.प्रा. डॉ. वी के शर्मा ने हिन्दी में बोली जाने वाली वाणिज्यिक भाषा के संदर्भ में अपने विचार रखे। इतिहास विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. डीएन बंजारे के उत्तर-भारत एवं दक्षिण भारत में बोली जाने वाली भाषा में अंतर विषय पर अपने विचार अभिव्यक्त किये। हिन्दी विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. बीआर महिपाल ने हिंदी भाषा के विकास और प्रगति के संबंध में अपने विचार रखा। कार्यक्रम का संचालन हिंदी विभाग की सहा.डॉ. सुनीता राठौर ने किया, इन्होंने हिंदी भाषा पर समृद्ध एवं गहरी व्याख्यान प्रस्तुत किये, कहा कि हिंदी भाषा का स्थान देश मे ही नही विदेशों में भी है, वर्तमान मे हिन्दी भाषा के विकास के लिए लोगों को जागरुक करने की आवश्यकता है, तभी हिन्दी सफलता की कुंजी साबित होगी। इस कार्यक्रम में अधिक संख्या में छात्र-छात्राएँ उपस्थित थे।

कोटवारों को दिया गया चुनाव संबंधी प्रशिक्षण

जांजगीर, 16 सितम्बर (देशबन्धु)। नवनिर्मित ऑडिटोरियम में चुनाव संबंधी प्रशिक्षण कार्यशाला आयोजित की गई है। पुलिस अधीक्षक विजय अग्रवाल, अपर कलेक्टर एसपी वैद्य की अध्यक्षता में प्रशिक्षण कार्यशाला आयोजित की गई। प्रशिक्षण में जिले के समस्त 499 कोटवारों को चुनाव ड्यूटी, चुनावी कार्य के संबंध में विस्तृत प्रशिक्षण दिया गया। कार्यशाला में कोटवारों को निर्वाचन संबंधी उनके कर्तव्य की जानकारी दी गई। इस प्रशिक्षण कार्यशाला में उपस्थित कोटवारों के सवालों का भी समाधान किया गया। कार्यशाला में मास्टर ट्रेनरों द्वारा उपस्थित कोटवारों को निर्वाचन संबंधी प्रशिक्षण दिया गया। इस अवसर पर राजस्व विभाग, पुलिस विभाग एवं संबंधित विभागों के अधिकारी-कर्मचारी उपस्थित थे।

सहायक शिक्षक निधन पर दिया गया अनुग्रह राशि

डभरा, 16 सितम्बर (देशबन्धु)। विकासखंड डभरा के अंतर्गत ग्राम कोटमी के सहायक शिक्षक पारेश्वर पटेल के अचानक निधन हो जाने पर शासन द्वारा प्रदत्त अनुग्रह राशि 50 हजार रूपये राशि को विकासखंड शिक्षा अधिकारी श्यामलाल वारे द्वारा शोक संतृप्त परिवार को प्रदान की गई। साथ विकासखंड शिक्षा अधिकारी श्यामलाल वारे ने परिवार को सभी सुविधा को देने का आश्वासन भी दिया। इस अवसर पर ग्राम के सेवानिवृत शिक्षक विनय पटेल निर्मला पटेल पंच उपस्थित थे।

ओजोन परत को नुकसान पहुंचाने वाले उपकरणों का उपयोग कम करें - बंजारा

एबीवीटीपीएस में मनाया गया अंतराष्ट्रीय ओजोन परत संरक्षण दिवस

जांजगीर, 16 सितम्बर (देशबन्धु)। ओजोन परत के संरक्षण के लिए जागरूक बनकर उन उपकरणों का उपयोग कम करना होगा। जिससे क्लोरोफ्लोरो कार्बन उत्सर्जित होते है। उन तत्वों से भी सतर्क रहना होगा, जो ओजोन परत के लिए खतरनाक साबित होते हैं। यह विचार अंतरराष्ट्रीय ओजोन परत संरक्षण दिवस पर कार्यपालक निदेशक एसके बंजारा ने व्यक्त किए। अटल बिहारी वाजपेयी ताप विद्युत संयंत्र (एबीवीटीपीएस) मड़वा में 16 सितंबर को अंतरराष्ट्रीय ओजोन परत संरक्षण दिवस मनाया गया। इस अवसर पर कार्यपालक निदेशक द्वारा अधिकारियों एवं कर्मचारियों को ओजोन परत संरक्षण की शपथ दिलाई गई।

वरिष्ठ मुख्य रसायनज्ञ आरके तिवारी एवं अतिरिक्त मुख्य अभियंता एसडी द्विवेदी ने भी कार्यक्रम को संबोधित किया। कार्यक्रम में सहायक प्रबंधक पर्यावरण संजय झा द्वारा पावर पाइंट प्रजेंटेशन के जरिए समताप मंडल से विघटित होती ओजोन परत की समस्या एवं पर्यावरण व मानव जीवन पर उसके दुष्प्रभाव को क्रमवार समझाया गया। उन्होंने बताया कि इस वर्ष 2023 की थीम 'मांट्रियल प्रोटोकॉल-ओजोन परत में सुधार एवं जलवायु परिवर्तन में कमी' है। अंतरराष्टीय ओजोन परत संरक्षण दिवस पर, चलचित्र का प्रदर्शन, प्रश्नमंच, नारा एवं निबंध प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसमें विजयी प्रतिभागियों हेमंत खरे, ओमप्रकाश मिश्रा, नागभूषण सिंह ठाकुर,संजीव कुमार सारथी, जितेंद्र जायसवाल और कैलाश कुमार ध्रुव को कार्यपालक निदेशक के हाथों पुरस्कृत किया गया। कार्यक्रम अतिरिक्त मुख्य अभियंता राजाबाबू कोसरे के मार्गदर्शन में आयोजित हुआ। कार्यक्रम का संचालन अधीक्षण अभियंता टीके नेताम और आभार प्रदर्शन अधीक्षण अभियंता एन. साहा द्वारा किया गया। इस अवसर पर अधीक्षण अभियंता धर्मेंद्र बंजारे, एनके घृतलहरे, सुशील तारेंद्र, जेके गायकवाड़, प्रकाशन अधिकारी बसंत शाहजीत समेत अधिकारी एवं कर्मचारी बड़ी संख्या में मौजूद रहे।

निरुद्ध बच्चों के सत्यापन के लिए जेलों का निरीक्षण

जांजगीर, 16 सितम्बर (देशबन्धु)। सर्वोच्च न्यायालय के मार्ग दर्शन के अनुक्रम में जेलों में निरुद्ध बच्चों के सत्यापन के लिए जिला जेल समिति द्वारा जिला जेल खोखरा एवं उप जेल सक्ती का निरीक्षण किया गया। सभी बैरकों में समस्त बंदियों से उम्र संबंधी जानकारी लिये गये, जहां 02 बच्चों की उम्र विधि के उल्लंघन करने वाले किशोर के रूप में संदेहास्पद पाये गये जिनका उम्र सत्यापन कराया जाना है। कुछ बंदियों द्वारा अवगत कराया गया कि उनके निवास स्थान में बच्चों का पालन-पोषण एवं देखरेख करने हेतु कोई जिम्मेदार व्यक्ति नहीं है। वह स्वयं व उसकी पत्नी जेल में निरूद्ध है। ऐसे बंदियों के बच्चों की सूची तैयार की गई, जिसे बाल कल्याण समिति के माध्यम से संस्थागत संरक्षण प्रदान किया जावेगा। जेल के कर्मचारियों को निरीक्षण समिति द्वारा अवगत कराया गया कि जेलों में प्रवेश देते समय यदि बंदी 18 वर्ष से कम के प्रतीत होने की स्थिति में या उम्र के प्रति संदेहास्पद होने के स्थिति में समिति के सदस्यों को तत्काल सूचना दी जाये ताकि समिति द्वारा उम्र सत्यापन के पश्चात किशोरों को संप्रेषण गृह में संरक्षण की प्रारंभिक कार्यवाही की जा सके। निरीक्षण के दौरान जिला जेल निरीक्षण समिति के सदस्य जिला बाल संरक्षण इकाई से गजेन्द्र सिंह जायसवाल, जिला बाल संरक्षण अधिकारी सुश्री पूजा तिवारी, संरक्षण अधिकारी (गैर संस्थागत देखरेख) श्रीमती संतोषी वैष्णव सामाजिक कार्यकर्ता, हर्षवर्धन सिंह सामाजिक कार्यकर्ता जेल अधीक्षक एवं जेलों के कर्मचारी उपस्थित रहे।

देश विदेश

यमनी सरकार ने हौथियों के साथ शांति वार्ता का स्वागत किया

अदन (यमन)। हौथी विद्रोहियों के एक प्रतिनिधिमंडल के नए दौर की शांति वार्ता के लिए सऊदी अरब पहुंचने के बाद यमनी सरकार ने कहा है कि वह देश में आठ साल के गृह युद्ध को समाप्त करने के लिए उठाये जा रहे सभी क़दमों का स्वागत करती है। शुक्रवार को एक संक्षिप्त प्रेस बयान में, यमनी विदेश मंत्रालय ने सऊदी अरब, ओमान, संयुक्त राष्ट्र और अंतर्राष्ट्रीय समुदाय के अन्य सदस्यों द्वारा चलाये जा रहे शांति प्रयासों के लिए अपना पूर्ण समर्थन घोषित किया।

किम जोंग की यात्रा के दौरान किसी समझौते पर हस्ताक्षर नहीं : रूस

पश्चिमी देश हथियार सौदे की तैयारी पर जता रहे हैं चिंता

मॉस्को, 16 सितम्बर (एजेंसियां)। रूस ने कहा है कि उत्तर कोरिया के नेता किम जोंग उन की रूस की यात्रा के दौरान किसी समझौते पर हस्ताक्षर नहीं किए गए हैं। उत्तर कोरियाई नेता फिलहाल रूस की यात्रा पर हैं। रूसी राष्ट्रपति भवन क्रेमलिन के प्रवक्ता दिमित्री पेसकोव ने शुक्रवार को संवाददाताओं से कहा, किसी समझौते पर हस्ताक्षर नहीं किए गए और किसी पर हस्ताक्षर करने की कोई योजना नहीं थी। समाचार पत्र 'डॉन' ने शनिवार को बताया कि रुस का बयान ऐसे समय में आया है जब पश्चिमी देश इस बात पर चिंता व्यक्त कर रहे हैं कि दोनों अलग-थलग देश हथियार सौदे की तैयारी कर रहे हैं। श्री किम ने इस सप्ताह की शुरुआत में राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन से मुलाकात की।माना जाता है कि रुस यूक्रेन में लड़ाई जारी रखने के लिए उत्तर कोरियाई गोला-बारूद खरीदने में दिलचस्पी रखता है जबकि उत्तर कोरिया अपने मिसाइल कार्यक्रम को विकसित करने के लिए रूस की मदद चाहता है। पश्चिमी देशों ने रूस और उत्तर कोरिया को हथियार सौदा करने के खिलाफ चेतावनी दी है। उन देशों का मानना है कि कोई भी सौदा उत्तर कोरिया पर प्रतिबंधों की अवहेलना करेगा। बुधवार को श्री किम से मुलाकात के बाद श्री पुतिन ने कहा कि उन्होंने सैन्य सहयोग के लिए 'संभावनाएं' देखीं। उन्होंने कहा कि रूसी सुदूर पूर्व के अपने विस्तारित दौरे के हिस्से के रूप में श्री किम ने शुक्रवार को प्रमुख रूसी इंजीनियरिंग केंद्र, कोम्सोमोल्स्क-ऑन-अमूर में एक रूसी सैन्य विमानन कारखाने का दौरा किया। उन्होंने रूस के सुखोई एसयू-35 और एसयू-57 लड़ाकू विमानों का उत्पादन देखा और एसयू-35 की एक प्रदर्शन उड़ान देखी।

शीर्ष डीपीआरके नेता ने रूसी विमानन संयंत्र का दौरा किया

सोल। डेमोक्रेटिक पीपुल्स रिपब्लिक ऑफ कोरिया (डीपीआरके) के शीर्ष नेता किम जोंग उन ने शुक्रवार को रूस के सुदूर पूर्व के औद्योगिक केंद्र कोम्सोमोल्स्क-ऑन-अमूर में पहुंच कर एक प्रमुख विमानन संयंत्र का दौरा किया। आधिकारिक कोरियन सेंट्रल न्यूज एजेंसी (केसीएनए) ने शनिवार को यह जानकारी दी। वर्कर्स पार्टी ऑफ कोरिया के महासचिव और डीपीआरके के राज्य मामलों के अध्यक्ष किम जोंग ने यूरी गगारिन एविएशन प्लांट की यात्रा के दौरान, इसकी तकनीकी विशिष्टताओं और उड़ान प्रदर्शन का विस्तृत विवरण देखने के लिए एसयू -57 फाइटर जेट पर सवार हुये और एसयू -35 फाइटर जेट का उड़ान प्रदर्शन देखा। रिपोर्ट में कहा गया है कि उन्होंने कारखाने में उत्पादित यात्री विमनों के प्रदर्शन के बारे में भी जाना। रिपोर्ट में कहा गया है कि किम जोंग रूसी विमान निर्माण उद्योग की स्वतंत्र क्षमता और आधुनिकता से काफी प्रभावित हुये। यूरी गगारिन एविएशन प्लांट 1934 में स्थापित किया गया था और यह रूसी रक्षा उद्योग और हवाई परिवहन उद्योग का एक महत्वपूर्ण आधार है।

युद्ध के कारण यूक्रेन में ऐतिहासिक स्थल खतरे में : यूनेस्को

कीव, 16 सितम्बर (एजेंसियां)। यूनेस्को ने कहा है कि रूस के साथ चल रहे युद्ध के कारण यूक्रेन की राजधानी कीव और ल्वीव शहर में ऐतिहासिक स्थलों के नष्ट होने का खतरा है। बीबीसी की रिपोर्ट के अनुसार, संयुक्त राष्ट्र सांस्कृतिक निकाय के अनुसार, इन स्थलों में कीव में प्रतिष्ठित सेंट सोफिया कैथेड्रल, शहर के कीव-पेचेर्सक लावरा की मध्ययुगीन इमारतें और ल्वीव में ऐतिहासिक केंद्र शामिल हैं। इन स्थलों को यूनेस्को की ख़तरे में पड़ी विश्व विरासत की सूची में रखा गया है। एक बयान में, यूनेस्को ने कहा कि उसकी विश्व धरोहर समिति ने निष्कर्ष निकाला है कि युद्ध के कारण इन संपत्तियों पर खतरा है। सीधे हमले के खतरे का सामना करते हुए, ये स्थल बमबारी के कारण खतरे में हैं।

बीबीसी की रिपोर्ट के अनुसार, लविवि के ऐतिहासिक पुराने शहर की स्थापना मध्य युग में हुई थी और इसने 13वीं से 20वीं शताब्दी तक एक प्रशासनिक, धार्मिक और वाणिज्यिक केंद्र के रूप में अपनी वास्तुकला और सांस्कृतिक विरासत को बनाए रखा है। इसे 1998 में विश्व विरासत सूची में जोड़ा गया था। सेंट सोफिया कैथेड्रल, 11वीं शताब्दी में बनाया गया था और इसे तुर्की में हागिया सोफिया को टक्कर देने के लिए डिजाइन किया गया था, जो उस समय कॉन्स्टेंटिनोपल का हिस्सा था। यह उस युग की कुछ जीवित इमारतों में से एक है। कीव-पेचेर्स्क लावरा की स्थापना कैथेड्रल के लगभग उसी समय हुई थी।

सुडोकू 6319

4	7						3	
		1	3		8			
		8				7		
	1	2	6				8	9
	8			9			7	
3	9				7	2	1	
		3				1		
			5		3	4		
	2						9	3

: नियम :

1. कुल 81 (9×9) वर्ग हैं, जिसमें 9 (3×3) वर्गों का एक खंड (ब्लॉक) बनता है।
2. हर खाली वर्ग में 1 से 9 के बीच का कोई एक अंक भर सकते हैं।
3. बाएं से दाएं और ऊपर से नीचे के प्रत्येक कॉलम,कतार और खंड में 1 से 9 अंक में से किसी भी अंक का इस्तेमाल एक बार ही कर सकते हैं।

हल आज ही के अंक में

वर्ग पहेली 6319

बायें से दायें:-

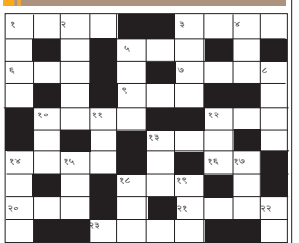

१. देश के पूर्व प्रधानमंत्री का नाम जिनका जन्मदिन चार वर्षों एक बार आता है
३. गतिरोध
५. आकर्षक, उच्चकोटि का
६. किराया भाड़ा
७. पानी से भरा, सजल
९. निवासी (उर्दू)
१०. भारतीय सेवा का एक अंग
१२. तबाही, बाढ़
१३. रक्तवाहिनी, नस, नाड़ी
१४. पुलिस का सिपाही
१६. और, एवं
१८. मुर्गा के सिर का आभूषण
२०. निपुणता
२१. आवश्यकता (उर्दू)
२३. टकराव, भिड़ंत

ऊपर से नीचे:-

१. सौदेबाजी
२. लाल कमल
३. अप्रसन्न, खफ़ा
४. भ्रम, भ्रांति, संशय (उर्दू)
५. उत्तेजित करना, भड़काना
८. ज्यों का त्यों
१०. जीर्ण-शीर्ण
११. नौकर, खिदमतगार
१२. नम्र, प्रार्थी
१३. धुला हुआ, निर्मल
१४. प्रार्थी
१५. सामर्थ्य, शक्ति
१७. थाली
१८. परिश्रमी
१९. सियार
२२. खुशी

वर्ग पहेली-6318

१ श	नैः	२ श	नैः	■	■	३ वि	घ्न	४ ह	र्ता
शि	■	शि	■	५ प	थि	क	■	त्या	■
६ क	ट्ठ	व	च	न	■	७ ल	ह	रा	८ ना
ला	■	द	■	९ प	त	न	■	■	ज
■	१० आ	ना	११ जा	ना	■	■	१२ ई	ध	न
■	जा	■	र	■	१३ नि	प	ट	■	ख
१४ प	द	१५ र	ज	■	वि	■	■	१६ सा	१७ रा
ल्ल	■	स	■	१८ आ	दा	१९ ता	■	ह	■
२० वि	द्रो	ही	■	र्थि	■	२१ मी	मां	स	२२ क
त	■	२३ न	र	क	पा	ल	■	■	ष्ट

युसूफ कुरैशी, मो. 8109948408

दैनिक पंचांग

mypandit.com 24 hour astrology service

■ बेजान दारूवाला

ग्रह स्थिति : रविवार 17 सितम्बर, 2023 भाद्र शुक्ल पक्ष 3

राशिफल

मेष - आर्थिक और व्यावसायिक दृष्टि से आज का दिन लाभदायक रहेगा। लंबे समय का आर्थिक आयोजन पूरा कर सकेंगे। व्यवसायिक योजनाएं बना सकेंगे। परोपकार के उद्देश्य से किए गए काम से आपका मन खुश रहेगा। स्वास्थ्य बना रहेगा।

वृषभ - परिश्रम की अपेक्षा कम परिणाम मिलने पर भी आप निष्ठापूर्वक काम को आगे बढ़ाएंगे। आपके क्षेत्र की विशालता और वाणी की मधुरता अन्य लोगों को प्रभावित करेगी। उससे लाभ प्राप्त कर सकेंगे।

मिथुन - आज आपका कुछ ज्यादा ही इमोशनल बना रहेगा। विशेष रूप से पानी वाली जगहों पर जाने से बचें। मन किसी बात को लेकर उलझन में रहेगा। आज आपमें निर्णयशक्ति का अभाव रहेगा।

कर्क - आज काम की सफलता आपकी राह देख रही है। इस कारण आपका आनंद उत्साह दोगुना होगा। मानसिक ताजगी और खुशी का अनुभव होगा। मित्रों, सगे-संबंधियों के साथ मुलाकात और पर्यटन पर जाने का कार्यक्रम बनेगा।

सिंह - आपका दिन मिश्रित फलदायी होगा। लंबी अवधि का आयोजन आपको दुविधा में डालेगा। काम में निर्धारित सफलता नहीं मिलेगी। परिवार में मेल-मिलाप का वातावरण रहेगा।

कन्या - आपकी वाणी का माधुर्य नए संबंध स्थापित करने में उपयोगी साबित होंगे। वैचारिक समृद्धि बढ़ेगी। व्यापार- धंधे में लाभ के साथ सफलता मिलेगी। शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य भी बना रहेगा।

तुला - आज आपको स्वास्थ्य का ध्यान रखना पड़ेगा। मानसिक स्वास्थ्य में भी कमी रहेगी। मनमाना व्यवहार आपको मुसीबत में डाल सकता है। वाणी पर संयम रखें, अन्यथा किसी के साथ झगड़े-फसाद की आशंका है।

वृश्चिक - नौकरी-धंधा और व्यवसाय के क्षेत्र में आज आपको लाभ होगा। इसके साथ मित्रों, सगे- संबंधियों और बुजुर्गों से भी लाभ मिलेगा। सामाजिक समारोह, पर्यटन आदि पर जा सकेंगे। शरीर और मन से आप खूब खुश रहेंगे।

धनु - काम में सफलता का दिन है। नए काम की शुरुआत कर सकेंगे। व्यापारी अपने बिजनेस का आयोजन और विस्तार अच्छी तरह कर सकेंगे। नौकरी में उच्च पदाधिकारी आपकी पदोन्नति के लिए विचार करेंगे।

मकर - आपका आज का दिन मिश्रित फलदायी होगा। बौद्धिक कामों और व्यवसाय में नई विचारधारा अमल में लाएंगे। लेखन और साहित्य से संबंधित प्रवृत्तियों में आपकी रचनात्मकता दिखाई देगी।

कुंभ - नकारात्मक विचारों से मन में हताशा पैदा होगी। इस समय मानसिक उद्वेग और क्रोध की भावना का अनुभव करेंगे। खर्च बढ़ेगा। वाणी पर संयम न रहने के कारण परिवार में मनमुटाव और झगड़े की संभावना है।

मीन - दैनिक कामों से बाहर निकल कर आज आप घूमने- फिरने और मनोरंजन के पीछे समय व्यतीत करेंगे। स्वजनों तथा मित्रों के साथ पिकनिक पर जा सकते हैं।

नोट-उपरोक्त राशिफल बेजान दारूवाला द्वारा पूर्वलिखित है।

सड़क हादसे में एक ही परिवार के नौ सदस्यों की मौत

इस्लामाबाद, 16 सितम्बर (एजेंसियां)। पाकिस्तान के दक्षिणी सिंध प्रांत के घोटकी जिले में शुक्रवार की रात एक सड़क दुर्घटना में दूल्हा सहित एक परिवार के नौ सदस्यों की मौत हो गई। पुलिस के अनुसार, घोटकी में सुक्कुर-मुल्तान मोटरवे पर रवंती ग्रामीण क्षेत्र में एक कंटेनर ट्रेलर ने एक वाहन को टक्कर मार दी। वाहन में दूल्हा समेत परिवार के नौ लोग सवार थे। पुलिस, बचाव दल और स्थानीय लोग घटनास्थल पर पहुंचे और पूरी तरह से क्षतिग्रस्त वाहन में से तीन शव और छह घायलों को निकाला। पुलिस के अनुसार, सभी घायलों ने अस्पताल में इलाज के दौरान दम तोड़ दिया। पुलिस ने कहा कि पीड़ित परिवार सिंध के खैरपुर जिले के बाबरलोई शहर का निवासी था। परिवार के लोग शादी समारोह में शामिल होने के लिए पूर्वी पंजाब प्रांत जा रहा था।

पाकिस्तान के आईएसआई प्रमुख नदीम अंजुम को मिला सेवा विस्तार

नदीम अंजुम को 20 नवंबर 2021 को फैज हमीद की जगह बनाया गया था डीजी आईएसआई

इस्लामाबाद, 16 सितम्बर (एजेंसियां)। पाकिस्तान के इंटर-सर्विसेज इंटेलिजेंस (आईएसआई) के महानिदेशक लेफ्टिनेंट जनरल नदीम अंजुम को सेवा विस्तार दिया गया है। द न्यूज की रिपोर्ट के अनुसार, इस संबंध में एक समरी को गुरुवार देर रात मंजूरी दे दी गई। रिपोर्ट में कहा गया है कि इससे पहले, इंटेलिजेंस ब्यूरो के महानिदेशक फुआद असदुल्लाह को पिछले साल दिसंबर में बरकरार रखा गया था, जब पूर्व प्रधानमंत्री शहबाज शरीफ ने उनकी सेवानिवृत्ति से एक सप्ताह पहले उन्हें तीन साल का विस्तार दिया था। नदीम अंजुम को 20 नवंबर 2021 को फैज हमीद की जगह डीजी आईएसआई बनाया गया था। इससे पहले, वह कराची कोर के कमांडर थे, जहां उन्होंने सितंबर 2019 में थ्री-स्टार जनरल के पद पर पदोन्नति के बाद से सेवा दी थी। मोहरा शेखान, गुज्जर खान के मूल निवासी, अंजुम को सितंबर 1988 में कमीशन दिया गया था और वह पाकिस्तान सैन्य अकादमी के 78वें लॉन्ग कोर्स में थे। वह पंजाब रेजिमेंट से हैं। नदीम ने संघीय प्रशासित जनजातीय क्षेत्र (अब खैबर पख्तूनख्वा में विलय) के अशांत हिस्सों से लेकर बलूचिस्तान और नियंत्रण रेखा पर विभिन्न महत्वपूर्ण पदों पर कार्य किया है। द न्यूज की रिपोर्ट के अनुसार, उन्होंने कुर्रम एजेंसी में एक ब्रिगेड की कमान संभाली और इसके महानिरीक्षक के रूप में फ्रंटियर कांस्टेबुलरी, बलूचिस्तान का नेतृत्व किया। उन्होंने ब्रिटेन में रॉयल कॉलेज ऑफ डिफेंस स्टडीज से स्नातक की उपाधि प्राप्त की और अमेरिका के होनोलूलू में एशिया-पैसिफिक सेंटर फॉर सिक्योरिटी स्टडीज से मास्टर डिग्री प्राप्त की।

बीआरआई पर भारत के विरोध का कारण 'चीन-पाक आर्थिक कॉरिडोर'

इटली ने भी हाल ही में बीआरआई को छोड़ने का दिया है संकेत

नई दिल्ली, 16 सितम्बर (एजेंसियां)। इटली ने हाल ही में संपन्न जी-20 दिल्ली शिखर सम्मेलन के दौरान स्पष्ट रूप से संकेत दिया था कि वह चीन के बेल्ट एंड रोड इनिशिएटिव (बीआरआई) को छोड़ने की योजना बना रहा है। हालांकि, यह कई मध्य एशियाई और यहां तक कि यूरोपीय देशों (जैसे इटली) से बहुत अधिक समर्थन हासिल करने में कामयाब रहा, जिन्होंने इसके माध्यम से एशिया में अपने व्यापार को बढ़ावा देने की संभावना देखी, भारत इस परियोजना का लंबे समय से विरोधी रहा है। बीआरआई पर भारत के विरोध का मुख्य जोर यह रहा है कि चीन-पाकिस्तान आर्थिक कॉरिडोर (सीपीईसी) जो बीआरआई का हिस्सा है, उसकी क्षेत्रीय अखंडता और संप्रभुता का उल्लंघन है क्योंकि इसमें वह भूमि भी शामिल है जिस पर भारत अपना दावा करता है। भारत ने इस पहल में पारदर्शिता और खुलेपन की कमी की ओर भी इशारा किया है। भारत बीआरआई की अवधारणा का विरोध कर रहा है, क्योंकि यह 2017 में वास्तविक कार्यान्वयन के तहत आया था। चीनी राष्ट्रपति शी जिनपिंग ने पहली बार 2013 में इसकी संकल्पना की थी और इसे आर्थिक विकास और साझेदारी को बढ़ावा देने की पहल के रूप में पेश किया गया था। जिससे इसके लिए साइन अप करने वाले सभी मेजबान देशों को लाभ होगा, जबकि कूटनीतिक रूप से इसका उद्देश्य अंतर्राष्ट्रीय सहयोग को गहरा करना था। आधिकारिक तौर पर बीआरआई एशियाई देशों, अफ्रीका, चीन और यूरोप के बीच कनेक्टिविटी और सहयोग में सुधार पर केंद्रित है।

ऑस्ट्रेलिया में भीषण गर्मी की चेतावनी जारी

सिडनी, 16 सितम्बर (एजेंसियां)। आस्ट्रेलिया के न्यू साउथ वेल्स (एनएसडब्ल्यू) राज्य में इस सप्ताह से लेकर अगले सप्ताह तक भीषण गर्मी की चेतावनी जारी की गई है। मौसम के इस मिजाज को देखते हुए सिडनी मैराथन 2023 के लिए करीब 42 हजार धावकों को भीषण गर्मी का सामना करना पड़ सकता है। एनएसडब्ल्यू स्वास्थ्य मंत्रालय (एनएसडब्ल्यू हेल्थ) ने शुक्रवार को जारी एक बयान में बताया कि राज्य के कई क्षेत्रों में अधिकतम तापमान 30 डिग्री सेल्सियस से अधिक होने का अनुमान है। एनएसडब्ल्यू हेल्थ के स्वास्थ्य सुरक्षा के कार्यकारी निदेशक जेरेमी मैकएनल्टी ने चेतावनी देते हुए कहा , गर्म मौसम की स्थिति में राज्य के कुछ हिस्सों में साल के इस समय में तापमान सामान्य से 10 डिग्री सेल्सियस तक अधिक होगा और एनएसडब्ल्यू स्वास्थ लोगों को अपना ख्याल रखने का अपील करता है, जो इस सप्ताह के अंत में अधिक असुरक्षित हो सकते हैं। उन्होंने सलाह दी कि सिडनी और एनएसडब्ल्यू के अन्य हिस्सों में खराब वायु गुणवत्ता होने के आसार हैं। सिडनी मैराथन रविवार को करीब 17 हजार प्रतिभागी 42 किलोमीटर दौड़ने के लिए तैयार हैं।

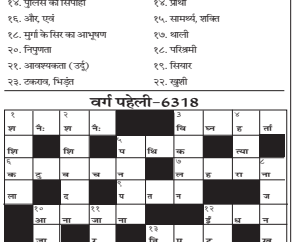

सुडोकू 6319 का हल

4	7	6	2	1	5	9	3	8
9	5	1	3	7	8	6	4	2
2	3	8	9	4	6	7	5	1
7	1	2	6	3	4	5	8	9
6	8	5	1	9	2	3	7	4
3	9	4	8	5	7	2	1	6
8	4	3	7	2	9	1	6	5
1	6	9	5	8	3	4	2	7
5	2	7	4	6	1	8	9	3

आज का इतिहास

1598- नीदरलैंड के नाविकों ने मॉरीशस की खोज की।
1761- कोसाब्रोमा का युद्ध लड़ा गया।
1778- अमेरिका और भारतीय जनजातियों के बीच पहली संधि (फोर्ट पिट) पर हस्ताक्षर किये गये।
1828- क्यूशू, जापान में आये भयानक तूफान से लगभग 10,000 लोग मारे गए थे।
1914- एंड्रयू फिशर तीसरी बार ऑस्ट्रेलिया के प्रधानमंत्री बने।
1934- तत्कालीन सोवियन रूस लीग ऑफ नेशनंस में शामिल हुआ।
1941 - न्यूजीलैंड की लेबर पार्टी ने मृत्युदंड समाप्त कर दिया।
1949 - द्रविड़ मुनेत्र कषगम (द्रमुक) की स्थापना हुई।
1950 - प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी का जन्म।
1956 - भारतीय तेल एवं प्राकृतिक गैस आयोग का गठन हुआ।
1956 - ऑस्ट्रेलिया में पहली बार टेलीविजन पर प्रसारण हुआ।
1956 - नॉर्मन बकले ने अपने मोटरबोट में विश्व जल गति रिकॉर्ड को तोड़ा।
1957 - मलेशिया संयुक्त राष्ट्र में शामिल हुआ।
1974 - बंगलादेश, ग्रेनेडा और गिनी बिसाऊ संयुक्त राष्ट्र में शामिल हुए।
1976 - नासा ने सार्वजनिक रूप से अपने पहले स्पेस शटल का खुलासा किया।
1988 - दक्षिण कोरिया के सोल में ग्रीष्मकालीन ओलंपिक का आयोजन हुआ।
2004 - यूरोपीय संसद ने मालदीव पर प्रतिबंध लगाने का प्रस्ताव पारित किया।

परेशानी — *बाढ़ से जनजीवन पर व्यापक असर*

लीबिया में बाढ़ से 38,640 से अधिक लोग हुए विस्थापित

त्रिपोली, 16 सितम्बर (एजेंसियां)। पूर्वोत्तर लीबिया में भूमध्यसागरीय तूफान डेनियल के कारण आयी भारी बाढ़ के बाद सबसे अधिक प्रभावित क्षेत्रों में 38,640 से अधिक लोग विस्थापित हुए हैं। यह जानकारी इंटरनेशनल ऑर्गनाइजेशन फॉर माइग्रेशन (आईओएम) ने शुक्रवार को दी। आईओएम ने एक बयान में कहा कि अकेले बंदरगाह शहर डर्ना में 2 हजार 217 इमारतें नष्ट हो गईं। यह शहर दशकों में आयी लीबिया की सबसे भीषण बाढ़ से सबसे ज्यादा प्रभावित हुआ है।

अब तक 5 हजार से अधिक लोगों की गई जान

लीबिया की हाउसिंग एंड यूटिलिटीज प्रोजेक्ट्स कार्यान्वयन एजेंसी ने शुक्रवार को खुलासा किया कि बाढ़ ने लगभग 5 हजार घरों को नुकसान पहुंचाया है। इसमें कहा गया है कि बाढ़ ने जल आपूर्ति नेटवर्क को भी बर्बाद कर दिया है, जिससे प्रभावित क्षेत्रों में लोगों को पीने के पानी की गंभीर कमी हो गई है। आधिकारिक आंकड़ों से पता चलता है कि बाढ़ ने अब तक कम से कम 5 हजार 500 लोगों की जान ले ली है और 10 हजार अन्य लापता हो गए हैं। स्थानीय सूत्रों ने बताया कि सुरक्षा सेवाओं ने शुक्रवार को डेर्ना में बरामद शवों की तस्वीरें लेने के बाद उन्हें सामूहिक रूप से दफनाना जारी रखा और शहर के सरकारी अभियोजक पीड़ितों के डीएनए नमूनों के संग्रह की निगरानी कर रहे हैं ताकि बाद में उनके रिश्तेदारों द्वारा उनकी पहचान की जा सके। स्पैनिश मानवीय सहायता कार्यकर्ता स्टील कैविलो ने डर्ना में विनाश की सीमा पर भय व्यक्त किया और कहा कि अब जीवित बचे लोगों को खोजने की उम्मीद धूमिल हो रही है। राष्ट्रीय रोग नियंत्रण केंद्र के निदेशक हैदर अल-सईह ने प्रभावित क्षेत्रों में शव सड़ने लगे तो शुक्रवार को बाढ़ से प्रभावित क्षेत्रों को तत्काल खाली करने का आह्वान किया। अल-सयाह के मुताबिक पीने के पानी को सीवेज के पानी में मिलाने के बाद डर्ना में जल प्रदूषण के 55 मामले सामने आए हैं। डेरना के निवासी ओसामा मोहम्मद ने कहा कि शहर के 40 प्रतिशत हिस्से में बिजली नहीं है। लीबिया के सामाजिक कार्यकर्ता सुलेमान अल-मबरुक ने कहा, दूरसंचार कमजोर है, पीने का पानी नहीं है और शहर में केवल दो बेकरियां काम कर रही हैं।

दुनिया को जानें

अमेरिका ने यूनिवर्सल फ्लू वैक्सीन का परीक्षण किया शुरू

लॉस एंजिल्स, 16 सितम्बर (एजेंसियां)। अमेरिका ने एक नए यूनिवर्सल फ्लू वैक्सीन की जांच शुरू कर दी है। यह घोषणा यूएस नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ हेल्थ (एनआईएच) ने की है। समाचार एजेंसी शिन्हुआ की रिपोर्ट के अनुसार, यूएस नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ एलर्जी एंड इंफेक्शियस डिजीज (एनआईएआईडी) द्वारा प्रायोजित परीक्षण, सुरक्षा और प्रतिरक्षा प्रतिक्रिया उत्पन्न करने की क्षमता के लिए फ्लुमोस-वी2 नामक टीके का परीक्षण करेगा। वैक्सीन को एनआईएआईडी के वैक्सीन रिसर्च सेंटर के शोधकर्ताओं द्वारा डिजाइन किया गया है। इसे स्व-संयोजन नैनोकण मचानों पर दोहराए जाने वाले पैटर्न में इन्फ्लूएंजा वायरस हेमाग्लगुटिनिन प्रोटीन के हिस्से को प्रदर्शित करके कई अलग-अलग इन्फ्लूएंजा वायरस उपभेदों के खिलाफ एंटीबॉडी प्रेरित करने के लिए डिजाइन किया गया है। वायरस प्रोटीन के इन हानिरहित टुकड़ों के संपर्क में आने से प्रतिरक्षा प्रणाली वास्तविक वायरस को पहचानने और उससे लड़ने के लिए तैयार हो जाती है। शुक्रवार को एनआईएच के अनुसार, जब जानवरों पर परीक्षण किया गया, तो प्रायोगिक टीके के परिणामस्वरूप मजबूत एंटीबॉडी प्रतिक्रियाएं हुईं।

खेल जगत

रोहन बोपन्ना विदाई डेविस कप मुकाबले के लिए तैयार

लखनऊ, 16 सितम्बर (एजेंसियां)। करीब 23 साल के लंबे अंतराल पर डेविस कप की मेजबानी कर रही नवाब नगरी लखनऊ रविवार को भारत के स्टार टेनिस खिलाड़ी रोहन बोपन्ना के आखिरी डेविस कप मुकाबले की गवाह बनेगी। टेनिस के विश्व कप के रूप में माने जाने वाले डेविस कप में विश्व ग्रुप-2 के मुकाबले शनिवार को गोमती नगर के विजयंत खंड मिनी स्टेडियम में भारत के शशिकुमार मुकुंद और मोरक्को के यासिन डिलीमी के बीच एकल मैच से शुरू हो गये। दूसरा एकल सुमित नागल और एडम माउंडिर के बीच खेल जायेगा। रविवार को रोहन बोपन्ना और युकी भांबरी की भारतीय जोड़ी मोरक्को के इलियट बेनचेट्रिट और यूनुस लालामी लारौसी से मुकाबला करेगी। बोपन्ना ने हाल ही में अमेरिकी ओपन के युगल फाइनल में प्रतिस्पर्धा करने वाले सबसे उम्रदराज खिलाड़ी बनकर इतिहास रचा था।

अगर मैं थोड़ी सामान्य बल्लेबाजी करता तो हम जीत जाते : शुभमन गिल

कोलंबो, 16 सितंबर (एजेंसियां)। सलामी बल्लेबाज शुभमन गिल ने अपना पांचवां एकदिवसीय शतक व्यर्थ जाने के बाद स्वीकार किया कि उन्हें टीम को संभालना चाहिए था। अगर उन्होंने सामान्य रूप से बल्लेबाजी की होती तो 266 रनों का पीछा किया जा सकता था। शुक्रवार को एशिया कप के रोमांचक सुपर फोर मैच में बांग्लादेश ने भारत को छह रनों से हरा दिया।

आर प्रेमदासा स्टेडियम की कठिन पिच पर, जहां उनकी टीम के बहुत कम साथी बल्ले से अच्छा प्रदर्शन कर पाए, गिल ने बांग्लादेश के चार सदस्यीय स्पिन आक्रमण के खिलाफ 133 गेंदों में 121 रनों की शानदार पारी खेली। उन्होंने अपने पैरों और क्रीज का अच्छा इस्तेमाल किया और आठ चौके और पांच छक्के लगाते हुए स्ट्राइक-रोटेशन पर भी भरोसा किया। लेकिन गिल का, मेहदी हसन की धीमी और ऑफ स्टंप से बाहर की डिलीवरी पर लॉन्ग ऑफ पर कैच आउट होना, मैच में निर्णायक मोड़ बन गया और अक्षर पटेल की 42 रन की शानदार पारी के बावजूद, भारत 259 रन पर आउट हो गया।

गिल ने मैच के बाद प्रेस कॉन्फ्रेंस में कहा, जब आप बल्लेबाजी कर रहे होते हैं तो बहुत अधिक एड्रेनालाईन होता है, कभी-कभी आप गलत अनुमान लगाते हैं। यह मेरी ओर से गलत अनुमान था। जब आप आउट हुए, तो आपने देखा कि बहुत समय बचा था। अगर मैंने थोड़ी सामान्य रूप से बल्लेबाजी की होती या उतनी आक्रामक तरीके से नहीं, तो हमें जीत हासिल करने में सक्षम होना चाहिए था। उन्होंने कहा,सौभाग्य से, यह हमारे लिए फाइनल नहीं था। ये उस तरह की सीख हैं जो एक बल्लेबाज के रूप में आप लेना चाहते हैं और आगे बढ़ना चाहते हैं। सौभाग्य से, यह मैच हमारे लिए फाइनल नहीं था और एक बल्लेबाज के रूप में ये उस तरह की सीख हैं। मुझे यह सीख लेना पसंद है और इसमें सुधार करना पसंद है।

गिल ने 2023 में वनडे में 1000 रनों का आंकड़ा भी पार कर लिया और बांग्लादेश के खिलाफ कठिन परिस्थितियों में उनके उत्कृष्ट प्रदर्शन ने विभिन्न परिस्थितियों में उनकी अनुकूलन क्षमता का प्रदर्शन किया। धीमे विकेटों पर, बहुत सारी डॉट गेंदें होती हैं। एक बल्लेबाजी समूह के रूप में हमारी बातचीत डॉट गेंदों को कम करने और स्ट्राइक रोटेट करने पर है। ट्रैक धीमा था और टर्न ले रहा था, इसलिए सिंगल लेना आसान नहीं है, खासकर नए बल्लेबाजों के लिए। बात इसे देर तक और शरीर के करीब खेलने की थी। धीमी विकेटों पर, विकेट के स्क्वायर पर अधिक रन बनते हैं और नीचे की ओर कम। तो, उद्देश्य यही था।

हालाँकि बांग्लादेश के स्पिनरों ने सामूहिक रूप से केवल चार विकेट लिए, लेकिन वे बीच के ओवरों में रन-फ्लो को रोकने में सक्षम थे, गिल ने कहा कि एक पहलू अभी भी भारत के लिए प्रगति पर है। कोई चिंता की बात नहीं है, लेकिन निश्चित रूप से यह एक ऐसा क्षेत्र है जिसमें हम सुधार करना चाहते हैं। यहां आने से पहले हमने बेंगलुरु में एक शिविर लगाया था और इसी तरह के विकेटों पर अभ्यास किया था। विश्व कप इतना लंबा टूर्नामेंट है, और जैसे-जैसे हम टूर्नामेंट में आगे बढ़ेंगे, विकेट थोड़े धीमे होते जाएंगे। आने वाले बल्लेबाजों के लिए स्ट्राइक रोटेट करना और डॉट गेंदों को कम करना आसान नहीं है। बल्लेबाजी इकाई और गेंदबाजी समूह के रूप में हम इस पर काबू पाना चाहते हैं।

एशिया कप फाइनल के लिए वाशिंगटन को बुलाया गया

एशिया कप के फाइनल से पहले बंगलादेश के खिलाफ मैच के दौरान चोटिल हुये ऑलराउंडर अक्षर पटेल के कवर के रूप में वॉशिंगटन सुंदर को बुलाया गया है। वाशिंगटन सुंदर अक्षर पटेल के कवर के रूप में श्रीलंका के खिलाफ रविवार को होने वाले फाइनल से पहले कोलंबो में भारत की एशिया कप टीम के साथ जुड़ने के लिए रवाना हो गए हैं। बंगलादेश के साथ एशिया कप के सुपर फोर के अंतिम मैच में अक्षर चोटिल हो गए थे। अभी तक यह साफ नहीं है कि अक्षर पटेल फाइनल में खेलेंगे या नहीं, हालांकि भारतीय टीम प्रबंधन ने एहतियातन सुंदर को कोलंबो बुलाया है। उल्लेखनीय है कि बंगलादेश के खिलाफ शुक्रवार को सुपर फोर मुकाबले में थ्रो से चोट लगने के बाद अक्षर की बांह में सूजन आ गई है। ईएसपीएनक्रिकइन्फो का मानान है कि अक्षर के हाथ में कोई फ्रैक्चर नहीं है और यह कदम सिर्फ एहतियाती है क्योंकि बल्लेबाजी के दौरान क्रीज में फुल-स्ट्रेच डाइव लगाने का प्रयास करते समय अक्षर की कलाई पर भी चोट लग गई थी। अक्षर ने हैमस्ट्रिंग की जकड़न की भी शिकायत की, जिस पर बल्लेबाजी करते समय टेप लगाने की जरूरत पड़ी। फाइनल के लिए उनकी उपलब्धता पर अंतिम फैसला लेने से पहले अगले 24 घंटों तक उनकी निगरानी की जाएगी । वॉशिंगटन एशियन गेम्स के लिए चुनी गई भारतीय् क्रिकेट टीम में भी शामिल हैं और जल्द ही कोलंबो में टीम से जुड़ जाएंगे। वॉशिंगटन का एशिया कप के फाइनल में टीम इंडिया से जुड़ना चौंकाने वाला नहीं है क्योंकि श्रीलंका के बैटिंग ऑर्डर में बाएं हाथ के कई बल्लेबाज हैं। वाशिंगटन की ऑफ ब्रेक गेंदबाजी पावरप्ले में टीम इंडिया के कारगर साबित हो सकती है। अक्षर पटेल वर्ल्ड कप के लिहाज से टीम इंडिया के लिए काफी अहम खिलाड़ी हैं। इसी वजह से भारतीय टीम मैनेजमेंट उनके साथ कोई जोखिम नहीं ले सकती हैं। सुपर फोर के अंतिम मैच में चोट लगने के बावजूद अक्षर ने बल्लेबाजी जारी रखी और टीम फिजियो ने समय समय पर आकर उनकी कलई में स्प्रे किया। उन्होंने भारत के 266 रनों के लक्ष्य का पीछा करते हुए 38 गेंदों में 42 रनों की शानदार पारी खेली। भारत आखिरकार छह रन से जीत हासिल करने से चूक गया।

जेसन रॉय की फिटनेस का स्तर इस समय सबसे बड़ी चिंता का विषय : इयोन मोर्गन

लंदन, 16 सितंबर (एजेंसियां)। इंग्लैंड के 2019 वनडे विश्व कप विजेता कप्तान इयोन मोर्गन का मानना है कि दाएं हाथ के सलामी बल्लेबाज जेसन रॉय की फिटनेस का स्तर इस समय सबसे बड़ी चिंता का विषय है, खासकर तब जब वह पीठ की ऐंठन के कारण न्यूजीलैंड पर टीम की 3-1 वनडे सीरीज जीत से चूक गए थे।

उनकी अनुपस्थिति में, बाएं हाथ के सलामी बल्लेबाज डेविड मलान ने सलामी बल्लेबाज के रूप में अपनी संभावनाओं का भरपूर फायदा उठाया है। मलान ने श्रृंखला में पहले 54 और 96 रन बनाने के बाद न्यूजीलैंड के खिलाफ चौथे वनडे में 127 रन बनाए और 21 पारियों में 1,000 वनडे रन पूरे किए, जिसमें उनका औसत 61.52 रहा।

मॉर्गन ने स्काई स्पोर्ट्स पर कहा, अब सबसे बड़ी चिंता रॉय की फिटनेस का स्तर है। उन्हें आयरलैंड श्रृंखला में खेलना है क्योंकि आप इस समय चयन बैठक में किसी भी आत्मविश्वास के साथ नहीं बैठ सकते हैं और उन्हें विश्व कप के लिए चुन सकते हैं। उन्हें इससे गुजरना होगा।

रॉय ने मॉर्गन की कप्तानी में खेला जब उन्होंने लॉर्ड्स में नाटकीय समापन के बाद घरेलू धरती पर 2019 में पुरुष वनडे विश्व कप जीता। अगस्त में, रॉय को 15 सदस्यीय टीम में नामित किया गया था, जिसे इंग्लैंड 5 अक्टूबर से 19 नवंबर तक भारत में ट्रॉफी की रक्षा के लिए ले जाएगा।

इंग्लैंड के पूर्व कप्तान माइकल आथर्टन ने रॉय की चल रही फिटनेस चिंताओं के प्रति सहानुभूति व्यक्त करते हुए कहा कि पीठ की ऐंठन से निपटना मुश्किल है। मुझे लगता है कि (रॉय की स्थिति) कई कारणों से चिंताजनक है, जिसमें मार्च के बाद से 50 ओवर के क्रिकेट में उनकी कमी भी शामिल है, जब उन्होंने बांग्लादेश में अच्छा प्रदर्शन किया था।

उन्होंने थोड़ा विटैलिटी ब्लास्ट, थोड़ा अमेरिका में मेजर लीग क्रिकेट, थोड़ा सा हंड्रेड खेला है, इसलिए यह श्रृंखला 50 ओवर के क्रिकेट की लय से फिर से परिचित होने का अवसर होगी जो कि टी20 से बिल्कुल अलग है, खासकर ऑर्डर के शीर्ष पर।

दूसरी चिंता चोट के प्रकार को लेकर है। मैं अपने अनुभव से कहता हूं कि पीठ की ऐंठन से निपटना मुश्किल होता है क्योंकि वे अचानक आते हैं और जब आप उन्हें प्राप्त करते हैं तो वे आपके दिमाग के पीछे होते हैं। आपको इस पर पूरा भरोसा नहीं है। आथर्टन ने यह भी बताया कि विश्व कप के लिए भारत में लगातार यात्रा करने से रॉय को टीम में अपनी जगह बरकरार रखने में मदद मिलेगी। भारत में इस टूर्नामेंट की प्रकृति का मतलब है कि आप एक स्थान से दूसरे स्थान तक उड़ान भर रहे हैं। हर दिन एक उड़ान का दिन है, अलग-अलग होटल, अलग-अलग बिस्तर, बहुत सारी यात्राएं, जो उस प्रकार की चोट के लिए अच्छा नहीं है। इंग्लैंड ने अभी तक अंतिम टीम का नाम नहीं बताया है और कौन जानता है, रॉय इसमें शामिल नहीं हो पाएं।

वर्षों के संघर्ष और बलिदान का फल मिला है : बिचू देवी

बेंगलुरु, 16 सितंबर (एजेंसियां)।। फुटबॉल के प्रति गहरी दीवानगी वाले राज्य मणिपुर में पली-बढ़ी बिचू देवी खारीबाम का फुटबॉलर बनने की इच्छा होना कोई आश्चर्य की बात नहीं है। लेकिन नियति ने उसके लिए कुछ और ही सोच रखा था। बिचू ने याद किया, मणिपुर से होने के कारण फुटबॉल को चुनना मेरे लिए स्वाभाविक था। मुझे खेल खेलना पसंद था, लेकिन यह मेरे पिता ही थे जिन्होंने सुझाव दिया कि मुझे हॉकी में हाथ आजमाना चाहिए क्योंकि फुटबॉल टीम में जगह नहीं बन पा रही थी। उन्होंने मुझसे कहा कि अगर मुझे हॉकी पसंद नहीं है, तो यह ठीक रहेगा और मैं हमेशा फुटबॉल के लिए वापस आ सकती हूं।

एक बार जब मैंने खेलना शुरू किया, तो मुझे खेल से प्यार होने लगा। मैं एक स्ट्राइकर के रूप में खेलती थी लेकिन मैदान पर मेरी चपलता और मेरी ऊंचाई को देखते हुए, मेरे एक कोच ने मुझे गोलकीपिंग की कोशिश करने की सलाह दी। लेकिन मैं कभी ऐसा नहीं बनना चाहती थी । शुरुआत में यह मेरे लिए कठिन था, हालांकि, जैसे-जैसे समय बीतता गया, मैंने इसे अपनाना शुरू कर दिया। यह सच है कि जो कुछ भी होता है, अच्छे के लिए होता है। अगर यह सब नहीं होता, तो मैं यहां नहीं होती। 2023 में तेजी से आगे बढ़ते हुए, हॉकी स्टिक उठाए हुए लगभग एक दशक बाद, मणिपुर की युवा खिलाड़ी 19वें एशियाई खेलों के लिए हांगझाऊ जा रही है, जहां भारत स्वर्ण के लिए प्रतिस्पर्धा करेगा। अर्जेंटीना में 2018 युवा ओलंपिक में आकर्षक प्रदर्शन के साथ अपनी सफलता हासिल करने के बाद से उनका करियर तेजी से आगे बढ़ रहा है, जहां भारत ने ऐतिहासिक रजत पदक जीता था।

पाकिस्तानी टीम को वनडे विश्व कप से पहले बड़ा झटका, गेंदबाज नसीम के विश्वकप खेलने पर संशय

कोलम्बो 16 सितंबर (एजेंसियां)। पाकिस्तान को वनडे विश्वकप से पहले एक बड़ा झटका लगा है, उनके तेज गेंदबाज नसीम शाह के विश्व कप से बाहर होने की आशंका है। तेज गेंदबाज नसीम का स्कैन करने पर उनके दाहिने कंधे की चोट का पता चला , जो शुरुआती आशंका से कहीं ज्यादा गंभीर है।

पाकिस्तान क्रिकेट बोर्ड (पीसीबी) ने यह नहीं बताया है कि नसीम की चोट कितनी गंभीर है। गेंदबाज के दाहिने कंधे के नीचे की मांसपेशियों में चोट लगने के कारण दुबई में उसका स्कैन कराया गया , जो उन्हें सोमवार को भारत के खिलाफ गेंदबाजी करते समय लगी थी। वह अपने ओवर के बीच में मैदान से बाहर थे और बाद में प्रतियोगिता से बाहर हो गए।

पाकिस्तान के दूसरे गेंदबाज हारिस रउफ ने भी साइड स्ट्रेन के कारण पांच ओवर के बाद गेंदबाजी नहीं की और पाकिस्तान ने विश्व कप से पहले एहतियात के तौर पर श्रीलंका के खिलाफ उन्हें आराम दिया।

नसीम को अभी लम्बे समय तक मैदान से बाहर रहने पर विचार किया जा सकता है। साल के अंत में ऑस्ट्रेलिया में टेस्ट सीरीज़ में उनकी टीम में जगह बनाने पर भी संदेह जताया जा रहा है और वह 2024 में पाकिस्तान सुपर लीग में भी खेलने से चूक सकते हैं।

एक वनडे गेंदबाज के रूप में उनकी विकेट चटकाने की क्षमता बहुत अधिक है। उन्होंने केवल 14 मैचों में 17 से कम की औसत से 32 विकेट लिए हैं। इस 20 वर्षीय तेज गेंदबाज को अपने करियर के शुरुआती दौर में कई चोटों की समस्या का सामना करना पड़ा है। वह 17 साल की उम्र में पीठ की चोट के कारण अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट में सिर्फ एक साल बिताने के बाद 14 महीनों के लिए दूरी बनाए रहना पड़ा था। उनकी वापसी के छह सप्ताह बाद काउंटी चैम्पियनशिप में कंधे की एक और चोट ने उन्हें एक महीने के लिए टीम से बाहर कर दिया था।

विश्व कप में भारत बेहद मजबूत गेंदबाजी लाइनअप के साथ उतरे : रैना

नई दिल्ली, 16 सितंबर (एजेंसियां)। भारत के पूर्व क्रिकेटर और 2011 वनडे विश्व कप विजेता टीम के सदस्य रहे सुरेश रैना का मानना है कि मौजूदा टीम को ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ अपनी आगामी वनडे सीरीज में एक बहुत मजबूत गेंदबाजी लाइन-अप की जरूरत है ताकि उन्हें अगले महीने के शोपीस इवेंट विश्व कप में किसी भी टोटल का बचाव करने का आत्मविश्वास मिल सके। एकदिवसीय विश्व कप से पहले, भारत और ऑस्ट्रेलिया क्रमशः 22, 24 और 27 सितंबर को मोहाली, इंदौर और राजकोट में तीन मैचों की 50 ओवरों की श्रृंखला खेलेंगे। रैना ने जियोसिनेमा पर कहा, इंदौर का मैदान बहुत छोटा है और राजकोट का ट्रैक समतल है। इसके अलावा, ऑस्ट्रेलियाई टीम ने मोहाली में काफी खेला है और इसलिए मेरा मानना है कि उनका पलड़ा भारी रहेगा। इन छोटे मैदानों में, 340-350 के स्कोर का भी पीछा किया जा सकता है और भारतीय टीम को विश्व कप में किसी भी तरह के स्कोर का बचाव करने के लिए एक बहुत मजबूत गेंदबाजी लाइनअप की आवश्यकता होगी। रैना को यह भी लगता है कि शार्दुल ठाकुर और मोहम्मद शमी गेंद के साथ अहम भूमिका निभाते हैं, साथ ही रवींद्र जडेजा भी, खासकर तब जब ऑस्ट्रेलिया के पास कई बाएं हाथ के बल्लेबाज हैं। हां, उनके पास बल्लेबाजी क्रम में बहुत सारे बाएं-दाएं संयोजन हैं। मेरे लिए शार्दुल ठाकुर एक्स-फैक्टर होंगे। निश्चित रूप से, मोहम्मद शमी।

मैं शमी को चुनूंगा क्योंकि उसके पास अपनी गेंदों को स्विंग कराने और यॉर्कर फेंकने का कौशल है। ऑस्ट्रेलियाई टीम में बहुत सारे बाएं हाथ के खिलाड़ी हैं और यह देखना दिलचस्प होगा कि क्या रवींद्र जड़ेजा विकेट लेने में कामयाब होते हैं। सीरीज के लिए अपने प्रमुख खिलाड़ियों के बारे में पूछे जाने पर रैना ने कहा, %रोहित शर्मा सीरीज के दौरान सबसे ज्यादा रन बनाएंगे।

विश्व कप से पहले ऑस्ट्रेलिया को झटका, ट्रैविस हेड को फ्रैक्चर

केप टाउन, 16 सितंबर (एजेंसियां)। विश्व कप से पहले आस्ट्रेलिया को तगड़ा झटका लगा है जब उसके सलामी बल्लेबाज ट्रैविस हेड साउथ अफ्रीका के खिलाफ खेली जा रही एक दिवसीय अंतरराष्ट्रीय (वनडे) सीरीज के चौथे मुकाबले में घायल हो गए। दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ खेली जा रही मौजूदा सीरीज के चौथे वनडे में गेराल्ड कोएत्ज़ी की एक खतरनाक तरीके से उठी एक शॉर्ट गेंद लगने से हेड के बाएं हाथ में फ्रैक्चर हो गया। ऑस्ट्रेलियाइ बल्लेबाज़ विश्व कप में खेलने के लिए समय पर फिट होंगे या नहीं यह कहना अभी मुश्किल है

मैकडॉनल्ड्स ने आईसीसी के हवाले से कहा, यह एक फ्रैक्चर है। यह कितना गंभीर है और उन्हें ठीक होने में कितना समय लगेगा, इसका पता स्कैन के बाद लगेगा। मुझे लगता है कि ट्रैविस हेड के बारे में विस्तार से तभी बताया जा सकता है जब वह स्कैन के लिए जाएंगे। मैं कोई डॉक्टर नहीं हूं, लेकिन मुझे लगता है कि यह चोट ज़्यादा है। विश्व कप नजदीक आ रहा है और ऐसे में यह होना बेहद दुखद है। हेड को विश्व कप के लिए ऑस्ट्रेलिया की प्रारंभिक 15-खिलाड़ियों की टीम में शामिल किया गया है और 29 वर्षीय खिलाड़ी को आठ अक्टूबर को चेन्नई में मेजबान भारत के खिलाफ टूर्नामेंट के अपने टीम के शुरुआती मैच के लिए फिट होने के लिए अब कड़ी मेहनत का सामना करना पड़ेगा।

विश्व कप में प्रतिस्पर्धा करने वाली टीमों को टूर्नामेंट के लिए अपनी अंतिम 15-खिलाड़ियों की टीम आईसीसी को सौंपने के लिए 28 सितंबर तक का समय दिया गया है और उस तारीख के बाद कार्यक्रम आयोजकों की अनुमति से ही बदलाव किए जा सकते हैं। यदि हेड को बाहर कर दिया जाता है तो ऑस्ट्रेलिया के पास उनकी जगह लेने के लिए मार्नस लाबुशेन और हार्ड-हिटिंग ऑलराउंडर टिम डेविड जैसे विकल्प मौजूद होंगे।

भारत आंकड़ों के आधार पर क्रिकेट खेलता है और अक्सर अपने आंकड़ों को लेकर चिंतित रहता है : साइमन डूल

लंदन, 16 सितंबर (एजेंसियां)। न्यूजीलैंड के पूर्व तेज गेंदबाज साइमन डूल ने पुरुष वनडे विश्व कप से पहले भारतीय टीम पर तीखी टिप्पणी करते हुए कहा कि उनके बल्लेबाज आंकड़ों के आधार पर क्रिकेट खेलने में ज्यादा रुचि रखते हैं और अक्सर अपने आंकड़ों को लेकर भी काफी चिंतित रहते हैं। भारत, 1983 और 2011 का चैंपियन, अपने 2023 पुरुष एकदिवसीय विश्व कप अभियान की शुरुआत 8 अक्टूबर को चेन्नई के एमए चिदंबरम में ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ करेगा।

डूल ने स्काई स्पोर्ट्स पर कहा, निडर क्रिकेट उनका मुद्दा है। वे पर्याप्त रूप से निडर क्रिकेट नहीं खेलते हैं। वे आंकड़ों पर आधारित क्रिकेट खेलते हैं और वे अक्सर अपने आंकड़ों को लेकर चिंतित रहते हैं। और मेरे लिए यही वह क्षेत्र है जिसके बारे में मैं उनकी बल्लेबाजी को लेकर चिंतित हूं। डूल ने यह भी कहा कि कठिन परिस्थितियों में निडर होकर खेलने में भारत की असमर्थता ने उन्हें हाल के आईसीसी टूर्नामेंटों में निराश किया है। उनके पास सारी प्रतिभाएं हैं और अगर दुनिया के सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ी नहीं भी हैं तो उनमें से कुछ सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ी हैं। लेकिन यह टूर्नामेंट के सही समय पर निडर क्रिकेट खेलने के बारे में है और मुझे लगता है कि पिछले कुछ विश्व कप में इसी बात ने उन्हें निराश किया है।

वे वहां जाकर जोखिम नहीं लेते क्योंकि वे इस बात को लेकर बहुत चिंतित रहते हैं कि क्या कहा जा सकता है या क्या छापा जा सकता है या कोई उनसे टीम में उनकी जगह के बारे में क्या पूछ सकता है। यही वह क्षेत्र है जिससे मैं चिंतित हूं। इंग्लैंड के पूर्व कप्तान नासिर हुसैन डूल के विचारों से सहमत थे। दूसरी चीज़ जिस पर उन्हें काबू पाना होगा वह है दबाव। अब आप तर्क देंगे कि एक भारतीय क्रिकेटर हर वक्त दबाव में रहता है. लेकिन 2011 (2013 चैंपियंस ट्रॉफी) के बाद से शायद वे आईसीसी आयोजनों में पिछड़ गए हैं, जब वे नॉकआउट चरण तक पहुंचते हैं। हम विश्व टी20 में एडिलेड में थे, जहां उन्होंने इंग्लैंड के खिलाफ औसत से कम स्कोर बनाया और इंग्लैंड ने उन्हें (दस विकेट से) हरा दिया। 2019 विश्व कप सेमीफाइनल में न्यूजीलैंड के खिलाफ उस पिच पर जो थोड़ा अच्छा प्रदर्शन कर रही थी, उन्होंने आगे बढ़ने का प्रयास किया।

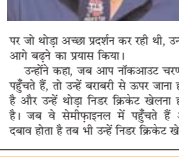

उन्होंने कहा, जब आप नॉकआउट चरण में पहुँचते हैं, तो उन्हें बराबरी से ऊपर जाना होता है और उन्हें थोड़ा निडर क्रिकेट खेलना होता है। जब वे सेमीफ़ाइनल में पहुँचते हैं और दबाव होता है तब भी उन्हें निडर क्रिकेट खेलने की ज़रूरत होती है।

> भारतीय खिलाड़ी पर्याप्त रूप से निडर क्रिकेट नहीं खेलते हैं। वे आंकड़ों पर आधारित क्रिकेट खेलते हैं और वे अक्सर अपने आंकड़ों को लेकर चिंतित रहते हैं। और मेरे लिए यही वह क्षेत्र है जिसके बारे में मैं उनकी बल्लेबाजी को लेकर चिंतित हूं: साइमन डूल

नासिर ने कहा कि भारत के लिए उन्हें जो एकमात्र चिंता दिखती है वह यह है कि उनके बल्लेबाज अपने हाथ नहीं घुमाते हैं और उनके गेंदबाज बल्ले से ज्यादा अच्छा प्रदर्शन नहीं करते हैं। शायद उनमें जो कमी है वह यह है कि यदि आप उनके बल्लेबाजों को देखें, तो उनके बल्लेबाज गेंदबाजी नहीं करते हैं और उनके गेंदबाज बल्लेबाजी नहीं करते हैं। इसलिए उनकी टीम के लिए यह एक अलग स्थिति है कि वह इंग्लैंड में जहां सभी ऑलराउंडर मौजूद हैं या ऑस्ट्रेलिया में जहां सभी ऑलराउंडर मौजूद हैं। इंग्लैंड के 2019 वनडे विश्व कप विजेता कप्तान इयोन मोर्गन का मानना है कि घरेलू परिस्थितियों में खेलने से भारत को अन्य टीमों पर भारी बढ़त मिलेगी, लेकिन उन्हें निडर होकर खेलने और बाहरी शोर से दूर रहने की जरूरत है।

मुझे याद है कि भारत ने पिछली गर्मियों में यहां का दौरा किया था। राहुल द्रविड़ ने कोच के रूप में अपनी शुरुआती प्रेस कॉन्फ्रेंस में कहा, हम निडर क्रिकेट खेलना चाहते हैं। वे लगातार द्विपक्षीय सीरीज जीत रहे हैं, लेकिन टी20 विश्व कप में हार गए, जो एक नए कोच के रूप में उनकी पहली परीक्षा थी। एडिलेड में उन्हें यह सही नहीं लगा, लेकिन घरेलू परिस्थितियाँ आपको एक निश्चित स्तर का आराम और आदत देती हैं। वे पहले से ही वर्षों से आगे बढ़ चुके हैं, यह एक ऐसा लाभ है जो अन्य टीमों के पास नहीं है। उन्होंने निष्कर्ष निकाला, इसलिए भारत में शोर को रोकना बहुत आसान होगा क्योंकि उन्होंने पहले भी ऐसा किया है लेकिन ऐसा करने का निर्देश कप्तान और कोच से आएगा।

सार संक्षेप

एशिया कप फाइनल से पहले श्रीलंका को चोट का झटका

कोलंबो। पाकिस्तान के खिलाफ एशिया कप सुपर फोर मुकाबले में चोट के शिकार हुये श्रीलंका के हरफनमौला महेश थीक्षणा भारत के खिलाफ रविवार को खेले जाने वाले खिताबी मैच के लिये उपलब्ध नहीं होंगे। पाकिस्तान के खिलाफ सुपर फोर मैच के दौरान उनकी दाहिनी हैमस्ट्रिंग में खिंचाव आ गया था। शनिवार को आईसीसी की एक रिपोर्ट में कहा गया कि स्कैन के बाद मांसपेशियों में चोट की पुष्टि हुई। चयनकर्ताओं ने थीक्षाणा की जगह सहान अराचिगे को टीम में शामिल किया है। अराचिगे ने अब तक दो वनडे मैच खेले हैं। वह मध्यक्रम में बल्लेबाजी करते हैं और ऑफ-ब्रेक गेंदबाजी करते हैं। थीक्षाणा की चोट मेजबान टीम के लिए बड़ा झटका है। वह श्रीलंका के लिए एक प्रमुख खिलाड़ी थे और उन्होंने पांच मैचों में 29.12 की औसत से आठ विकेट लिए थे। वह रिहैबिलिटेशन के लिए हाई परफॉर्मेंस सेंटर लौटेंगे।

हांगझाऊ में एथलीट गांव खुले, चीनी दल ने प्रवेश किया

हांगझाऊ। हांगझाऊ एशियाई खेल गांव का उद्घाटन समारोह शनिवार को यहां आयोजित किया गया, जो मेजबान चीन के खेल प्रतिनिधिमंडल के लिए टीम के स्वागत समारोह के रूप में भी कार्य करता है। गांव के मेयर ली हुओलिन ने स्वागत भाषण के साथ दर्शकों को संबोधित करते हुए कहा कि स्वयंसेवक और अन्य कर्मचारी उच्च स्तरीय सेवाएं प्रदान करने और इसे सभी के लिए सुरक्षित, गर्म और आरामदायक घर बनाने के लिए अपना सर्वश्रेष्ठ प्रयास करेंगे। शिन्हुआ की रिपोर्ट के अनुसार, यह गांव, जिसमें एथलीटों का गांव, तकनीकी अधिकारियों का गांव और मीडिया गांव शामिल है, हांगझाऊ एशियाई खेलों का सबसे बड़ा गैर-प्रतियोगिता स्थल है। हांगझाऊ में 19वें एशियाई खेलों के दौरान, गांव 20,000 से अधिक एथलीटों, टीम अधिकारियों, तकनीकी अधिकारियों और पत्रकारों के लिए आवास, खानपान, परिवहन, चिकित्सा सेवाएं आदि प्रदान करेगा। निंगबो, वेनझोउ, जिंहुआ, टोंग्लू और चुनान में पांच उप-गांव, साथ ही शाओजिंग, लिनन और ज़ियाओशान में तीन एथलीट रिसेप्शन होटल भी उसी दिन खुले।

साहित्य

■ धर्मवीर भारती

हिन्दू या मुसलमान

कहानी

सरकारी अस्पताल के बरामदे में 30 लाशें एक कतार में रक्खी हुई थीं। लाशें, नहीं उन्हें लाशें कहना गलत होगा, मगर उन्हें जिन्दा भी नहीं कहा जा सकता था। वे सूखी हड्डियों के मुरदार ढाँचे जिन पर जर्द, झुर्रीदार चमड़ा मढ़ा हुआ था । कलकत्ते की विभिन्न सड़कों से मुरदे उठाकर लाये गये थे इलाज के लिये । उन्हें भूख की बीमारी हो गयी थी और इसीलिये वे चलते-चलते सड़क पर गिर पड़ते थे और धीरे-धीरे दम तोड़ देते थे । हिन्दोस्तान जैसे खराब आबोहवा के देश में जहाँ आये दिन एक बीमारी चल पड़ती है, यह भी एक नयी बीमारी चल निकली थी। झुण्ड के झुण्ड लोग गाँवों से चल पड़ते और चलते-चलते बिना दायीं और बायीं पटरी का ख्याल किये गिर पड़ते और फिर उठने का नाम न लेते। शासकों ने समझा यह सत्याग्रह का कोई नया तरीका है मरने दो; मेडिकल विभाग ने समझा यह मलेरिया की कोई नयी किस्म है जो बंगाल के लिए साधारण बात है। लेकिन बीमारी बढ़ती गयी। जब सड़कों पर पड़ी हुई लाशों की वजह से, मारवाड़ियों की मोटरें, दफ्तर की बसें और फौज की लारियों के आने-जाने में रुकावट होने लगी तो हमारी मेहरबान सरकार को फिक्र हुई, और इसीलिए वे 30 भुखमरे, सरकारी अस्पताल में जाँच के लिए लाये गये और सावधानी से बरामदों में नरम और सीले हुए पक्के फर्शों पर लिटा दिये गये ।

डाक्टर परेशान थे, नर्सों परेशान थीं। यह भी क्या बीमारी है ? और एकदम से तीस नये मरीज ।

बरामदे में शान्ति थी । एक सुनसान कब्रगाह की तरह डरावनी खामोशी । मुरदे खामोश थे। एकाएक खटखट की आवाज हुई और एक नर्स बरामदे की सीढ़ियों पर चढ़ती हुई दीख पड़ी। चढ़ने में उसका मोजा नीचे खिसक गया और वह रुक कर उसे ठीक करने लगी। उसके जूतों की खटखट शायद किसी भुखमरे के बेहया दिल से जा टकराई। उसने करवट बदली। नर्स आगे बढ़ी और जब उसके पास से गुजरने लगी तो उसने बेबस निगाहें उठाकर नर्स की ओर देखा और बहुत प्रयत्न कर बोला- 'पानी।'

नर्स पल भर को ठिठकी ।

'उहँ, कहाँ तक कोई काम करे सुबह से पोशाक भी तो नहीं सम्हाल पायी हूँ।' वह आगे बढ़ गयी ।

मरीज की प्यासी पसलियों से फिर दर्दनाक कराह उठी- 'पानी ।'

'मरने दो !' नर्स ने कहा। और बगल के कमरे में एक शीशे के सामने खड़े होकर गले में बँधे रूमाल की गाँठ खोलने लगी ।

'पानी ', घुटती हुई आवाज़ बोली। वह अभागा मरीज भी अपनी जिन्दगी और मौत की गाँठ खोलने में व्यस्त था ।

नर्स परेशान थी । गाँठ खुल ही नहीं रही थी। वह आदमी चुप हो गया। नर्स ने अपनी पोशाक ठीक की और चली गयी।

मरीज की कराह बन्द न हुई । बगल की लाश में कुछ हरकत हुई और कम्बल उठाकर एक बुढ़िया ने सर बाहर निकाला। उसके बाद वह उठी और कंकालों की तरह लड़खड़ाते हुए एक टीन के डब्बे में पानी लायी और मरीज के मुँह से लगा दिया। पहला घूँट गले से उतरा मगर दूसरा घूँट हिचकी के कारण नीचे गिर गया। बुढ़िया ने क्षण भर मायूसी से मरीज की ओर देखा और उसके बाद चुपचाप कम्बल के नीचे लुढ़क गयी ।

इतने में नर्स डाक्टर को साथ लेकर लौटी और प्यासे मरीज की ओर इशारा किया। डाक्टर ने स्टेथेस्कोप लगाकर देखा। उस कम्बख्त की प्यास हमेशा के लिए बुझ गयी थी । डाक्टर ने स्टेथेस्कोप हटाया और अजीब आवाज में कहा - 'खतम।'...

फिर जेब से नोटबुक निकाली। घड़ी देखकर टाइम दर्ज किया और नर्स से पूछा - 'यह भुखमरा कहाँ से लाया गया था।'

'सप्लाई आफिस के सामने से ! नर्स ने जवाब दिया।

'हिन्दू था, या मुसलमान ।'

'मालूम नहीं।'

'मालूम नहीं ? अच्छा इसके बगलवाले मरीज से पूछो ?'

नर्स ने बगल वाले मरीज को उठाया। वह नहीं उठा।

डाक्टर ने जूते से कम्बल उलट दिया और डाँटकर कहा- 'उठो ?'

बुढ़िया काँपकर उठ बैठी ।

'यह आदमी कौन था ?' डाक्टर ने पूछा ।

बरामदे में शान्ति थी । एक सुनसान कब्रगाह की तरह डरावनी खामोशी । मुरदे खामोश थे। एकाएक खटखट की आवाज हुई और एक नर्स बरामदे की सीढ़ियों पर चढ़ती हुई दीख पड़ी। चढ़ने में उसका मोजा नीचे खिसक गया और वह रुक कर उसे ठीक करने लगी। उसके जूतों की खटखट शायद किसी भुखमरे के बेहया दिल से जा टकराई।

'हुजूर यह आदमी भूखा था ।'

'भूखा था ? यह कौन पूछता है-ठीक से जवाब दो।' डाक्टर ने डाँटा ।

'देखो ! यह सरकारी काम है ! नर्स ने आहिस्ते से समझाया- 'सरकार यह नहीं पूछती कि यह आदमी भूखा था या प्यासा । सरकार यह पूछती है कि यह आदमी हिन्दू था या मुसलमान ? बोलो अस्पताल के रजिस्टर में दर्ज करना है।'

'मालूम नहीं हुजूर !' बुढ़िया बोली ।

'उहँ जाने दो। अच्छा उधर वाले मरीज से पूछो ?'

उधर वाला मरीज बोला ही नहीं। नर्स ने डाँटकर पूछा तब भी उसने जवाब नहीं दिया, क्योंकि वह मर चुका था और मुरदों को मजहब की पहचान नहीं होती क्योंकि वे ईश्वर के समीप पहुँच जाते हैं।

डाक्टर एक और नया मुरदा देखकर चिन्तित हुआ। उसने स्टेथेस्कोप लेकर जाँच करनी शुरू की। लगभग इक्कीस भुखमरे मर चुके थे ।

डाक्टर ने अपने सहकारी को बुलाया और कहा ङ्क 'देखो इन बचे हुए भुखमरों को एक-एक तेज इंजेक्शन देकर निकाल दो। वरना ये भी मर जायँगे ।'

'यदि यहाँ नहीं तो बाहर मर जायँगे ! सहकारी ने उत्तर दिया। 'बाहर मरने की परवाह नहीं । यहाँ मरेंगे तो सरकार की बदनामी होगी। और देखो - अखबार को रिपोर्ट दो कि कुल 7 की मौत हुई। बाकी यहाँ लाने के पहले ही मर चुके थे। समझे।' और थोड़ी देर बाद बाकी भुखमरे निकाल दिये गये ।

बुढ़िया बेहद कमजोर थी। वह पाँच कदम चली और बैठ गयी। पेट में जब भूख आँतों को मरोड़ने लगी तब वह फिर उठी और किसी तरह घसीटती हुई आगे बढ़ी।

बगल में एक साबुन की कम्पनी थी जिसके दरवाजे पर एक मोटा दरबान बैठा था । बुढ़िया उसके सामने गयी और हाथ फैला दिये। लेकिन कुछ बोल न पायी। गले में आत्मसम्मान आकर रुँध गया। दरबान ने देखा और एक क्रूर हँसी हँसकर बोला- 'चल ! चल ! आगे बढ़, अगर तू जवान होती तो इज्जत बेचने पर शायद 8-10 पैसे मिल भी जाते- अब किस बिरते पर भीख माँगने आयी है। ड्ड चल हट ?'

बुढ़िया की झुर्रीदार पलकों में दो बेहया आँसू झलक गये ।

वह चलने को मुड़ी कि दरबान बोला- 'तुझे खैरात चाहिए । यहाँ खैरात की कमी नहीं। हिन्दुस्तानी तो अपने बाप के मरने पर खैरात करते हैं, फिर जिन्दा लाशों के लिए क्यों न खैरात करेंगे। उधर जा, वहाँ सेठों ने ढाबा खोल रक्खा है।'

बुढ़िया उधर की ओर चली। भोजनालय के द्वार पर बेहद भीड़ थी । हड्डियों के अनगिनत कंकाल प्रेतों की भाँति सूखे हाथ फैलाकर बैठे थे। उबले हुए ज्वार की महक हवा में फैल रही थी। बुढ़िया ने एक गहरी साँस ली जैसे साँसों के सहारे पेट भरने की कोशिश कर रही हो ।

कार्यकर्ताओं ने जुआर की खिचड़ी से भरी हुई एक देग लाकर सामने रक्खी और करछुल से निकालकर जुआर बाँटने लगे। एक हंगामा-सा मच गया। बुढ़िया उठी और कुत्ते को भगाकर देग खिसकाने का व्यर्थ प्रयास करने लगी ।

इतने में एक कार्यकर्त्ता चीखा- 'देखो ! देखो उसने देग छू ली।' 'देग छू ली ! हिन्दू है या मुसलमान ?'

'मुसलमान मालूम होती है।'

'निकाल दो कमबख्त को ?'

बुढ़िया लाञ्छना से पीड़ित होकर उठ गयी। उसका कसूर क्या था ?

वह उठी और सर झुकाकर चल दी।

सामने ही एक दूसरा ढाबा था। उसकी हिम्मत न हुई वहाँ जाने की, लेकिन उस पर चाँद-तारे का एक हरा झण्डा लगा हुआ था । उसको कुछ सान्त्वना हुई और वह वहाँ चली गयी। सामने एक वालन्टियर था । उसने रोका - 'यहाँ सिर्फ मुसलमानों को खाना मिलता है ।

'मैं भी मुस्लिम हूँ' बुढ़िया ने जवाब दिया । 'सामने के ढाबे से खाकर आयी है, काफिर है; साफ काफिर, शक्ल से नहीं देखते।' दूसरा वालन्टियर बोला-

'भाग ! भाग ! यहाँ काफिरों की गुजर नहीं चल हट ?'

बुढ़िया का चेहरा तमतमा गया और चीखकर बोली-

'खुदा के बन्दो ! अल्लाह ने अनाज के दानों पर मजहब की छाप लगाकर नहीं भेजा है। तुम्हारी ओछी बात सुनकर मुझे अपने मुसलमान होने में शरम आती है । '

'पागल है ?' एक बोला-

'भूख से दिमाग खराब हो गया है।'

'अल्लाह काफिरों को ऐसी ही सजा देता है।'

बुढ़िया कहती ही गयी - 'तुम काफिरों को खाना नहीं देते, मत दो। मत दो कमबख्तो ! वह धरती अभी कहीं नहीं गयी जिसने हम सब को बिना मजहब के ख्याल के पैदा किया है। तुम्हारा अनाज लेने के बजाय उसी धरती पर मर जाना मैं ज्यादा पसन्द करूँगी। खुदा तुम्हारा भला करे ।'

और वह हाँफती हुई एक ओर चली गयी।

दूसरे दिन कलकत्ते के एक प्रमुख दैनिक में छपा था-

'बंगाल के इस अकाल में समस्त भारत, प्रान्त और धर्म का भेद-भाव भुलाकर सहायता कर रहा है। मारवाड़ियों और इस्फहानियों, दोनों ने सार्वजनिक भोजनालय खोले हैं। इस सम्बन्ध में हम सरकारी अस्पतालों की मूल्यवान सहायता भी नहीं भुला सकते। हम इन सबके हृदय से कृतज्ञ हैं।'

इसके नीचे एक छोटी-सी नगण्य और महत्त्वहीन खबर छपी थी ।

'यद्यपि सरकारी अस्पतालों के कार्य से भुखमरों की संख्या में भारी कमी है, फिर भी अभी मौतें बराबर हो रही हैं। मुस्लिम ढाबे के नजदीक एक बुढ़िया की लाश पायी गयी है जो ठीक वक्त से अस्पताल न पहुँच पाने के कारण मर गयी।

यह नहीं समझ में आता कि लाश जलायी जाय या दफनाई जाय, क्योंकि यह पहचान नहीं पायी है कि बुढ़िया हिन्दू थी या मुसलमान... ।'

कविता

■ सौरभ सेन राही

ये सब जो चल रहा है
सदियों से चल रहा है,
चूंकि चलते रहना
जीवित
होने का भ्रम है
इसलिए यह क्रम है,
बिना किसी सार्थकता के
कुछ भी बोलना,
कुछ भी सुनना,
कुछ भी देखना
कुछ भी करना,
वृथा जीना वृथा मरना,
सैकड़ों कहानियों की
अनगिन कल्पनाओं की
बहुरंगी कतरनें अपनी
जीवेषणा के खोल में
भरे हुए जीते रहना
और हलाहल पीते रहना
फिर एक दिन आयेगा
सबका गला रूंध जायेगा
सब देखेंगे अपनी नंगी
आंखों से शमशान मे
बदलते इस उपवन की
त्रासदी
और हम कुछ न बोल
पायेंगे
केवल निकलेगी कंठ
से लहू की धार
हांफते चिल्लाते सब
सुनेंगे हाहाकार
कामनाओं का इच्छित
अधिभार
तमस मे डूबते प्राणों का
चीत्कार
संभवत: कोई सुन पाये
मुक्तिपथ भी चुन पाये
फिर भी यह निश्चित है
अस्तित्व की करुण
पुकार
हमे बुलाती रहेगी
अंतरशून्य को जगाती
रहेगी
मेरे मित्र तुम सुन लेना
मुक्ति का पथ तुम चुन
लेना।

छत्तीसगढ़

ग़ज़ल

■ असरार-उल-हक़ मजाज़

हुस्न को बे-हिजाब होना था
शौक़ को कामयाब होना था

हिज्र में कैफ़-ए-इज़्तिराब न पूछ
ख़ून-ए-दिल भी शराब होना था

तेरे जल्वों में घिर गया आख़िर
ज़र्रे को आफ़्ताब होना था

कुछ तुम्हारी निगाह काफ़िर थी
कुछ मुझे भी ख़राब होना था

रात तारों का टूटना भी %मजाज़%
बाइस-ए-इज़्तिराब होना था

व्यंग्य

■ मुकेश राठौर

हिंदी के घर हिंदी दिवस

%हिंदी दिवस% के अवसर पर शहर के प्रतिष्ठित इंग्लिश मीडियम स्कूल के कुछ सोशल मीडिया कवि टाइप हिंदी प्रेमी शिक्षक, हिंदी के घर पहुंचे 7जैसे %वृद्ध दिवस% पर बेटे-बहू और %शिक्षक दिवस% पर भूतपूर्व छात्र क्रमश: वृद्धाश्रम और विद्यालय पहुंचते हैं7 पहुंचाना भी चाहिए क्योंकि जो दिवस जिसके लिए आरक्षित है,कम से कम उस दिन तो उसे याद करना बनता ही है7 वरना दिवस बनाने और मानने का औचित्य ही क्या रह जायेगा ! मालूम हो कि हिंदी कभी इस स्कूल की प्रधान हुआ करती थी लेकिन जब से विद्यालय स्कूल बना और अंग्रेजी प्रिंसिपल हुई हिंदी %अवशेषी अंग % बनकर रह गई और फिर शनै-शनै अनियमित होते-होते एक दिन शाला त्यागी हो गई7 जैसे घरों में डेढ़ सयानी बहूओं के आने के बाद सासों के साथ होता है7

सुना हैं कि अंग्रेजी पढ़ने-पढ़ाने वाले लोग सभ्य होते हैं, अंग्रेजी ओढ़ते हैं, अंग्रेजी बिछाते हैं, अंग्रेजी खाते हैं, अंग्रेजी पीते हैं, सभ्यता तो वैसे ही आ जाती है, कदाचित इसीलिए यहां के कुछ सुधि शिक्षक हर साल अपने स्कूल की संस्थापक भाषा हिंदी को याद कर लिया करते हैं. जैसे पार्टियों में मार्गदर्शक बनकर बैठे वरिष्ठ नेताओं को गाहे-बगाहे याद कर लिया जाता है. बहरहाल %हिंदी डे% मनाने हेतु वे शॉल,श्रीफल,फूलमाला और प्रशस्ति पत्र लेकर पहुंचे। अपनी मातृभाषा के लिए इतना वार्षिक खर्चा तो बनता है. आजकल सम्मान पर होने वाले खर्च राशि,देने वाले हाथ और स्थान से सम्मान का वज़न तौला जाता है.

हिंदी प्रेमियों ने देखा एक पुराने से कमरे में घर की दादी माँ %संस्कृत% खाट पर पड़े कराह रही है. दूसरे कमरे में मां %हिंदी% उदास लेटी है, अपनों की उपेक्षा से संस्कृत की सांस रुद्ध हो रही थी तो हिंदी की हालत हिंग्लिश हो गई थी. सिरहाने और पैताने बोलियां खड़ी हैं. इस चिंता में कि किसी दिन दादी और मां को कुछ हो गया तो हमें घर में कौन पूछेगा ! 卐मां तब तक मायका卐 अब जबकि हिंदी की ही एक बेटी %निमाड़ी% का उन्नीस सितंबर को जन्मदिन आने वाला है ,लेकिन...! 卐 मां खुश नहीं तो कुछ नहीं卐 ओ मां, ओ मां...के बाद भी हिंदी द्वारा %हुंकारा% तक न दिए जाने से इन हिंदी प्रेमियों को 卐आवत ही हरषै नहीं,नैनन नहीं सनेह卐 वाली फीलिंग हुई, कुछ और बोलते इससे पहले ही एक बोली बतियाने लगी कि मां को साल भर बोलने के बदले एक दिन उन पर बोल कर सब पानी बोल डाल जाते हैं, मां जब विद्यालय जाती थी बहुत खुश थी, कहती अंग्रेजों के जमाने में बहुत दुख झेले। मैं ही नहीं मेरी बेटियां भी दुनिया पर राज करेगी।अफ़सोस अंग्रेज चले गए मगर अंग्रेजी छोड़ गए. जैसे-जैसे विद्यालय छूटा ,उम्मीद की डोर छूटती गई। वह आप से बात नहीं करना चाहती।

हिंदी के सम्मान की प्रतीक्षा में खड़े हिंदी प्रेमियों ने कहा कि हम हिंदी का दुख समझते हैं,हमें पता है कि वे स्वाभिमानी है। वे नहीं आएंगी तभी तो हम खुद चलकर आ गए। प्लीज उन्हें समझाइये। कुछ देर की तो बात है. यकीन मानिए सालभर डिस्टर्ब नहीं करेंगे। इस बीच हिंदी खुद आ गई। बोली मैं सम्मान के लिए तैयार हूं लेकिन घर बैठे नहीं !मुझे विद्यालय में सम्मानित कीजिये। मुझे मेरे पद पर प्रतिष्ठित कीजिये। हिंग्लिश बन चुकी हिंदी के फिर से स्कूल लौटने की बात पर हिंदी प्रेमियों के होश उड़ गए, कहां तो वे फॉरमैलिटी निभाने आये। थे और कहां हिंदी फिर फॉर्म में लौट आई. उन्हें अपने बच्चों और पेरेंट्स के हिंदी-हिंदी हो जाने का भय सताने लगा, वे सम्मान सामग्री वहीं छोड़ उल्टे पांव लौट गए. 7

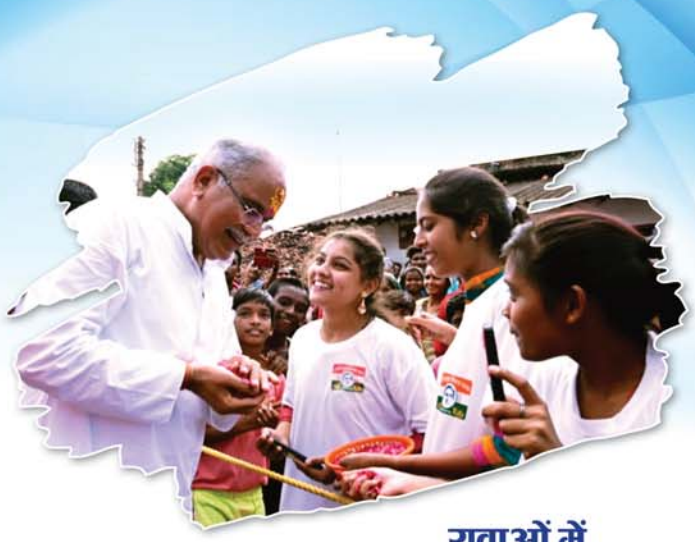

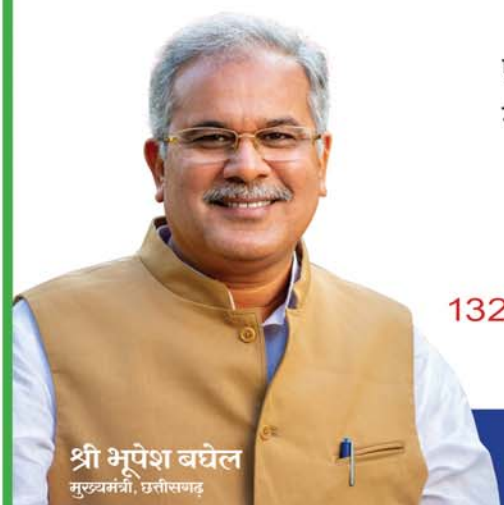

प्रकाशक मुद्रक एवं सम्पादक- राजीव रंजन श्रीवास्तव द्वारा पत्रकार प्रकाशन, प्रा.लि. के लिए पत्रकार प्रकाशन प्रा.लि. प्रेस में मुद्रित एवं गर्ल्स कॉलेज के पास, जरहाभाटा, बिलासपुर से प्रकाशित। प्रेस पंजीयन- 52158/91 डाक पंजीयन 112-002/2002 सी जी फोन- 07752 422771, 428159 फैक्स नं. 415188